राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 मरियम नवाज ने प्रदूषण और धुंध की समस्या से निपटने के लिए.....

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मार्च, 2026 तक नसलवाद..... 12

वर्ष : 15 | अंक : 179 | नई दिल्ली, शुक्रवार, 11 अक्टूबर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मुर्मु, मोदी, राजनाथ, शाह और बिरला सहित विभिन्न नेताओं ने रतन टाटा के निधन पर जताया शोक

नई दिल्ली, एजेंसी

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृहमंत्री अमित शाह और लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला सहित विभिन्न नेताओं ने प्रसिद्ध उद्योगपति रतन एन टाटा के निधन पर शोक जताया है।श्रीमती मुर्मु ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर अपने शोक संदेश में बुधवार को लिखा, ₹श्री रतन टाटा के दुखद निधन से भारत ने एक ऐसे महान व्यक्तित्व को खो दिया है, जिन्होंने कॉर्पोरेट विकास को राष्ट्र निर्माण और उत्कृष्टता को नैतिकता के साथ जोड़ा। पद्म विभूषण और पद्म भूषण से सम्मानित श्री रतन टाटा ने टाटा की महान विरासत को आगे बढ़ाया तथा वैश्विक स्तर पर इसे और अधिक प्रभावशाली वैश्विक उपस्थिति दी। उन्होंने अनुभवी पेशेवरों और युवा छात्रों को समान रूप से प्रेरित किया। परोपकार और दान के लिए उनका योगदान अमूल्य है। मैं उनके परिवार, टाटा समूह की पूरी टीम और दुनिया भर में उनके प्रशंसकों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करती हूं। श्री मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक पर लिखा, ₹श्री रतन टाटा जी एक दूरदर्शी बिजनेस लीडर, एक दयालु आत्मा और एक असाधारण इंसान थे। उन्होंने भारत के सबसे पुराने और सबसे प्रतिष्ठित व्यापारिक घरानों में से एक को स्थिर नेतृत्व प्रदान किया। साथ ही, उनका योगदान बोर्डरूम से कहीं आगे तक गया। उन्होंने अपनी विनम्रता, दयालुता और हमारे समाज को बेहतर बनाने के लिए एक अटूट प्रतिबद्धता

के कारण कई लोगों के बीच अपनी जगह बनाई। उन्होंने कहा, ₹श्री रतन टाटा जी का सबसे अनोखा पहलू था बड़े सपने देखने और दूसरों को कुछ देने का उनका जुनून। वे शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, स्वच्छता, पशु कल्याण जैसे मुद्दों को आगे बढ़ाने में सबसे आगे थे। श्री रतन टाटा जी के साथ मेरी अनगिनत मुलाकातें मुझे याद हैं। जब मैं गुजरात का मुख्यमंत्री था, तब मैं उनसे अक्सर मिलता था। हम विभिन्न मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान करते थे। मुझे उनके विचार बहुत उपयोगी लगते थे। दिल्ली आने पर भी ये मुलाकातें जारी रहीं। उनके निधन से मुझे बहुत कष्ट पहुंचा है। इस दुख की घड़ी में मेरी संवेदनाएं उनके परिवार, मित्रों और प्रशंसकों के साथ हैं। ओम शांति। प्रधानमंत्री ने एक्स पर श्री रतन टाटा के साथ अपनी एक फोटो भी शेयर की है, जिसमें दोनों दो कुर्सी पर साथ-साथ बैठे हैं और प्रसन्न मुद्रा में एक दूसरे को देख रहे हैं। श्री सिंह सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर शोक संदेश में कहा,₹श्री रतन टाटा के निधन से मुझे दुःख पहुंचा है। वह भारतीय उद्योग जगत के महान नायक थे, जिन्हें हमारी अर्थव्यवस्था, व्यापार और उद्योग में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए जाना जाता है। उनके परिवार, दोस्तों और प्रशंसकों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं। उसकी आत्मा को शांति मिलें। श्री शाह ने एक्स पर अपने शोक संदेश में कहा, ₹महान उद्योगपति और सच्चे राष्ट्रवादी श्री रतन टाटा जी के निधन से बहुत दुखी हूं। उन्होंने निस्वार्थ भाव से अपना जीवन हमारे राष्ट्र के विकास के लिए समर्पित कर दिया। जब भी मैं उनसे मिला भारत और उसके लोगों की बेहतरी के लिए उनके उत्साह और प्रतिबद्धता ने मुझे चकित कर दिया। हमारे देश और उसके लोगों के कल्याण के लिए उनकी प्रतिबद्धता ने लाखों सपनों को जन्म दिया। समय रतन टाटा जी को उनके प्यारे देश से दूर नहीं कर सकता। वह हमारे दिलों में ज़िंदा रहेंगे। टाटा समूह और उनके अनगिनत प्रशंसकों के प्रति मेरी संवेदनाएँ। ओम शांति शांति शांति! श्री बिरला ने यहां जारी शोक संदेश में कहा, ₹भारत ने आज एक ऐसे महान उद्योगपति और समाजसेवी को खो दिया, जिन्होंने न केवल भारतीय उद्योग जगत को नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया, बल्कि अपनी निःस्वार्थ सेवा और उदारता से समाज के हर वर्ग को प्रेरित किया। उन्होंने उद्योगपति रतन टाटा की सादगी का स्मरण करते हुए उनकी आत्मा की शांति की कामना की और कहा, श्री रतन टाटा जी की सादगी, दूरदर्शिता और सेवा भावना युगों-युगों तक प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

संक्षिप्त खबरें

नेकां विधायक दल के नेता चुने गये उमर, होंगे जम्मू-कश्मीर के अगले मुख्यमंत्री

श्रीनगर। नेशनल कॉन्फ्रेंस (नेकां) के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला को गुरुवार को सर्वसम्मति से विधायक दल का नेता चुना गया, जो जम्मू-कश्मीर में एक दशक में पहली निर्वाचित सरकार के गठन की दिशा में बड़ा कदम है। नेकां के नव-निर्वाचित विधायकों ने श्रीनगर में एक बैठक में भाग लिया, जिसके दौरान श्री अब्दुल्ला के विधायक दल के नेता के रूप में चुनाव को मंजूरी दी गयी। नेकां उपाध्यक्ष ने बैठक के बाद संवाददाताओं से कहा, ह्लमुझे अपना नेता चुनने के लिए मैं पार्टी विधायकों का आभारी हूं। हमें चार निर्दलीय विधायकों का भी समर्थन मिला है और हम सरकार बनाने का दावा पेश करने के लिए अपने गठबंधन सहयोगी कांग्रेस से पत्र का इंतजार कर रहे हैं।ह्व श्री अब्दुल्ला ने कहा कि कांग्रेस से पत्र मिलने के बाद वह सरकार गठन की तारीख तय करने के लिए उपराज्यपाल मनोज सिन्हा से मुलाकात करेंगे। विधायक दल की बैठक के बाद पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं विधायक अली मोहम्मद सागर ने घोषणा की कि श्री अब्दुल्ला को विधायक दल का नेता चुन लिया गया है। उन्होंने कहा, ह्लउमर को सर्वसम्मति से विधायक दल का नेता चुना गया है। जल्द ही सरकार की बागडोर संभालने के लिए उमर अब्दुल्ला के अलावा कोई नहीं है और वही अगले मुख्यमंत्री होंगे।ह्व नेकां ने हाल ही में हुए चुनाव में 90 सदस्यीय विधानसभा में 42 सीटें हासिल कीं। इंडिया समूह के पास 49 सीटें हैं।

दिल्ली कैबिनेट का बड़ा फैसला- दिल्ली में विधायक फण्ड 10 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 15 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष किया

दिल्ली में विधायकों को प्रतिवर्ष विधायक फण्ड में 15 करोड़ रुपये मिलेंगे, बाकी राज्यों से कई गुना ज्यादा है : आतिशी

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली कैबिनेट ने गुरुवार की एक बड़ा फैसला लेते हुए दिल्ली में विधायक फण्ड को प्रतिवर्ष 10 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 15 करोड़ रुपये करने का फैसला लिया है। इस विषय में प्रेस-कॉन्फ्रेंस के जरिये साझा करते हुए मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा कि, अब दिल्ली में विधायकों को प्रतिवर्ष विधायक फण्ड में 15 करोड़ रुपये मिलेंगे। उन्होंने कहा कि, ये देश बाकी राज्यों से कई गुना ज्यादा है। सीएम आतिशी ने कहा कि, पिछले 10 साल से दिल्ली सरकार ने अरविंद केजरीवाल जी के मार्गदर्शन में दिल्ली वालों की बेहतरी के लिए काम किया और ये आगे भी जारी रहेगा। सीएम आतिशी ने साझा करते हुए कहा कि, आज दिल्ली सरकार के कैबिनेट की महत्वपूर्ण बैठक में विधायक फण्ड से जुड़ा हुआ बहुत बड़ा फैसला लिया गया। विधायक फंड लोकतंत्र में बेहद महत्वपूर्ण होता है, जिसके द्वारा से जनता अपने क्षेत्र में छोटे-बड़े विकास कार्य अपने विधायक के माध्यम से करवा सकते है। अपना

● विधायक फण्ड में बढ़ौतरी से सभी विधानसभाओं में सीवर-सड़कों संबंधित छोटी समस्याओं का तुरंत समाधान होगा-शहरी विकास मंत्री, सौरभ भारद्वाज

काम करवाने के लिए विधायक फण्ड जनता की आवाज है। उन्होंने कहा कि, आज दिल्ली सरकार की कैबिनेट ने बहुत बड़ा फैसला लिया है और दिल्ली में विधायक फण्ड को सालाना 10 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 15 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष कर दिया है। सीएम आतिशी ने कहा कि, पूरे देश में किसी भी राज्य में इतना विधायक फण्ड किसी भी सरकार ने नहीं दिया है। आंकड़े देखे तो गुजरात में प्रति विधानसभा विधायकों को सालाना 1.5 करोड़ रुपये विधायक फण्ड मिलता है। आंध्र प्रदेश-कर्नाटक में सालाना 2 करोड़ रुपये। ओड़िशा, तमिलनाडु और मध्य-प्रदेश में 3 करोड़ रुपये सालाना और महाराष्ट्र, केरल, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान, तेलंगाना में प्रति विधानसभा विधायकों को सालाना 5 करोड़ रुपये विधायक फण्ड के रूप में मिलते है। उन्होंने कहा कि, अब दिल्ली में प्रतिवर्ष विधायकों को 15 करोड़ रुपये विधायक फण्ड के रूप में मिलेंगे। ये न सिर्फ.देश में सबसे ज्यादा है बल्कि अन्य राज्यों से कई गुना ज्यादा है। सीएम आतिशी ने कहा कि, पिछले 10 साल से दिल्ली सरकार अरविंद केजरीवाल जी के मार्गदर्शन में दिल्ली के लोगों के लिए काम करती आई है। चाहे वो झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले लोग हो, अनाधिकृत कॉलोनियों में रहने वाले लोग हो या फिर बड़ी-बड़ी कोठियों में रहने वाले हो दिल्ली सरकार ने सभी के लिए काम किया है और आगे भी इनकी बेहतरी के लिए काम करती रहेगी। सीएम आतिशी ने एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि, ₹दिल्ली कैबिनेट ने आज दिल्ली में विधायक फंड को 10 करोड़ से बढ़ाकर 15 करोड़ करने का निर्णय लिया है। ये देशभर के बाकी राज्यों से कई गुणा ज्यादा है। इस निर्णय के बाद अब अरविंद केजरीवाल जी के मार्गदर्शन में दिल्लीवालों के काम दोगुनी रफ्तार से होंगे। शहरी विकास मंत्री श्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि, इस साल दिल्ली में बहुत बारिश हुई। बारिश के कारण सड़कों में टूट-फूट देखने को मिली, पार्कों की दीवारों में, वॉक-वे में भी टूट-फूट देखने को मिला है। ज्यादा बारिश के कारण बहुत सी जगहों पर सीवर संबंधित समस्याएं भी देखने को मिली है। उन्होंने कहा कि, इन समस्याओं को लेकर सभी विधायक चाहे वो आम आदमी पार्टी से हो या फिर भाजपा से हो मुजसे मिल रहे थे कि यदि विधायक निधि की बढ़ा दिया जाए तो इन समस्याओं पर फौरी राहत मिल सकती है। शहरी विकास मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि, ₹विधायक फण्ड को इसलिए ही बनाया गया था कि, यदि विधायक अपने क्षेत्र में जाए और उन्हें कोई समस्या देखने को मिले जिसे वो तुरंत हल कर सके। दिल्ली में भी वर्तमान में इस फण्ड को बढ़ाने का उद्देश्य यही है कि, विभागों से मिलने वाले सैंक्शन में किसी कारणवश देरी होने से काम लेट न हो और विधायक अपने फंड से समस्या को दूर कर सके ताकि लोगों को फौरी राहत मिले।

रतन टाटा ने सभी नियमों का पालन करते हुए टाटा समूह की कार्यशैली में सुधार किया : शाह

नई दिल्ली, एजेंसी

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने उद्योगपति रतन टाटा को बृहस्पतिवार को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उन्होंने सभी नियमों और विनियमों का पालन करते हुए टाटा समूह की कार्यशैली में सुधार किया। अमित शाह ने दिल्ली स्थित ह्यपीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के वार्षिक सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि रतन टाटा के नेतृत्व में टाटा ट्रस्ट ने शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक कल्याण और कैंसर देखभाल जैसे विविध क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने कहा, टाटा की विरासत आने वाले वर्षों में सभी व्यापारियों लिए प्रेरणा बनी रहेगी। वह सभी व्यवसायियों के लिए एक आदर्श बने रहेंगे। गृह मंत्री अमित शाह बृहस्पतिवार को मुंबई में उद्योगपति रतन टाटा के अंतिम संस्कार में शामिल होंगे। वह भारत सरकार की ओर से टाटा को श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। उन्होंने कहा कि प्रतिष्ठित उद्योगपति ने प्रमुख भारतीय व्यापार समूह के प्रमुख का पद उस समय संभाला, जब टाटा कंपनियों को बदलाव की आवश्यकता थी। शाह ने कहा कि बहुत अध्ययन करने के बाद और काफी धैर्य रखने के बाद रतन टाटा ने सभी टाटा कंपनियों में बदलाव किया। उन्होंने कहा, टाटा समूह के अध्यक्ष के तौर पर रतन टाटा इसकी कार्यप्रणाली में सुधार लाए और सभी नियमों एवं विनियमों का पालन करते हुए इसे एक मजबूत औद्योगिक समूह के रूप में विकसित होने में मदद की। गृह मंत्री उद्योगपति के अंतिम संस्कार के लिए मुंबई जा रहे हैं क्योंकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आसियान-भारत और पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में शामिल होने के लिए लाओस में हैं। शाह ने पहले एक संदेश में कहा कि वह महान उद्योगपति और सच्चे राष्ट्रवादी रतन टाटा के निधन की खबर सुनकर बहुत दुखी हैं। उन्होंने कहा कि रतन टाटा ने निस्वार्थ भाव से अपना जीवन राष्ट्र के विकास के लिए समर्पित कर दिया। अमित शाह ने कहा, जब भी मैं उनसे मिलता था तो भारत और यहां के लोगों की बेहतरी के लिए उनके उत्साह और प्रतिबद्धता ने हमेशा मुझे हैरान किया। गृह मंत्री ने कहा कि देश और नागरिकों के कल्याण के प्रति रतन टाटा की प्रतिबद्धता के कारण लाखों सपने साकार हुए। उन्होंने कहा, काल रतन टाटा जी को उनके प्रिय देश से दूर नहीं कर सकता। वह हमारे दिलों में हमेशा जीवित रहेंगे। मेरी संवेदनाएं टाटा समूह और उनके अनगिनत प्रशंसकों के साथ हैं। ओम शांति। टाटा का बुधवार को मुंबई के एक अस्पताल में 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया था। मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) ने बताया कि महाराष्ट्र सरकार ने उद्योगपति रतन टाटा को श्रद्धांजलि देने के लिए बृहस्पतिवार को राज्य में एक दिवसीय शोक की घोषणा की है। टाटा का पार्थिव शरीर बृहस्पतिवार को सुबह 10 बजे से अपराह्न साढ़े तीन बजे तक दक्षिण मुंबई में नरीमन प्वाइंट स्थित राष्ट्रीय प्रदर्शन कला केंद्र (एनसीपीए) में लोगों के अंतिम दर्शन के लिए रखा गया है। उनका अंतिम संस्कार आज दिन में मुंबई के वर्ली इलाके में किया जाएगा।

आतिशी को बंगला आवंटित ही नहीं किया गया था: एलजी ऑफिस

नई दिल्ली, एजेंसी

उपराज्यपाल कार्यालय ने गुरुवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री आवास को सील करने और मुख्यमंत्री आतिशी का सामान बाहर किए जाने पर बयान दिया है। उपराज्यपाल की तरफ से कहा गया है कि आतिशी को आधिकारिक रूप से सरकारी बंगला आवंटित नहीं किया गया था। इसके बावजूद उन्होंने अवैध रूप से सरकारी बंगले में घुसने की कोशिश की थी और जब आप किसी के घर में घुसते हैं, तो स्वाभाविक है कि उस घर का मालिक आपके खिलाफ कार्रवाई करेगा ही। उपराज्यपाल कार्यालय ने अपनी तरफ से जारी बयान में कहा, ह्लमुख्यमंत्री आतिशी ने सरकारी बंगले के लिए अनुरोध किया था, जो विचाराधीन था। अभी तक उन्हें अधिकृत रूप से बंगला आवंटित नहीं किया गया था। इसके बावजूद वे बंगले में दाखिल हुईं, जिसके परिणामस्वरूप लोक निर्माण विभाग ने उनके खिलाफ यह कार्रवाई की है। आम आदमी पार्टी का कहना है कि केंद्र सरकार मुख्यमंत्री का सरकारी बंगला भाजपा नेता को आवंटित करना चाहती है, जबकि नियमों के अनरूप यह बंगला मुख्यमंत्री को आवंटित किया जाता है, लेकिन केंद्र सरकार इन नियमों को ताक पर रखकर अपनी मनमानी कर रही है, जिसे हम किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं। बता दें कि बुधवार दिल्ली विकास प्राधिकरण ने हैंडओवर का हवाला देकर मुख्यमंत्री आतिशी का सरकारी बंगला सील कर दिया था और उनका सामान भी बाहर कर दिया था। जिस पर आम आदमी पार्टी ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद सरकारी बंगला खाली कर चुके हैं। ऐसे में अब यह बंगला नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री आतिशी को आवंटित किया जाना था, लेकिन भाजपा का दावा है कि अभी तक आतिशी को अधिकृत रूप से यह बंगला आवंटित नहीं किया गया है, जिसे लेकर दोनों दलों के बीच सियासी तकरार अपने चरम पर है। भाजपा नेता वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि अरविंद केजरीवाल ने शीशमहल (सरकारी बंगले) में कई तरह के राज दफन करके रखें हैं, जिसे वो दिल्ली की जनता से छुपाकर रखना चाहते हैं। वो नहीं चाहते हैं कि दिल्ली की जनता इन राजों से वाकिफ हो सकें। उधर, मुख्यमंत्री का सरकारी बंगला सील किए जाने पर वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि आम आदमी पार्टी के पाप का घड़ा भर चुका है।

नोएडा प्राधिकरण के खिलाफ किसानों का हल्ला बोल, प्राधिकरण के बाहर तोड़ा पुलिस बैरिकेड

नोएडा, एजेंसी

नोएडा प्राधिकरण के बाहर गुरुवार को किसानों ने प्रदर्शन के दौरान जमकर हंगामा किया। किसान करीब एक बजे बड़ी संख्या में प्राधिकरण के गेट के बाहर पहुंच गए और उन्होंने पुलिस बैरिकेड को तोड़ दिया। दरअसल, प्राधिकरण के गेट के बाहर किसानों को रोकने के लिए पुलिस ने बैरिकेड लगाया था, लेकिन किसानों ने उसे तोड़ दिया और वह नोएडा प्राधिकरण के गेट के बाहर धरने पर बैठ गए। भारतीय किसान यूनियन मंच ने नोएडा प्राधिकरण के अधिसूचित 81 गांवों के किसानों से इस प्रदर्शन के लिए समर्थन मांगा था। भारतीय किसान यूनियन मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुधीर चौहान ने कहा कि नोएडा प्राधिकरण के अधिकारियों ने किसानों का शोषण किया है। नोएडा प्राधिकरण ने भूमि अर्जित करते समय किसानों से किए करार ओर समझौता को पूरा नहीं किया। भाकियू मंच 81 गांवों के सभी किसानों को उनका हक दिलाकर ही रहेगा। किसान अपनी जिन मांगों को लेकर धरना-प्रदर्शन कर रहे हैं, उनमें जिन किसानों को मूल पांच प्रतिशत के प्लॉट नहीं मिले हैं, उन सभी किसानों को पांच प्रतिशत के मूल प्लॉट दिए जाएं। जिन किसानों के न्यायालय से आदेश आ चुके हैं, उन सभी किसानों को अतिरिक्त पांच प्रतिशत के भूखंड या धनराशि दी जाए। सभी किसानों को वर्ष 1997 से 64.7 प्रतिशत मुआवजा और 10 प्रतिशत के विकसित भूखंड दिया जाए, नोएडा के सभी 81 गांव के किसानों की आबादी को 450 मीटर से एक हजार मीटर करते हुए आबादी का संपूर्ण समाधान करें और 1976 से वर्ष 1997 तक के सभी किसानों को कोटा स्कीम के प्लॉट आवंटित करें। इसके साथ ही किसानों की मांग है कि नोएडा प्राधिकरण के गांवों में स्वामित्व योजना लागू की जाए और गांवों में नक्शा नीति समाप्त की जाए, क्योंकि गांव में यह व्यावहारिक नहीं है। किसानों को मिलने वाले मुआवजे की धनराशि में से 10 प्रतिशत धनराशि आबादी भूखंड देने के लिए काट ली गई थी और किसानों को केवल 90 प्रतिशत धनराशि का ही भुगतान किया गया था। अब नोएडा प्राधिकरण के अधिकारी किसानों को 10 प्रतिशत विकसित भूखंड नहीं दे रहे हैं। यह करार नियमावली का उल्लंघन है। इन सभी मांगों को लेकर किसान नोएडा प्राधिकरण के बाहर धरना प्रदर्शन कर रहे हैं और बड़ी संख्या में पुलिस बल मौजूद है।

लाओस में पीएम मोदी का ग्रैंड वेलकम, गायत्री मंत्र और हिंदी में किया गया अभिवादन

नई दिल्ली, एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गुरुवार को 21वें आसियान-भारत और पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए लाओस पहुंचे। जहां राजधानी वियनतियाने पहुंचने पर भारतीयों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। पीएम मोदी का स्वागत करने के लिए वियनतियाने के होटल डबल ट्री में बड़ी संख्या में भारतीय समुदाय के लोग पहले से मौजूद रहे। इस दौरान एक खास नजारा भी देखने को मिला। दरअसल, होटल डबल ट्री में प्रधानमंत्री मोदी का स्वागत करते हुए भारतीयों और लाओस समुदाय के लोगों ने गायत्री मंत्र का पाठ किया। इसका वीडियो भी सामने आया है। वीडियो में देखा जा सकता है कि पीएम मोदी के सामने भारतीय समुदाय के लोग हाथ में तिरंगा लिए हुए गायत्री मंत्र का जाप कर रहे हैं। इस दौरान पीएम मोदी भी उनके सामने हाथ जोड़कर गायत्री मंत्र का जाप करते हैं। पीएम मोदी का यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस वीडियो पर सोशल मीडिया यूजर्स अलग-अलग प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। इसके अलावा एक अन्य वीडियो में लाओस समुदाय के लोगों ने वियनतियाने के होटल डबल ट्री में पीएम मोदी का हिंदी में अभिवादन करते हुए ग्रैंड वेलकम किया। एक अन्य वीडियो में प्रधानमंत्री मोदी के स्वागत में लाओ पीडीआर के लोगों ने बिहू नृत्य भी किया। इसके अलावा पीएम मोदी ने वियनतियाने में लाओस के वरिष्ठ बौद्ध भिक्षुओं द्वारा आयोजित आशीर्वाद समारोह में हिस्सा लिया। पीएम मोदी ने अपनी यात्रा से जुड़ी कई वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर भी शेयर किया है। जिसमें उन्होंने लिखा, ह्ललाओ पीडीआर में स्वागत यादगार था। भारतीय समुदाय स्पष्ट रूप से अपनी जड़ों से बहुत जुड़ा हुआ है। स्थानीय लोगों का हिंदी में बोलना और बिहू नृत्य करना भी बहुत आनंददायक था। इससे पहले पीएम मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, ह्वलाओ पीडीआर पहुंच गया हूं। विभिन्न विश्व नेताओं के साथ विचार-विमर्श की प्रतीक्षा कर रहा हूं। बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी 10 और 11 अक्टूबर को लाओस दौरे पर रहेंगे। पीएम मोदी लाओ पीपुल्स डेमोक्रेटिक रिपब्लिक के प्रधानमंत्री सोनेक्से सिफांडोन के खास न्यौते पर लाओस की दो दिवसीय यात्रा पर पहुंचे हैं। इस दौरान वह वियनतियाने में 21वें आसियान-भारत और 19वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन के दौरान कई राष्ट्राध्यक्षों के साथ द्विपक्षीय बैठकें भी करेंगे।

मित्र पीएम मोदी ने पाकिस्तान के खिलाफ आक्रामक जवाबी कार्रवाई की धमकी देकर उन्हें आश्चर्यचकित कर दिया.....

डोनाल्ड ट्रम्प ने अपने मित्र प्रधानमंत्री मोदी को बताया सबसे अच्छा इंसान

नई दिल्ली, एजेंसी

अभिनेत्री से राजनेता बनीं कंगना रनौत ने अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के एक पॉडकास्ट को अपने सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म एक्स पर शेयर किया। इस पॉडकास्ट में ट्रंप ने पीएम मोदी को सबसे अच्छा इंसान बताते हुए उन्हें टोटल किलर करार दिया। सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर पॉडकास्ट को शेयर करते हुए कंगना रनौत ने कैप्शन में लिखा, पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने फ्लैग्रेंट पॉडकास्ट में प्रधानमंत्री मोदी को सबसे अच्छा इंसान बताया, लेकिन साथ ही उन्हें ह्यटोटल किलरह्व (ऐसे शख्स जो सफल हैं, आक्रामक हैं और किसी भी स्थिति से निपटने में पारंगत) बताया। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने पाकिस्तान के खिलाफ आक्रामक जवाबी कार्रवाई की धमकी देकर उन्हें आश्चर्यचकित कर दिया, जब उन्होंने कहा कि हम उनसे निपट लेंगे, भारत ने सैकड़ों वर्षों से उन्हें हराया है। इसकी तुलना मुंबई में हुए भीषण आतंकी हमले के बाद कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए की बेरुखी से करें। भारत का जिक्र करते हुए ट्रंप ने कहा कि नरेंद्र मोदी के आने से पहले भारत में हर साल पीएम बदला जाता था। वहां बहुत ज्यादा अस्थिरता थी। इसके बाद वह आए। वह महान हैं। वह मेरे मित्र हैं। बाहर से वह ऐसे दिखते हैं, जैसे वह आपके पिता हैं। वह सबसे अच्छे हैं। डोनाल्ड ट्रंप ने कॉमेडियन एंड्रयू शुल्ट्ज और आकाश सिंह के साथ फ्लैग्रैंट नामक पॉडकास्ट में ये बातें कही। 88 मिनट लंबे साक्षात्कार के लगभग 37 मिनट तक उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के साथ अपने संबंधों का जिक्र किया। ट्रंप ने आगे कहा कि ह्यहाउडी मोदीह्व 2019 में टेक्सास के ह्यूस्टन में भारतीय समुदाय का एक कार्यक्रम था। एनआरजी स्टेडियम में आयोजित इस कार्यक्रम में भारी भीड़ उमड़ी और दोनों देशों के बीच संबंधों को दर्शाया गया। उन्होंने कहा कि स्टेडियम में लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। लोग पागल हो रहे थे और हम घूम रहे थे..हम उनके बीच में थे, हर किसी को हाथ हिला रहे थे। आपको बताते चलें, ट्रंप इससे पहले भी कई मौके पर प्रधानमंत्री मोदी की प्रशंसा करते हुए उन्हें शानदार व्यक्ति बता चुके हैं।

संक्षिप्त समाचार

छात्रसंघ चुनाव को लेकर शुरू हुई भूख हड़ताल

नैनीताल, एजेंसी। छात्रसंघ चुनाव की तिथि जारी करने की मांग को लेकर सोमवार को रातभर कुमाऊं विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन में धरने पर बैठे छात्रनेताओं ने मंगलवार से भूख हड़ताल शुरू कर दी। कुछ छात्रनेताओं ने उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धनसिंह रावत के खिलाफ नारेबाजी कर उनका पुतला फूंका। छात्रों ने चेतावनी दी कि चुनाव की तिथि जारी होने तक भूख हड़ताल की जाएगी। भूख हड़ताल पर आशीष कबडवाल, विशाल बिष्ट, अभिषेक कुमार, करन सती, सौरभ कुमार और अंशुल कुमार बैठे हुए हैं। वहां हर्षित अधिकारी, कमलेश कुमार, प्रशांत मेहरा, सागर मेहरा, मोहित गोयल, देव चौहान, शुभम कुमार आदि थे। इधर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने कुलपति प्रो. दीवान सिंह रावत को छात्रसंघ चुनाव की तिथि घोषित करने के संबंध में ज्ञापन सौंपा। चेतावनी दी कि यदि जल्द ही चुनाव की तिथि घोषित नहीं की गई तो छात्र आंदोलन की राह अपनाएंगे। वहां उत्कर्ष बिष्ट, तनिष्क मेहरा, पंकज भट्ट, सूरज रमोला आदि थे। वहीं कुलपति प्रो. रावत ने कहा कि छात्रों की मांग शासन तक पहुंचा दी गई है। छात्रसंघ चुनाव के संबंध में शासन की ओर से ही निर्णय लिया जाना है।

रातोंरात सड़क खोदकर गांव में पहुंचा दी पोकलेन मशीन

बागेश्वर, एजेंसी। भीड़ी गांव में अवैध तरीके से सड़क काटकर पोकलेन मशीन ले जाना पट्टाधारक को भारी पड़ गया। ग्रामीणों की शिकायत पर एसडीएम मोनिका ने मौके पर जाकर मशीन को सीज कराया। उन्होंने अवैध रूप से खोदी गई जमीन और बिना अनुमति के काटे गए पेड़ों के एवज में पट्टाधारक पर जुर्माने की संस्तुति करते हुए डीएम को रिपोर्ट भेजी है। जानकारी के अनुसार भीड़ी गांव में सोमवार रात को पट्टाधारक ने अवैध रूप से वन पंचायत से सड़क खोदकर पोकलेन मशीन गांव तक पहुंचा दी। सुबह जब ग्रामीणों को इसकी भनक लगी तो वह मौके पर पहुंचे। ग्रामीणों और मशीन लेकर आने वालों के बीच जमकर कहासुनी हुई। ग्रामीणों ने पोकलेन मशीन को आगे ले जाने पर रोक लगा दी। मामले की सूचना प्रशासन को की। सूचना मिलने के बाद एसडीएम मोनिका मौके पर पहुंचीं। एसडीएम ने बताया कि वन भूमि में हुए सड़क निर्माण का निरीक्षण करने के बाद मशीन को सीज किया गया है। निरीक्षण की रिपोर्ट जिलाधिकारी को भेज दी गई है।

घर से नशे की दो हजार गोलियां बरामद

किच्छा, एजेंसी। कोतवाली पुलिस ने नशीले पदार्थों के कारोबार पर कार्रवाई करते हुए बंडिया क्षेत्र में एक घर में दबिश देकर नशे की दो हजार गोलियां बरामद की है। पुलिस ने दंपती सहित तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट में केस दर्ज किया है। सोमवार को पुलिस टीम रेलवे स्टेशन से बंडिया भट्टा की ओर पैदल गश्त कर रही थी। टीम को सूचना मिली कि वार्ड नंबर पांच बंडिया भट्टा में एक घर में नशे की गोलियों का व्यापार हो रहा है। इस दौरान पुलिस टीम ने घर पर छापा मारा तो वहां दो हजार नशे की गोलियां और गोलियां बेचकर कमाए गए नौ लाख रुपये बरामद हुए। पुलिस ने गृहस्वामी सुरेंद्र उर्फ रिंकू, उसकी पत्नी बलजीत कौर उर्फ सिमरन, भाई वीरेंद्र सिंह उर्फ काके को गिरफ्तार किया। सीओ बहादुर सिंह चौहान ने बताया कि पूछताछ में अभियुक्तों ने बताया कि वे नशे की गोलियां गाजियाबाद क्षेत्र में किसी व्यक्ति से लाते हैं। वे काफी समय से नशे की गोलियां बेचने का काम कर रहे थे। टीम में एसएचओ धीरेंद्र कुमार, एसएसआई उमेश कुमार सहित अनेक मौजूद रहे।

जिला अस्पताल में मरीजों को आसानी से मिलेगा इलाज

चंपावत, एजेंसी। सीएम के विधानसभा क्षेत्र के जिला अस्पताल में लोगों को अब ऑनलाइन सॉफ्टवेयर से पर्ची पंजीकरण की सुविधा मिलेगी। मरीजों को अस्पताल में चिकित्सकों की जानकारी भी ऑनलाइन माध्यम से मिल जाएगी। इस प्रणाली के लागू होने के बाद सबसे अधिक राहत बुजुर्ग लोगों को मिलेगी। चंपावत जिला अस्पताल में इलाज के लिए आने वाले

असम से असलहे समेत भागा सैन्यकर्मी गिरफ्तार, बंगाल इंजीनियर के इस जवान से 60 कारतूस बरामद

ऊधम सिंह नगर, एजेंसी। असम से चार दिन पहले राइफल, कारतूस और मैगजीन लेकर फरार बंगाल इंजीनियर के एक जवान को पुलिस ने खटीमा के एक होटल से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उसके पास एक इन्सास राइफल, 60 कारतूस और चार मैगजीन बरामद की।

असम से चार दिन पहले राइफल, कारतूस और मैगजीन लेकर फरार बंगाल इंजीनियर के एक जवान को पुलिस ने खटीमा के एक होटल से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उसके पास एक इन्सास राइफल, 60 कारतूस और चार मैगजीन बरामद की। पकड़े गए फौजी से आर्मी इंटेलीजेंस, आईबी और एलआईयू ने पूछताछ की। फौजी को न्यायालय के समक्ष पेश किया गया है। पुलिस के मुताबिक, नायब सूबेदार रवींद्र सिंह यादव ईएमई बटालियन ने पांच अक्तूबर 2024 को थाना बोरपत्थर, जिला कर्बी एंगलोंग, असम में चंपावत निवासी जवान सूरज जोशी के इन्सास राइफल और 60 राउंड कारतूस के साथ गाड़ी से कूदकर फरार होने पर रिपोर्ट दर्ज कराई थी।

आठ अक्तूबर को आरोपी सूरज जोशी के खटीमा क्षेत्र में होने की सूचना मिली थी। इसपर खटीमा पुलिस ने उसकी सुरागकसी शुरू की। पुलिस ने मंगलवार रात्रि के समय आरोपी सूरज जोशी को इन्सास राइफल, चार मैगजीन व 60 कारतूस के साथ खटीमा चौराहे के निकट एक होटल के कमरा नंबर 201 से पकड़ लिया। उसके विरुद्ध कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज की गई। सूचना मिलने पर बनबसा, चंपावत से पहुंचे सेना के अधिकारियों ने भी आरोपी फौजी से जानकारी जुटाई है।

मामले की गंभीरता को देखते हुए आईबी और एलआईयू ने भी फौजी से पूछताछ की। कोतवाल मनोहर सिंह दसौनी ने बताया कि फौजी की गिरफ्तारी के बाद बनबसा, चंपावत से पहुंचे सेना के अधिकारियों ने भी फौजी के संबंध में जानकारी जुटाई। गिरफ्तार फौजी को न्यायालय में पेश किया गया है। फौजी को देर रात खटीमा के एक होटल से एक इन्सास राइफल, 60 जिंदा कारतूस व चार मैगजीन के साथ गिरफ्तार किया गया। फौजी को न्यायालय में पेश कर दिया है। उसके विरुद्ध असम के बोरपत्थर थाने में रिपोर्ट दर्ज है। असम की पुलिस फौजी की रिमांड के लिए कोर्ट में आवेदन कर सकती है।

पुलिस के मुताबिक, प्राथमिक पूछताछ में आरोपी सूरज जोशी ने बताया कि वह ऑनलाइन गेम में पैसे हार गया था जिससे वह परेशान चल रहा था। उसने ऋण भी लिया हुआ था। पुलिस के मुताबिक, नंदपुली, मोरारी, चंपावत निवासी सूरज जोशी 2020 में बीईजी रुड़की (बंगाल इंजीनियर) में भर्ती हुआ था। वर्तमान में उसकी पोस्टिंग असम में चल रही थी। 24 वर्षीय सूरज ने 12वीं तक पढ़ाई की है। सूत्रों के मुताबिक, खटीमा क्षेत्र के पास नेपाल की खुली सीमा होने के कारण मामला गंभीर हो सकता है जिस कारण जांच एजेंसियां भी सक्रिय हैं।

एनएच बदहाल, राह चलना मुश्किल

चंपावत, एजेंसी। जिला मुख्यालय से चंपावत कैंपस परिसर क्षेत्र तक एनएच में जगह-जगह गड्ढे लोगों के लिए मुसीबत बने हुए हैं। लंबे समय से एनएच पर जगह-जगह बने गड्ढों के कारण लोगों के लिए आवाजाही मुश्किल हो रही है। एनएच पर बने इन गड्ढों से वाहन चालक बचकर चलते हैं। एनएच पर बने इन गड्ढों से बचकर राहगीरों के साथ ही वाहन चालकों को चलना पड़ रहा है। सबसे अधिक दिक्कत कोतवाली के पास हैं। यहां पर अक्सर गड्ढों के कारण सड़क पर पानी का ताल बना रहता है। यहां पर वाहन संभल कर चलाना पड़ता है। करीब तीन किमी के क्षेत्र में सड़क पर 100 से भी अधिक गड्ढे वाहन चालकों के लिए मुसीबत बने हैं। कई बार इन गड्ढों की चपेट में आकर बाइक सवार रपट चुके हैं। चंपावत टीआरसी से लेकर, जायका होटल, गैस ऑफिस, जिला अस्पताल, वन विभाग कार्यालय, कोतवाली से कैंपस परिसर क्षेत्र तक एनएच पर गड्ढों के कारण कैंपस जाने वाले छात्र-छात्राओं को भी समस्या का सामना करना पड़ता है। सीएम ने 14 अक्तूबर तक गड्ढे मुक्त सड़क की बात कही है। उसकी मियाद में अब छह दिन का समय है।

कमरे में फंदे पर लटका मिला पल्लेदार

रुद्रपुर, एजेंसी। संदिग्ध हालात में एक व्यक्ति कमरे में फंदे पर लटका मिला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को जिला अस्पताल के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस के अनुसार मृतक नशा करने का आदि था और उसका पत्नी से विवाद हुआ था।

मूल रूप से बिहार के थाना सकरी स्थित ग्राम शकरीभराव निवासी लाल जीवन (30) ट्रांजिट कैंप के शास्त्रीनगर कॉलोनी में पत्नी और दो बच्चों के साथ किराए पर रहता था। वह गल्ला मंडी में पल्लेदारी का काम करता था। सोमवार की रात वह खाना खाने के बाद कमरे में चला गया था। कुछ देर बाद जब पत्नी मित्तल देवी कमरे में पहुंची तो लाल जीवन फंदे पर लटका हुआ था।

पत्नी के शोर मचाने पर आसपास के लोग एकत्र हुए और उसे फंदे से उतारा। सूचना पर पहुंची पुलिस ने अचेत लाल जीवन को जिला अस्पताल पहुंचाया, जहां डाक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया।

वन भूमि में बनाई गईं 40 झोपडियां तोड़ी

खटीमा, एजेंसी। वन विभाग की टीम ने मंगलवार को आरक्षित वनक्षेत्र सालबोझी में अतिक्रमण कर बनाई गई करीब 40 झोपड़ियों को ध्वस्त कर दिया। साथ ही अतिक्रमणकारियों को दोबारा वन भूमि में झोपड़ी बनाने पर सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी।

वन क्षेत्राधिकारी महेश जोशी के नेतृत्व में वन विभाग की टीम ने पीलीभीत मार्ग स्थित आरक्षित वनक्षेत्र सालबोझी में बनाई गई झोपड़ियों के ध्वस्तीरकण की कार्रवाई शुरू की। वन कर्मियों ने एक के बाद एक करीब 40 झोपड़ियों को ध्वस्त कर वन भूमि को अतिक्रमण मुक्त कराया।

वन क्षेत्राधिकारी जोशी ने बताया कि सालबोझी से कुछ समय पूर्व लकड़ियों के टालों को हटाने के दौरान अवैध रूप से बनाई गई झोपड़ियों को भी तोड़ा गया था, लेकिन अतिक्रमणकारियों ने दोबारा झोपडियां बना ली थीं। उच्च अधिकरियों के निर्देश पर अतिक्रमण के विरुद्ध कार्रवाई की गई। उन्होंने कहा कि यदि कोई व्यक्ति दोबारा अतिक्रमण करता पाया गया तो उसके विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी।

रात को घर नहीं आता था पति, मायके वालों से करवाई जासूसी तो पैरों तले खिसकी जमीन

रुड़की, एजेंसी। एक युवक ने गुपचुप तरीके से दूसरा निकाह कर लिया। जब पहली पत्नी को इसका पता चला तो उसने विरोध जताया। इस पर पति ने उसकी पिटाई कर दी और घर से निकालने की धमकी दे दी। पीड़ित महिला ने कोतवाली पुलिस को मामले की तहरीर दी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

सिविललाइंस कोतवाली क्षेत्र के सती मोहल्ला निवासी एक महिला का निकाह करीब सात साल पहले हुआ था। महिला का आरोप है कि उसके पति ने कुछ माह पहले गुपचुप तरीके से दूसरी महिला से निकाह कर लिया और एक किराये के मकान में उसे ठहरा दिया।

महिला का कहना है कि इसके बाद से उसका पति अक्सर रात को घर से बाहर रहता था और उसके पूछने पर काम का बहाना बनाकर उसे टाल देता था।

महिला ने बताया कि शक होने पर उसने अपने मायके पक्ष के लोगों से पति की निगरानी शुरू कराई तो उसे पति के दूसरे निकाह के बारे में पता चला।

आरोप है कि जब उसने पति के सामने इसका विरोध किया तो उसकी पिटाई कर दी गई और घर से बाहर निकालने और जान से मारने की भी धमकी दी गई। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने मामले की छानबीन शुरू कर दी है। प्रभारी निरीक्षक नरेंद्र बिष्ट ने बताया कि पुलिस मामले की जांच कर रही है।

मंगलौर में विवाहिता ने पति पर अन्य महिला से अवैध संबंध के चलते उसे तीन तलाक देने के आरोप में मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है। मंगलौर कस्बा निवासी महिला ने पुलिस को तहरीर देकर बताया कि उसकी शादी 1997 में शमीम अहमद के साथ हुई थी। उनके चार बच्चे भी हैं। महिला का आरोप है कि रामपुर, रुड़की के एक मकान में रहने वाली महिला से उसके पति के अवैध संबंध चले आ रहे हैं। बताया कि स्वजन के समझाने के बाद भी पति ने ये हरकतें नहीं छोड़ी। आरोप है कि विरोध करने पर पति लड़ाई-झगड़ा करते हुए 25 सितंबर को उसे तीन तलाक देकर छोड़कर चला गया। पुलिस ने आरोपित के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

बच्चों के भारी बस्तों का वजन नहीं हो रहा हल्का

चंपावत, एजेंसी। स्कूली बच्चों के बस्ते का वजन हल्का नहीं हा रहा है। शिक्षा विभाग की ओर से सभी निजी विद्यालयों को बस्तों का वजन तय मानक अनुसार किए जाने को लेकर निर्देश दिए गए हैं। इसके बावजूद बच्चों का बस्ता कॉपी और किताबों से और भारी होता जा रहा है। निजी विद्यालयों के प्राथमिक कक्षाओं से ही बच्चे कॉपी-किताबों का भारी वजन उठाते हैं। बस्ते के वजन के कारण बच्चों के कंधे आगे की ओर झुके होते हैं। ऐसे में अधिकतर अभिभावक बच्चों के बस्ते का वजन अपने कंधे में उठाकर उसे स्कूल तक पहुंचाने जाते हैं। अभिभावकों ने इसे लेकर विद्यालयों की शिकायत मौखिक रूप में विभाग से की है। विभाग अब ऐसे सभी विद्यालयों पर नकेल कसने की तैयारी में है। अनुसार बच्चों के बस्ते का वजन कम नहीं पाया गया तो जारी नियमों का उल्लंघन करने और अनियमितता पाए जाने पर ऐसे सभी स्कूलों को ब्लैक लिस्ट किया जाएगा।

कैंची धाम में जाम से मिलेगी मुक्ति, बनेगा बाईपास

अल्मोड़ा, एजेंसी। अल्मोड़ा-हल्द्वानी मार्ग पर स्थित कैंची धाम में लगने वाले जाम से अब लोगों को जल्द निजात मिलेगी। इसके लिए यहां से रातीघाट तक बाईपास का निर्माण किया जाएगा। 15 अक्तूबर को अधिकारियों की टीम यहां आएगी और यहां का स्थलीय निरीक्षण करेगी। अल्मोड़ा-हल्द्वानी हाईवे पर स्थित कैंची धाम मंदिर लोगों की आस्था का केंद्र है। इसके चलते यहां आने वाले सैलानियों की तादाद काफी अधिक होती है। ऐसे में यहां कई बार जाम की समस्या पैदा हो जाती है। इसके लिए अब कैंची धाम के पास स्थित हड़यपा बैंड से भवाली सैनेटोरियम होते हुए रातीघाट तक बाईपास का निर्माण किया जाएगा।

केंद्रीय सड़क राज्य मंत्री अजय टम्टा ने बताया कि इसके मार्ग के निर्माण के लिए अधिकारियों की एक टीम 15 अक्तूबर को यहां आएगी। उन्होंने बताया कि इस बाईपास के निर्माण के बाद जहां कैंची धाम में लगने वाले जाम से मुक्ति मिलेगी। वहीं यात्रियों को भी इस बाईपास से सफर करने में आसानी होगी।

ट्रक की टक्कर से बाइक सवार राजमिस्त्री की मौत

पंतनगर, एजेंसी। किच्छा-हल्द्वानी मार्ग पर शांतिपुरी के पास बाइक सवार को तेज रफ्तार ट्रक ने टक्कर मार दी। हादसे में घायल युवक को जिला अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उसने दम तोड़ दिया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी भेज दिया है।

बरेली के शरीफनगर निवासी विक्रम मौर्य (35) हल्द्वानी में राजमिस्त्री का काम करता था। सोमवार की रात वह बाइक से अपने घर जा रहा था। शांतिपुरी के पास ट्रक ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में घायल विक्रम को जिला अस्पताल लाया गया लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। उसके परिवार में पत्नी, एक पुत्री और चार पुत्र हैं। हादसे के बाद चालक ट्रक लेकर फरार हो गया। पुलिस की सूचना पर परिजन मोर्चरी पहुंच गए। फिलहाल परिजनों की ओर से पुलिस को तहरीर नहीं दी गई है। मृतक के पिता मुन्ना लाल ने बताया कि ट्रक की टक्कर के बाद बाइक डंपर के पिछले हिस्से में फंसकर दूर तक घिसटती चली गई और अंत में ट्रक की नंबर प्लेट टूटकर बाइक में ही फंसी रह गई। इस घटना को पीछे से आ रहे छत्रपाल निवासी ग्राम भुजिया थाना-शीशगढ जिला बरेली (यूपी) और अन्य लोगों ने भी देखा है।

दुनिया के शीर्ष वैज्ञानिकों में उत्तराखंड के एक वैज्ञानिक का भी नाम, स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी ने जारी की सूची

अल्मोड़ा, एजेंसी। उत्तराखंड के एक वैज्ञानिक का नाम दुनिया के शीर्ष वैज्ञानिकों की सूची में शामिल हुआ है। पहाड़ी शहर अल्मोड़ा के डॉ. तरुण बेलवाल ने अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक जगत में एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की है।

अमेरिका की स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी ने दुनिया के शीर्ष वैज्ञानिकों की सूची में खाद्य विज्ञान में उन्हें 498 वीं रैंक दी है। उनकी इस उपलब्धि से क्षेत्र वासियों में हर्ष व्याप्त है और उनका परिवार गौरवांवित महसूस कर रहा है।

मूलरूप से अल्मोड़ा के रहने वाले डॉ. तरुण बेलवाल का शोध कार्य मुख्य रूप से फाइटोन्यूट्रिएंट्स, खाद्य विज्ञान और प्राकृतिक उत्पादों से संबंधित हैं। उनके शोधों ने प्राकृतिक एंटीऑक्सिडेंट्स, स्वास्थ्य सुधारक खाद्य पदार्थों और खाद्य सुरक्षा के क्षेत्र में नई संभावनाओं को जन्म दिया है। उनके अनुसंधान न केवल भारत में बल्कि विश्व स्तर पर स्वास्थ्य और पोषण विज्ञान के क्षेत्र में मान्यता प्राप्त कर चुके हैं।

डॉ. तरुण बेलवाल ने बताया कि इस सफलता के पीछे उनके परिवार का महत्वपूर्ण योगदान है। उनकी माता निर्मला बेलवाल और पिता नवीन

चंद्र बेलवाल ने हमेशा ही उन्हें प्रोत्साहित किया।

उनकी पत्नी सुदिप्ता रामोला ने भी आगे बढ़ने को प्रेरित किया। इसके अलावा उनके रिश्तेदार, जीबी पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. आईडी भट्ट ने मार्गदर्शन किया।

टॉन्सिल बढ़ा रहा बच्चों का दर्द

बागेश्वर, एजेंसी। जिला अस्पताल में इन दिनों टॉन्सिलाइटिस के मरीजों की संख्या बढ़ गई है। बीमारी से पीड़ित 10-12 बच्चे रोजाना ओपीडी में जांच और उपचार के लिए पहुंच रहे हैं। मौसम में हो रहे उतार-चढ़ाव के कारण गले की ग्रंथि टॉन्सिल में सूजन और खराश की समस्या आ रही है।

जिला अस्पताल के बाल रोग कक्ष में रोजाना करीब 40-55 मरीजों की ओपीडी हो रही है। कुछ दिनों पूर्व ओपीडी में अधिकतर बच्चे वायरल फीवर से ग्रसित थे, लेकिन इनकी संख्या कम होते ही अब बच्चे टॉन्सिलाइटिस की चपेट में आ रहे हैं। परिजन बच्चों के गले में सूजन, तेज बुखार, खाना न खा पाने की शिकायत लेकर अस्पताल पहुंच रहे हैं।

अस्पताल की बालरोग विशेषज्ञ डॉ. दीपाली मकवाना ने बताया कि रोजाना टॉसिंलाइटिस से ग्रसित बच्चे ओपीडी में पहुंच रहे हैं। मौसम में हो रहे बदलाव के बावजूद परिजन बच्चों को फ्रीज का ठंडा पानी, आइसक्रीम और शीत पेय दे रहे हैं जिससे बच्चे बीमार पड़ रहे हैं।

उन्होंने बताया कि गले में दर्द होने या खराश होने पर घरेलू उपचार अपनाने की बजाय बच्चे को अस्पताल लेकर आना चाहिए। टॉन्सिलाइटिस होने पर दवाओं के सेवन से यह एक-दो सप्ताह में ठीक हो जाता है।

दो अलग-अलग घटनाओं ने की पुलिस विभाग की रातों की नींद हराम

उधम सिंह नगर, एजेंसी। उत्तराखंड के उधम सिंह नगर में से दो अलग-अलग घटनाएं सामने आने से पुलिस विभाग की रातों की नींद हराम हो गई है। इसी के साथ ही संबंधित घटनाएं सीसीटीवी में भी कैद है। दरअसल, जनपद के कोतवाली बाजपुर में दो पक्षों के बीच मामूली विवाद ने महाभारत का रूप धारण कर लिया। वहीं मौके पर किसी ने इस लड़ाई की वीडियो अपने कैमरे में लाइव बना ली। इस मारपीट की वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस ने मामला दर्ज करते हुए अपनी जांच शुरू कर दी है। वहीं, दूसरे मामले में एक कोचिंग सेंटर से जा रही छात्रा को तीव्र गति से आ रहे बाइक सवार ने रोंद दिया। इसकी तस्वीरें लगे सीसीटीवी में लाइव कैद हो गई, जो कि अब जमकर वायरल हो रही है। जानकारी के अनुसार ऊधम सिंह नगर के बाजपुर क्षेत्र ग्राम मरियमपुर स्थित एक स्कूल के सामने दो गुटों में जमकर मारपीट हो गई। बताया गया की दोनों पक्षों ने पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। इसमें रामनगर के बैलपड़ाव निवासी अर्नाल्ड डेविड ने पुलिस को तहरीर में बताया कि उसे बाजपुर निवासी एक युवक ने फोन करके मिलने के लिए बुलाया था। इसके चलते वह बाजपुर के ग्राम मरियमपुर स्थित एक स्कूल के पास आया। इस दौरान मौके पर मौजूद उस युवक तथा अन्य युवकों ने उसके साथ मारपीट शुरू कर दी। साथ ही पीड़ित ने तहरीर में बताया कि मारपीट में उसे गंभीर चोटें आई है। वहीं, दूसरी घटना बाजपुर के टीचर कॉलोनी में हुई है। जहां एक कोचिंग सेंटर से दो छात्राएं पढ़ाई कर जा रहीं थीं कि अचानक एक तीव्र गति से आ रही बाइक जे एक छात्र को रोंद दिया। इसमें छात्रा गंभीर रूप से घायल हो गई है। इस घटना के बाद घायल छात्रा को तत्काल हॉस्पिटल में भर्ती कराया। बताया गया कि घायल छात्रा की हालत गंभीर होने के कारण उसे हायर सेंटर रेफर कर दिया गया। इस दौरान कोतवाली बाजपुर से मारपीट के मामले में तहरीर प्राप्त हुई है। इस मामले में जांच कर आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। वहीं,दूसरा मामला बाजपुर के टीचर कॉलोनी में एक कोचिंग सेंटर से दो छात्राएं पढ़ाई कर जा रहीं थीं कि अचानक एक तीव्र गति से आ रही बाइक जे एक छात्र को रोंद दिया।

सवारी लेकर चली रोडवेज बस हुई खराब

बागेश्वर, एजेंसी। रोडवेज की पुरानी बसें आए दिन यात्रियों की परेशानी बढ़ा रही हैं। एक बार फिर एक बस के रास्ते में खराब हो गई। डिपो से निकलकर बस एक किमी भी नहीं गई थी, कि बस के चक्के रुक गए। डिपो में खड़ी दूसरी बस से यात्रियों को गंतव्य की ओर रवाना किया गया।

रोडवेज डिपो की दिल्ली-मुनस्यारी बस बागेश्वर से दिल्ली जानी थी। बस को डिपो से स्टेशन पहुंचकर नंबर पर लगना था। करीब 11:30 बजे बस डिपो से स्टेशन के लिए चली, लेकिन तहसील के पास खराब हो गई। इस बस में सात-आठ यात्री सवार थे। बस के खराब होने की सूचना चालक ने डिपो में दी। डिपो में खड़ी दूसरी बस को मौके पर भेजा गया जिसके बाद दूसरी बस स्टेशन में जाकर नंबर पर लगी और यात्रियों को लेकर दिल्ली के लए रवाना हुई। कार्यशाला इंचार्ज अनिल सिंह ने बताया कि बस स्टेशन पहुंचने से पहले ही खराब हो गई थी। गेयर बॉक्स में खराबी आने के कारण दूसरी बस को भेजा गया।

22 से बुद्ध पार्क में धरने पर बैठेंगे गैर वैशाली क्षेत्र के ग्रामीण

हल्द्वानी, एजेंसी। जलभराव से निजात दिलाने को लेकर पूर्व में मिले आश्वासन पर कार्रवाई न होते देख अब गैर वैशाली क्षेत्र के लोगों ने 22 अक्तूबर से बुद्ध पार्क में धरने पर बैठने की चेतावनी दी है। ग्रामीणों के शिष्टमंडल ने मंगलवार को सिटी मजिस्ट्रेट को ज्ञापन देकर प्रशासन पर वादाखिलाफी का आरोप लगाया।

समाजसेवी रमेश चंद्र पांडे के नेतृत्व में शिष्टमंडल ने सिटी मजिस्ट्रेट एपी बाजपेयी, एसडीएम परितोष वर्मा और सिंचाई विभाग के अधिशासी अभियंता डीएस रावत से भेंट की। कहा कि बरसात के सीजन में गैर वैशाली क्षेत्र की 12 से अधिक कॉलोनियों में भारी जलभराव हुआ था।

प्रशासन ने जलभराव की समस्या जल्द हल कराने का आश्वासन दिया था लेकिन उस पर अब तक कोई कार्य नहीं हुआ है। कहा कि जल्द काम शुरू नहीं हुआ तो ग्रामीण बुद्ध पार्क में धरना प्रदर्शन करेंगे। सिटी मजिस्ट्रेट ने कहा कि शीघ्र ही संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ बैठक कर समस्या को हल करा दिया जाएगा। शिष्टमंडल में रमेश पांडे, अनुज सिराड़ी, बहादुर सिंह हरड़िया, गंगा प्रसाद आदि थे।

दिल्ली में होगा दुनिया के सबसे ऊंचे रावण का दहन

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

नवरात्र की शुरूआत होने के साथ ही अब लोग रावण का दहन देखने के लिए दशहरे का इंतजार कर रहे हैं। वहीं इस बार द्वारका के रामलीला ग्राउंड में एक ऐसा लंबा और विशाल रावण खड़ा किया गया है जो कि लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच रहा है।

वाटर प्रूफ है रावण का पुतला

बच्चों से लेकर बड़े तक सभी इसे देखने के लिए आ रहे हैं, क्योंकि यह दिल्ली ही नहीं बल्कि विश्व का सबसे ऊंचा रावण बताया जा रहा है। इस बात का दावा आयोजक ने किया है। यह रावण वाटर प्रूफ है क्योंकि इसे मखमल के कपड़े से बनाया गया है, इसमें कागज का इस्तेमाल नहीं किया गया है। रावण की लंबाई 211 फीट है।

द्वारका के रामलीला ग्राउंड में राम मंदिर की तर्ज पर भव्य रूप से तैयार किया गया स्टेज। इसलिए रावण को देखने के लिए लोगों को अपना सर पूरा ऊपर करना पड़ रहा है। रावण के जूते भी बनाए गए हैं जो कि लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। इसलिए लोग उसके साथ फोटो भी खिंचवा रहे हैं।

पहले 60 से 70 फीट होती थी रावण की लंबाई

द्वारका श्री रामलीला सोसायटी के चेयरमैन राजेश गहलोट ने बताया है कि हर साल की तरह इस बार भी रामलीला का आयोजन और भव्यता के साथ किया जा रहा है। रावण की लंबाई हर साल बढ़ती जा रही है। पहले रावण की लंबाई 60 से 70 फीट अधिकतम होती थी फिर धीरे-धीरे यह बढ़ती चली गई। इस बार रावण की लंबाई 211 फीट है।

30 लाख रुपये की लागत से बना रावण

पंजाब के अंबाला के पास भरारा गांव के जितेंद्र खन्ना ने इस रावण को बनाकर तैयार किया है। अलग-अलग जगहों के करीबन 40 कलाकारों द्वारा इस रावण को तैयार किया गया है जिसमें चार महीने का समय लगा है। दो अक्टूबर को यह रावण मैदान में खड़ा किया गया है। उन्होंने बताया कि इस रावण को बनवाने में करीबन 30 लाख रुपये की लागत आई हैजमीन के नीचे तक लगाए गए हैं दस फीट गहरे पाइप

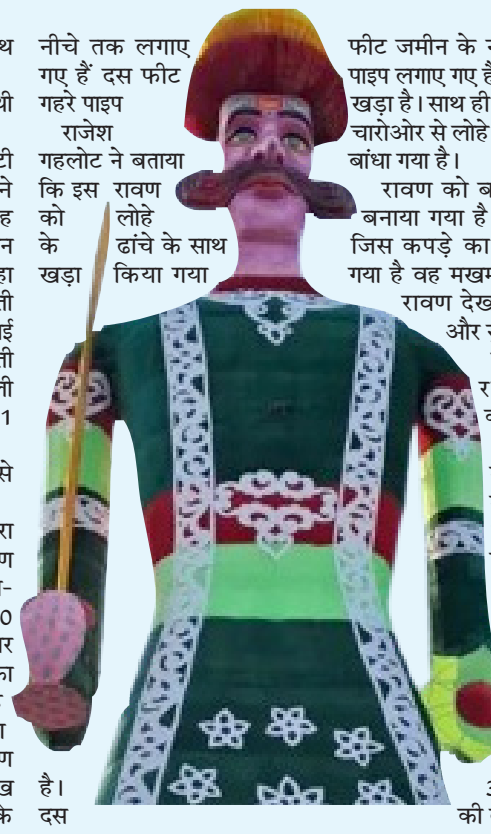

राजेश गहलोट ने बताया कि इस रावण को लोहे के ढांचे के साथ खड़ा किया गया है। दस फीट जमीन के नीचे भी लोहे के पाइप लगाए गए हैं, जिस पर रावण खड़ा है। साथ ही लोहे के ढांचे को चारोओर से लोहे की जंजीरों से भी बांधा गया है।

रावण को बांस की मदद से बनाया गया है। साथ ही इसमें जिस कपड़े का इस्तेमाल किया गया है वह मखमल का है, ताकि रावण देखने में भी अच्छा और सुंदर लगे।

इस बार के रामलीला मंचन की खास बातें-

रामलीला मंचन के लिए राम मंदिर की तर्ज पर भव्य रूप से स्टेज तैयार कराया गया है।

दस हजार लोगों के बैठने का इंतजाम किया गया है।

करीबन 30 लाख रुपये की लागत 211 फीट लंबाई का रावण का पुतला बनाया गया।

सुरक्षा व्यवस्था के लिए 200 सीसीटीवी कैमरे भी लगाए गए हैं।

रामलीला के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित अन्य कैबिनेट मंत्रियों को निमंत्रण भेजा गया है।

राम मंदिर की तर्ज पर बनाया गया है स्टेज चेयरमैन के मुताबिक रामलीला मंचन के लिए राम मंदिर की तर्ज पर भव्य रूप से स्टेज तैयार कराया गया है, यह पूरा श्रीडी में है। रामलीला मंचन के लिए 400 में से 100 कलाकारों को चुना गया है, जिन्हें पहले प्रशिक्षण भी दिया गया है।

यहां पर दस हजार लोगों के बैठने का इंतजाम किया गया है। दस हजार वाहनों की पार्किंग का इंतजाम है। सुरक्षा की दृष्टि से 200 सीसीटीवी कैमरे भी लगाए गए हैं। यहां पर सभी सबसे सुंदर रामलीला देखने को मिलेंगी। आयोजक राजेश गहलोत ने कहा कि रामलीला के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को निमंत्रण दिया गया है। साथ ही अन्य कैबिनेट मंत्रियों को भी निमंत्रण भेजा जा चुका है।

सुप्रसिद्ध उद्योगपति पद्म विभूषण रत्न टाटा का निधन

- भारत की औद्योगिक प्रगति का महानायक सबको रोता बिलखता छोड़कर चला गया: डॉ.दयानंद वत्स भारतीय

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

अखिल भारतीय स्वतंत्र पत्रकार एवं लेखक संघ के राष्ट्रीय महामंत्री शिक्षाविद् डॉ.दयानंद वत्स भारतीय ने सुप्रसिद्ध उद्योगपति पद्म विभूषण रत्न टाटा का निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए इसे भारतीय उद्योग जगत की अपूरणीय क्षति बताया है। वत्स ने कहा कि रत्न टाटा भारत की औद्योगिक प्रगति के महानायक थे। आज वे हम सबको रोता बिलखता छोड़ कर इस नश्वर संसार को अलविदा कह गए। ईश्वर दिवंगत रत्न टाटा जी की आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें ओर उन्हें मोक्ष प्रदान करें। वत्स ने कहा कि रत्न टाटा भारत के अनमोल रत्न थे। वे बहुत ही दयालु इंसान थे। मानवता की सेवा में उनके योगदान को 140 करोड भारतीय सदैव याद करेंगे। उन्हें देश विदेश में अनेकों सम्मानों से नवाजा गया था। उन्हें नैसकाम लीडरशिप अवार्ड भी मिला था। चित्र परिचय : तत्कालीन राष्ट्रपति माननीया श्रीमती प्रतिभा पाटिल श्री रतन टाटा को पद्मविभूषण से सम्मानित करती हुए।

भारत ने सच्चा रत्न खोया, देशभर में शोक की लहर

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

देश के दिग्गज उद्योगपति पद्म विभूषण रतन टाटा का 86 साल की उम्र में स्वर्गवास हो गया। टाटा समूह ने खुद इसकी जानकारी दी है। रतन टाटा ने मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में अंतिम सांस ली। उनके स्वर्गवास से उद्योग जगत से लेकर देशभर में शोक की लहर है। इसी कड़ी में दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने रतन टाटा के जाने पर दुख जताया है।

आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हुए लिखा कि-भारत ने अपना सच्चा रत्नह्व खो दिया है जिसने असंभव को संभव में बदल दिया। रतन टाटा की विरासत आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का प्रतीक बनी रहेगी।

इससे पहले बुधवार को दिल्ली के सीएम आतिशी ने दुख जताते हुए कहा कि ह्लरतन टाटा जी के स्वर्गवास के बारे में सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ है। उन्होंने नैतिक नेतृत्व का उदाहरण पेश किया। हमेशा देश और उसके लोगों के कल्याण को सबसे ऊपर रखा। उनकी दयालुता, विनम्रता और बदलाव लाने के जुनून को हमेशा याद रखा जाएगा। उनके परिवार और प्रियजनों के प्रति मेरी हार्दिक संवेदनाएं। उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। 1937 को सूरत में हुआ था जन्म देश की जानी-मानी हस्ती रतन टाटा को भारत के दो सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म भूषण (2000) और पद्म विभूषण (2008) सम्मान मिल चुका है। रतन टाटा का जन्म 28 दिसंबर, 1937 को गुजरात के सूरत में हुआ था। उनके माता-पिता का नाम नवल टाटा और सूनी कमिसारीट था। जब रतन टाटा 10 साल के थे, उसी दौरान वह अपने माता-पिता से अलग हो गए थे। उसके बाद उन्हें जेएन पेटिट पारसी अनाथालय के माध्यम से उनकी दादी नवाजबाई टाटा ने औपचारिक रूप से गोद ले लिया था। रतन टाटा का पालन-पोषण उनके सौतेले भाई नोएल टाटा (नवल टाटा और सिमोन टाटा के बेटे) के साथ हुआ।

शुरूआती जीवन और शिक्षा

रतन टाटा ने अपनी स्कूली शिक्षा मुंबई के कैंपियन स्कूल से पूरी की थी। यहां से उन्होंने 8वीं तक की पढ़ाई पूरी की। आगे की पढ़ाई करने के लिए वे मुंबई में कैथेड्रल एंड जॉन कॉनन स्कूल और शिमला में बिशप कॉटन स्कूल में दाखिला लिया।

इसके बाद हायर एजुकेशन के लिए रिवरडेल कंट्री स्कूल, न्यूयॉर्क शहर में शिक्षा प्राप्त की है। वे कॉर्नेल विश्वविद्यालय और हार्वर्ड बिजनेस स्कूल के पूर्व छात्र हैं।

वारदात में इस्तेमाल मोटरसाइकिल समेत लुटेरा गिरफ्तार

नई दिल्ली। शाहदरा जिले के स्पेशल स्टाफ ने कृष्णा नगर इलाके में लूट के एक मामले में बदमाश को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने इसके पास से वारदात में इस्तेमाल एक मोटरसाइकिल भी बरामद कर ली है। पुलिस उपायुक्त प्रशांत गौतम ने बताया कि आरोपी की पहचान न्यू कर्दमपुरी निवासी 25 वर्षीय नदीम उर्फ फुरकान उर्फ बोंटा के रूप में हुई है। जांच में इस पर लूट व झपटमारी के कुल 12 मामले दर्ज मिले हैं। पुलिस ने इन सभी मामलों को सुलझाने का दावा किया है। पुलिस के मुताबिक, गत 27 सितंबर को पुलिस को कृष्णा नगर इलाके में लूट की एक शिकायत मिली थी।

शिकायतकर्ता कुलदीप सिंह ने बताया कि वह परिवार के साथ ए-1/7 में रहते हैं और कश्मीरी गेट में स्पेयर पार्ट्स की दुकान चलाते हैं। इसने बताया कि 26 सितंबर को रात करीब 10 बजे वह अपने भाई मंदीप सिंह के साथ बाइक से जिम होकर घर वापस लौट रहे थे। इसी दौरान एक बाइक पर सवार दो युवक पीछे से आए और पीछे बैठे युवक ने पीड़ित के गले से सोने की चेन झपट लिया। इसके बाद आरोपी बी-ब्लॉक, कृष्णा नगर की ओर तेजी से फरार हो गए। मामला दर्ज कर स्पेशल स्टाफ इंचार्ज इंस्पेक्टर विजय बलियान की टीम ने जांच शुरू की और मौके के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालने के साथ ही फुटेज की मदद से उनका पीछा किया। इसके बाद स्थानीय सूत्रों की मदद से आरोपियों में से एक की पहचान नदीम उर्फ फुरकान उर्फ बोंटा के रूप में हुई। इसके बाद पुलिस ने इसकी सीडीआर की मदद से ठिकाने का पता लगाया और इसे दबोच लिया। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि आदतन झपटमार है। वह पुलिस की रडार में आने से बचने के लिए अक्सर मोबाइल नंबर व फोन बदलता रहता है। उसने अपने सहयोगी का नाम शिवम उर्फ नकटा बताया और इसकी निशानदेही पर एक मोटरसाइकिल बरामद कर ली गई। पुलिस को शिवम की तलाश है।

मुख्यमंत्री का सामान बाहर निकालना जनादेश का अपमान : संजय सिंह

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आवास को मुख्यमंत्री आतिशी को आवंटित नहीं किए जाने को राजनीतिक मुद्दा बना रही है। आज पार्टी नेताओं ने इस मुद्दे पर दिल्ली के उपराज्यपाल और भारतीय जनता पार्टी की आलोचना की। पार्टी के राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने कहा कि भाजपा ने नवरात्र में एक महिला मुख्यमंत्री को उनके आवास से बाहर कर उनका अपमान किया है। मां दुर्गा भाजपा को सबक सिखाएंगी। संजय सिंह ने गुरुवार को पार्टी मुख्यालय में प्रेस कान्फ्रेंस में कहा कि भाजपा चुनी हुई सरकार आप नेताओं को अपमानित करने के रोज नए हथकंडे अपना रही है, लेकिन वह हमारे काम करने के जज्बे को कैसे रोक पाएगी? मुफ्त बिजली, पानी, शिक्षा, इलाज, बुजुर्गों की तीर्थयात्रा, महिलाओं के बस यात्रा दिल्लीवालों के दिलों में बसी है, वह इसे कैसे छीन पाएगी?

उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार के पीडब्ल्यूडी ने मुख्यमंत्री आतिशी को मुख्यमंत्री आवास का चाबी दी थी। मुख्यमंत्री आतिशी ने सरकारी आवास में अपना सामान रखा हुआ था। दिल्ली के लोग जानना चाहते हैं कि किस अधिकार से एलजी ने मुख्यमंत्री का सामान सरकारी आवास से बाहर फेंकवाया। भाजपा दिल्ली में पिछले 27 साल से हार रही है। उन्होंने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री आवास पर कब्जा करने के इरादे से ही एलजी साहब ने एक महिला मुख्यमंत्री का सामान बाहर फेंकवा दिया। भाजपा झूठ फैला रही है कि अरविंद केजरीवाल ने चाबी नहीं दी थी, जबकि जीएडी के पत्र से साफ है कि 4 अक्टूबर को उन्होंने सीएम आवास खाली कर चाबी दे दी थी। इसके बाद पीडब्ल्यूडी ने मुख्यमंत्री आतिशी को चाबी दी और उन्होंने अपना सामान रखा।

सांसद संजय सिंह ने कहा कि तत्कालीन मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने पद से इस्तीफा देने के बाद मुख्यमंत्री आवास को खाली कर दिया था। भाजपा के लोग कह रहे हैं कि केजरीवाल ने घर खाली नहीं किया है और चाबी नहीं दी है। संजय सिंह ने मीडिया के समक्ष घर खाली करने की जीएडी के पत्र को दिखाते हुए कहा कि इसमें जीएडी साफ लिख रहा है कि 4 अक्टूबर को केजरीवाल ने सरकारी आवास को खाली कर दिया। उन पर बिजली, पानी, गैस समेत अन्य कोई देनदारी भी शेष नहीं है। इसके बाद रविवार को मुख्यमंत्री आतिशी को आवास की चाबी सौंप दी गई और उन्होंने आवास में अपना सामना रखवा दिया। आतिशी ने कैंप कार्यालय में बैठक भी कर ली। इसके बावजूद एलजी द्वारा जबरन दादागिरी की जा रही है। उन्होंने जबरन सामान बाहर फेंकवा कर आवास खाली करा दिया।

वारदात में इस्तेमाल बाइक समेत बदमाश गिरफ्तार

नई दिल्ली। शाहदरा जिले के स्पेशल स्टाफ ने कृष्णा नगर इलाके में लूट के एक मामले में बदमाश को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने इसके पास से वारदात में इस्तेमाल एक मोटरसाइकिल भी बरामद कर ली है। पुलिस उपायुक्त प्रशांत गौतम ने बताया कि आरोपी की पहचान न्यू कर्दमपुरी निवासी 25 वर्षीय नदीम उर्फ फुरकान उर्फ बोंटा के रूप में हुई है। इस पर लूट और झपटमारी के कुल 12 मामले दर्ज हैं। पुलिस के मुताबिक, गत 27 सितंबर को पुलिस को कृष्णा नगर इलाके में लूट की शिकायत मिली थी। शिकायतकर्ता कुलदीप सिंह ने बताया कि 26 सितंबर को रात करीब 10 बजे वह अपने भाई मंदीप सिंह के साथ बाइक से घर लौट रहे थे। इसी दौरान एक बाइक पर सवार दो युवक पीछे से आए और पीछे बैठे युवक ने पीड़ित के गले से सोने की चेन झपट ली। इसके बाद पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया।

त्योहार पर स्पेशल वंदेभारत और तेजस चलाने की घोषणा

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

त्योहारों के अवसर पर ज्यादा यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुंचाने के लिए उत्तर रेलवे ने तेज रफ्तार रेलगाड़ियां चलाने की घोषणा की है। बिहार के लिए वंदेभारत और तेजस जैसी स्पेशल गाड़ियों को चलाया जाएगा। दोनों दिशाओं में ये कुल 16 फेरे लगाएंगीं। उत्तर रेलवे के मुख्य प्रवक्ता हिमांशु शेखर उपाध्याय के अनुसार, गाड़ी संख्या 02248/02247 तेजस सुपरफास्ट एक्सप्रेस का परिचालन नई दिल्ली से पटना जंक्शन के बीच किया जाएगा। गाड़ी संख्या 02248 नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से 29, 21 अक्तूबर 2 और 5 नवंबर को पटना के लिए चलेगी। गाड़ी संख्या 02247 पटना जंक्शन से 30 अक्तूबर, 1, 3 और 6 नवंबर को चलेगी। इसमें चेयर कार एवं एग्जीक्यूटिव चेयर कार सीट उपलब्ध होंगी। दोनों दिशाओं में यह गाड़ी कानपुर सेंट्रल, प्रयागराज जंक्शन, दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, बक्सर और आरा जंक्शन पर रुकेगी। यात्रियों के लिए नई दिल्ली से पटना के बीच एक वंदेभारत एक्सप्रेस का भी परिचालन त्योहार स्पेशल के रूप में किया जाएगा। गाड़ी संख्या 02252/02251 नई दिल्ली-पटना जंक्शन-नई दिल्ली के बीच कुल आठ फेरे लगाएगी। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से गाड़ी संख्या 02252 आगामी 30 अक्तूबर, 1,3 और 6 नवंबर को पटना के लिए रवाना होगी। वहीं, गाड़ी संख्या 02251 पटना जंक्शन से 31 अक्तूबर, 2, 4 और 7 नवंबर को नई दिल्ली के लिए रवाना होगी। दोनों दिशाओं में यह सफर 11.30 घंटे के भीतर पूरा किया जाएगा।

कृत्रिम बारिश के लिए बैठक बुलाए केंद्र : गोपाल राय

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार ने सर्दी में होने वाले प्रदूषण से निपटने के लिए केंद्र सरकार से एक बार फिर कृत्रिम बारिश का प्रस्ताव दिया है। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने राजधानी में प्रदूषण नियंत्रण के आपातकालीन उपायों के तहत कृत्रिम बारिश कराने के लिए सभी विभागों की बैठक बुलाने की मांग केंद्र से की है। केंद्रीय पर्यावरण मंत्री को लिखे पत्र में उन्होंने कहा है कि नवंबर आने में अब कुछ दिन रह गए हैं। इसलिए सभी आवश्यक तैयारियां करनी चाहिए। गोपाल राय ने इससे पहले 30 अगस्त को भी केंद्रीय पर्यावरण मंत्री पत्र लिखकर कृत्रिम बारिश के लिए विभागों के साथ बैठक कराने की मांग की थी। गुरुवार को लिखे पत्र में राय ने कहा कि दिल्ली में नवंबर की शुरूआत से प्रदूषण की स्थिति घातक स्तर तक पहुंच सकती है। पिछले साल दिल्ली सरकार ने प्रदूषण का स्तर बहुत घातक होने पर कृत्रिम बारिश का प्रस्ताव किया था। आईआईटी कानपुर की ओर से इस संबंध में एक विस्तृत प्रस्तुतिकरण दिया गया था, जिसमें बताया गया था कि दिल्ली में कैसे कृत्रिम बारिश को संभव किया जा सकता है। उसी प्रस्तुतिकरण से यह बात भी सामने आई कि कृत्रिम बारिश के लिए केंद्र सरकार के कई विभागों से पहले अनुमति लेनी आवश्यक होगी। गोपाल राय ने कहा कि अगस्त में लिखे गए पत्र में वे प्रस्तुतिकरण भी भेज चुके हैं। इसलिए अब इस पर जल्द से जल्द फैसला लेना चाहिए, क्योंकि इसमें पहले ही एक महीने से ज्यादा की देर हो गई है। उन्होंने केंद्रीय पर्यावरण मंत्री से आग्रह किया है कि कृत्रिम बारिश को लेकर सभी संबंधित विभागों के साथ जल्द बैठक बुलाई जाए। इसमें घातक प्रदूषण की रोकथाम के लिए आपातकालीन उपायों के तहत दिल्ली में कृत्रिम बारिश पर फोकस किया जाए।

ड्रग्स की सप्लाई करने वाले दो तस्कर गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने दिल्ली-एनसीआर में ड्रग्स सप्लाई करने वाले दो तस्करों को गिरफ्तार किया है। लक्ष्मी नगर से गिरफ्तार आरोपियों में अजय बाबू लाल और मुकेश शामिल हैं। इनके कब्जे से करीब 12 लाख की ड्रग्स बरामद हुई है। पुलिस अब आरोपियों के नेटवर्क से जुड़े अन्य तस्करों का पता करने की कोशिश कर रही है। आरोपियों में से अजय नेपाली लोगों से ठगी के मामले में वर्ष 2005 से 2014 तक नेपाल की जेल में भी रह चुका है। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि उनकी टीम को तस्कर अजय बाबू लाल के बारे में लक्ष्मी नगर आने की जानकारी मिली। इसके बाद पुलिस ने विकास मार्ग, लक्ष्मी नगर मेट्रो स्टेशन के पास घेराबंदी करके आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। फिर उसकी निशानदेही पर उसके सहयोगी मुकेश को भी गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में आरोपी अजय बाबू लाल ने बताया कि वह मुकेश से हेरोइन खरीदता था और आगे दिल्ली और एनसीआर के इलाकों में सप्लाई करता था।

लेडी श्री राम कॉलेज ने ओलंपियन मनु भाकर और माहेश्वरी चौहान को किया सम्मानित

नई दिल्ली। पेरिस ओलंपिक 2024 में शानदार प्रदर्शन के लिए लेडी श्री राम कॉलेज फॉर विमेन ने ओलंपियन मनु भाकर और माहेश्वरी चौहान को बृहस्पतिवार को सम्मानित किया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के कॉलेज ने उनकी उपलब्धियों और भारतीय खेलों में उनके योगदान का जश्न मनाने के लिए एक विशेष समारोह का आयोजन किया।

लेडी श्री राम कॉलेज फॉर विमेन से साल 2012 में राजनीति विज्ञान (ऑनर्स) की डिग्री पूरी करने वाली भाकर ओलंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला निशानेबाज और एक ही ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी हैं।

लेडी श्री राम कॉलेज फॉर विमेन से साल 2017 में दर्शनशास्त्र (ऑनर्स) में स्नातक करने वाली चौहान ने ओलंपिक खेल में भाग लेने वाली पहली भारतीय महिला स्कीट शूटर के तौर पर देश को गौरवान्वित किया, हालांकि वह कांस्य पदक हासिल करने से चूक गईं।

लेडी श्री राम कॉलेज की वर्तमान तृतीय वर्ष की छात्रा और निशानेबाज रिदम सांगवान को पेरिस ओलंपिक में उनके प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया जाना था। ओलंपिक खेल में वह टीम स्पर्धा में 10वें और एयर पिस्टल स्पर्धा में अकेल खेलकर 15वें स्थान पर रही थीं। हालांकि वह समारोह में आ नहीं पाईं। कॉलेज ने मनु के कोच जसपाल राणा को भी सम्मानित किया।

दिल्ली सरकार पर बीजेपी हमलावर, आप को घाटे का बजट और सीएम आवास पर घेरा

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है कि गत दस साल से दिल्ली वाले अरविंद केजरीवाल के बड़े बड़े फरेबी दावों के बीच यह दावा सुन रहे हैं कि हमारी सरकार का बजट सरप्लस बजट है। इसी कथन की आड़ में यह दुनिया भर की नई योजनाएं बिना नए आर्थिक संसाधनों को ला रहे हैं। 10 साल के आर्थिक मिस मैनेजमेंट का नतीजा है कि जिस आज चालू योजनाओं की पूर्ति के लिए पैसा नहीं है। उन्होंने कहा कि केजरीवाल के 10 साल के आर्थिक मिस मैनेजमेंट का परिणाम है कि 2023-24 में फिसली आर्थिक स्थिति के चलते अब 2024-25 का बजट दिल्ली के विधायी इतिहास का पहला घाटे का बजट बन चुका है। सरकार के पास 2024-25 की बजट योजनाओं को पूरा करने के भी लिक्विड फंड नहीं है और वित्तीय स्थिति इतनी खराब है कि शायद दिसम्बर 2024 से दिल्ली सरकार अपने कर्मचारियों का वेतन भी नहीं दे पाएगी।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है कि अक्सर बजट घाटा तब होता है जब रेवेन्यू खर्च के मुकाबले कम हो, पर दिल्ली सरकार का रेवेन्यू साल दर साल बढ़ रहा है। बढ़ते रेवेन्यू के बावजूद केजरीवाल सरकार के बजट के घाटे में जाने का मूल कारण है बिना आर्थिक संसाधन जुटाए योजनाएं लागू कर देना।

सरकार के पास वेतन देने तक के पैसे नहीं: उन्होंने कहा कि आज दिल्ली को पावर सब्सिडी, ट्रांसपोर्ट विभाग, सिंचाई विभाग, निमार्णाधीन अस्पतालों, मेट्रो, न्यायालय परिसर एवं न्यायालय वेतन खर्च वृद्धि आदि तक के लिए 7000 करोड़ रुपए चाहिए, पर दिल्ली सरकार के पास पैसा तक नहीं है। केन्द्र सरकार के साथ मिलकर जो योजनाएं लागू होनी होती है उसका भी दिल्ली सरकार अपना हिस्सा टाइम पर नहीं देती है। इस कारण वह रूक गई हैं। केजरीवाल और अतिशी को झूठ की मशीनह्व: वहीं, दिल्ली प्रदेश भाजपा मंत्री हरीश खुराना ने आम आदमी पार्टी (आप) और उसके नेताओं पर तीखा हमला बोलते हुए एक वीडियो जारी किया। वीडियो में उन्होंने अरविंद केजरीवाल और मुख्यमंत्री अतिशी को झूठ की मशीनह्व बताया। खुराना ने आप सरकार की नीतियों और प्रशासनिक कार्यशैली पर सवाल उठाए।

उन्होंने कहा कि दिल्ली राज्य पूर्ण राज्य नहीं है, बल्कि केंद्र शासित प्रदेश है। इसलिए यहां मुख्यमंत्री निवास का कोई स्थायी स्थान नहीं होता। खुराना ने अपने पिता स्वर्गीय मदन लाल खुराना के मुख्यमंत्री कार्यकाल का जिक्र करते हुए कहा कि 1993 में जब उनके पिता मुख्यमंत्री बने थे, तब उनके परिवार ने 33 श्यामनाथ मार्ग पर निवास करता था। इसके बाद उन्होंने कहा कि जब स्वर्गीय साहिब सिंह वर्मा मुख्यमंत्री बने, तो उन्होंने 9 श्यामनाथ मार्ग को मुख्यमंत्री आवास के रूप में चुना। इस प्रकार हर मुख्यमंत्री अपने कार्यकाल के दौरान अलग-अलग निवासों में रहे हैं। खुराना ने शीला दीक्षित के मुख्यमंत्री कार्यकाल का उल्लेख करते हुए कहा कि जब वे मुख्यमंत्री बनीं, तो उन्होंने एबी-17 निवास में छह वर्षों तक शासन किया, जो अब मौजूदा अतिशी का निवास है। स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर को नहीं मान रही आप सरकार: खुराना ने कहा कि शीला दीक्षित के कार्यकाल के बाद वह मोतीलाल नेहरू पार्क के एक आवास में शिफ्ट हो गई थीं, जो अब पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का निवास स्थान है। हरीश खुराना ने आम आदमी पार्टी की सरकार पर अपनी विफलताओं को छिपाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि आप सरकार एसओपी (स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर) और आवश्यक प्रक्रियाओं का पालन नहीं कर रही है, जो प्रशासनिक व्यवस्था का हिस्सा हैं।

रेलगाड़ियों में कंफर्म टिकट नहीं, विमान का ढाई गुना बढ़ा किराया

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिवाली और छठ पर सरकार की ओर से किए गए बंदोबस्त के बावजूद लोगों के लिए घर जाना आसान नहीं लग रहा है। एक तरफ जहां रेलगाड़ियों की घोषणा के साथ ही तुरंत टिकट की बुकिंग हो रही है वहीं, विमानन कंपनियों ने इस अवधि के दौरान किराया दो से ढाई गुना तक बढ़ा दिया है। खासतौर से पटना, दरभंगा, रांची और बनारस जाने वाले विमानों के किराए में काफी वृद्धि देखने को मिल रही है। जानकारी के अनुसार दिवाली एवं छठ के अवसर पर दिल्ली से लाखों की संख्या में लोग पूर्व की तरफ सफर करते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए लोगों ने 120 दिन पहले ही रोजाना चलने वाली गाड़ियों में अपनी टिकट बुक करा ली थी। प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी रेलवे द्वारा विशेष रेलगाड़ियों का परिचालन किया जा रहा है। अभी तक विशेष रेलगाड़ियों के माध्यम से दो महीने में लगभग तीन हजार फेरे लगाने की घोषणा हो चुकी है। इसके माध्यम से लगभग 60 लाख अतिरिक्त सीट केवल उत्तर रेलवे द्वारा उपलब्ध कराई जा रही है। त्योहारों पर घर जाने वाले सबसे अधिक यात्रियों की भीड़ 27 अक्तूबर से पांच नवंबर तक होने वाली है। ऐसे में रेलवे द्वारा नई गाड़ी की घोषणा के बाद जैसे ही बुकिंग खुलती है, लोग तुरंत टिकट बुक कर लेते हैं।

दो से ढाई गुना बढ़ा किराया

विमानन कंपनियों ने 30 अक्तूबर से पांच नवंबर तक पूर्व दिशा में जाने वाले विमानों का किराया दो से ढाई गुना तक बढ़ा दिया है। दरभंगा जाने के लिए औसतन जहां छह हजार रुपये लगते थे वहीं, इस अवधि में 13 से 16 हजार रुपये लग रहे हैं। पटना के लिए तो विमान का किराया 15 हजार से भी ज्यादा पहुंच गया है।

अतिरिक्त रेलगाड़ियां चलाई जाएंगी

रेलवे अधिकारियों के अनुसार 27 अक्तूबर के बाद की स्थिति को ध्यान में रखते हुए कई अन्य विशेष रेलगाड़ियों का परिचालन किया जाएगा। इसमें कई अनारक्षित गाड़ियां भी शामिल होंगी। रेलवे द्वारा यह प्रयास किया जा रहा है कि मांग के अनुसार अतिरिक्त गाड़ियों की घोषणा की जाए। स्टेशन पर भी रेलवे द्वारा यात्रियों के लिए विशेष प्रबंध किए जाएंगे।

उत्तर रेलवे

निविदा सूचना

इलेक्ट्रोनिक निविदा ई प्रणाली के अंतर्गत आपूर्ति हेतु निविदा आमंत्रण

भारत के राष्ट्रपति की ओर से मुख्य सामग्री प्रबंधक, उत्तर रेलवे, नई दिल्ली–110001 द्वारा इच्छुक फर्मों से निम्नलिखित मदों के लिए ई–निविदा आमंत्रित की जाती है:–

क्र. सं.	निविदा संख्या	संक्षिप्त विवरण	मात्रा	अंतिम तिथि
01	04230077A	इंजन क्रैंक केस ऑयल फॉर क्युमिनस इंजन	126000 लीटर	04.11.2024
02	07240128	गाइड बुश, फॉर एक्सल बॉक्स गाइड	75632 नग	04.11.2024
03	07240453	ओवरहालिंग किट फॉर ब्रेक सिलिंडर्स	275 सेट	04.11.2024
04	19240809	सेट ऑफ लबीरिंथ रिंग एंड बेअरिंग कैप	829 सेट	04.11.2024
05	09242437A	बोल्स्टर स्प्रिंग आउटर फॉर बी एल सी वैगन	10837 नग	06.11.2024
06	77249025 RGC	रनिंग कॉन्ट्रैक्ट फॉर मशीन चेक रेल 7.5 एम लॉन्ग, 52 किलोग्राम (टी–4215)	2000 सेट	07.11.2024
07	77246380	एच वी एन लाइनर (टी–3706)	856170 नग	08.11.2024
08	77246383	एच वी एन लाइनर (टी–6938 एंड 6939)	102100 पेअर	08.11.2024
09	77249049 RGC	रनिंग कॉन्ट्रैक्ट ऑफ प्री – स्ट्रेस्ड मोनो – ब्लॉक कंक्रीट स्लीपर्स स्पेशल टाइप्स (टी–4089–4097)	5000 सेट	25.11.2024
10	77249028 RGC	रनिंग कॉन्ट्रैक्ट फॉर चेक रेल्स टू आर डी एस ओ ड्राइंग नं. टी–4018	700 सेट	11.12.2024
11	77249061 RGC	रनिंग कॉन्ट्रैक्ट फॉर फिटिंग्स ऑफ कर्वड़ स्वीट्चेस 1 इन 8.5, 60 किलोग्राम (टी–6068)	500 सेट	17.12.2024

निविदा शर्तें 1. विस्तृत जानकारी IREPS वेबसाइट यानि www.ireps.gov.in पर देखी जा सकती है। 2. मैनुअल निविदा स्वीकृत नहीं की जाएगी।

टेंडर नोटिस सं. 60/2024-25 दिनांक : 09.10.2024 3118/2024

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें
पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें

@Pratahkiran
www.pratahkiran.com

मंत्री श्री सौरभ भारद्वाज ने दिल्ली पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित हेरिटेज वॉक फेस्टिवल का शुभारंभ किया

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली के पर्यटन मंत्री श्री सौरभ भारद्वाज ने आज दिल्ली पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित हेरिटेज वॉक फेस्टिवल का शुभारंभ किया कइस हेरिटेज वॉक फेस्टिवल की शुरूआत आज म्युटिनी मेमोरियल कमला नेहरू रिज सिविल लाइंस से की गई कयह कार्यक्रम 10 अक्टूबर से लेकर 31 दिसंबर 2024 तक चलेगा कइस कार्यक्रम के तहत दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में स्थित 100 अलग-अलग ऐतिहासिक विरासतों का भ्रमण किया जाएगा कहर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिल्ली पर्यटन विभाग द्वारा इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया है क कार्यक्रम के माध्यम से दिल्ली पर्यटन विभाग की कोशिश रहती है, कि दिल्ली की सैकड़ों वर्ष पुरानी विरासतों का इतिहास दिल्ली, देश और विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया जाए और पर्यटकों के लिए दिल्ली को आकर्षण का एक मुख्य केंद्र बनाया जाए

हेरिटेज वॉक फेस्टिवल की शुरूआत आज कमला नेहरू रिज सिविल लाइंस में स्थित म्युटिनी मेमोरियल से की गई कइस मेमोरियल का निर्माण 1857 के दौरान आजादी की लड़ाई के समय अंग्रेजों द्वारा कराया गया था कअंग्रेज सरकार ने लड़ाई में मृत हुए अंग्रेज अधिकारियों और उनके सहयोगियों की याद में यह मेमोरियल बनवाया था कयह मेमोरियल केवल अंग्रेजी अफसर और उनके सहयोगियों की मृत्यु का प्रतीक नहीं है, बल्कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम के जय घोष का भी प्रतीक है कयह प्रतीक है इस बात का, कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में शामिल स्वतंत्रता सेनानियों ने किस प्रकार से अंग्रेजी हुकूमत की जड़ें हिला कर रख दी थी

दिल्ली पर्यटन विभाग का यह कार्यक्रम हेरिटेज वॉक फेस्टिवल 10 अक्टूबर से लेकर 31 दिसंबर 2024 तक चलेगा कइस दौरान लगभग दिल्ली की 100 अलग-अलग विरासतों का भ्रमण किया जाएगा लगभग 80 दिवसीय इस कार्यक्रम के दौरान 100 अलग-अलग विरासतों का छिपा हुआ इतिहास जिससे कि हमारी युवा पीढ़ी लगभग अनभिज्ञ है, उसकी जानकारी दिल्ली की जनता तक और युवा पीढ़ी तक पहुंचने का काम किया जाएगा कदिल्ली सरकार के पर्यटन विभाग की लगातार यह कोशिश है, कि दिल्ली में छिपी हुई ऐतिहासिक विरासतों को, उसके इतिहास को दिल्ली और देश की जनता के समक्ष लाया जाए और सैकड़ो वर्ष पुराने इस इतिहास से अपनी युवा पीढ़ी को अवगत कराया जाए कताकि आगे चलकर हमारी युवा पीढ़ी हमारे पुरखों की इन धरोहरों को संभाल कर रख सके और सदियों सदियों तक हमारे पुरखों का इतिहास जीवित रहे कइस हेरिटेज वॉक फेस्टिवल में सामान्य जनसाधारण भी भाग ले सकता है जिसके लिए विभाग द्वारा एक न्यूनतम सा शुल्क टिकट के रूप में तय किया जाता है कयह शुल्क देकर कोई भी सामान्य जनसाधारण इस हेरिटेज वॉक का हिस्सा बन सकता है और दिल्ली की इन विरासतों का भ्रमण पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के माध्यम से कर सकता है

हेरिटेज वॉक के दौरान मंत्री सौरभ भारद्वाज ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा, कि दिल्ली में सैकड़ो ऐसी विरासतें छिपी हुई है, जिसकी जानकारी दिल्ली की जनता को और हमारे युवा पीढ़ी को नहीं है कउन्होंने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों द्वारा दिल्ली पर्यटन विभाग की यह कोशिश रहती है, कि दिल्ली की ऐसी अनमोल धरोहरों का इतिहास दिल्ली और देश की जनता के समक्ष रखा जाए, ताकि दिल्ली न केवल देश में अपितु पूरी दुनिया में आकर्षण का एक मुख्य केंद्र बने और भिन्न-भिन्न राज्यों से एवं विदेशों से आने वाले सैलानियों की रुचि दिल्ली में और अधिक बढ़े क उन्होंने कहा कि यह विरासत दिल्ली के सैकड़ो वर्ष पुराने इतिहास का प्रतीक हैं कयह बहुत ही अनमोल है और इनकी देखरेख करना एवं इनके इतिहास को जन-जन तक पहुंचाना दिल्ली पर्यटन विभाग की कोशिश है कउन्होंने कहा कि समय-समय पर दिल्ली पर्यटन विभाग द्वारा इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहा है कइसी श्रृंखला में इस वर्ष भी इस 80 दिवसीय हेरिटेज वॉक फेस्टिवल का आयोजन किया गया है और भविष्य में भी इस प्रकार के कार्यक्रम दिल्ली पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित किए जाते रहेंगे

बच्चों अपनी आंखों से प्यार करो स्लोगन के साथ पार्क में पहुंची डॉक्टर

- विश्व दृष्टि दिवस पर डिस्ट्रिक्ट पार्क में जागरूकता वॉक
- लोगों से मिलकर किया उन्हें आंखों को लेकर जागरूक
- मोबाइल के ज्यादा इस्तेमाल से बढ़ रही आंखों की समस्या

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

आज गुरुवार को विश्व दृष्टि दिवस मनाया जा रहा है। इस अवसर पर पश्चिमी दिल्ली के जनकपुरी डिस्ट्रिक्ट पार्क में सुबह सुबह डॉक्टरों की टीम पहुंच गई। पार्क में घूम घूमकर लोगों को जागरूक किया गया। इस अवसर पर डॉ. एन के गुप्ता ने बताया की आजकल के खराब लाइफस्टाइल के कारण न केवल स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ रही हैं, बल्कि लोगों के देखने की क्षमता पर भी इसका असर पड़ रहा है। इसके पीछे स्मार्ट फोन के इस्तेमाल को भी एक बड़ी वजह माना जाता है। डॉक्टर जे एस भल्ला ने कहा की आज के समय में युवा आंखों की समस्या से सबसे ज्यादा पीड़ित हैं। हर साल 10 अक्टूबर को विश्व दृष्टि दिवस दुनियाभर में मनाया जाता है। इस दिवस को मनाकर दृष्टि से जुड़ी समस्याओं के प्रति लोगों को जागरूक किया जाता है। डॉक्टर अलका गुप्ता ने कहा की लोगों को अपनी दिन प्रतिदिन खराब हो रही लाइफस्टाइल को ठीक करना चाहिए। क्योंकि जब स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ जाती है, तो उसके बाद उसे रिकवर करने में ज्यादा परेशानी होती है। इससे बेहतर है, पहले से ही सतर्क होना। स्मार्टफोन के लगातार इस्तेमाल से लोगों में दृष्टि से संबंधित समस्याओं उत्पन्न होने लगती है। दिल्ली मेडिकल एसोसिएशन के प्रेसिडेंट डॉ. आलोक भंडारी ने कहा की जितना जरूरी हो उतना ही मोबाइल का इस्तेमाल करें। बेवजह ज्यादा से ज्यादा मोबाइल के साथ बने रहना अपनी आंखों को बीमारी की तरफ धकेलना है।

हेल्थ एक्सपर्ट डॉ. समीर भाटी ने बताया की इस वर्ष का थीम है, बच्चों अपनी आंखों से प्यार करो। बच्चे सबसे ज्यादा मोबाइल का इस्तेमाल आजकल कर रहे हैं। वे आंखों की बीमारी की चपेट में आ रहे हैं। इस अवसर पर चाइल्ड स्पेशलिस्ट डॉ. रमेश दत्ता सहित काफी संख्या में और भी डॉक्टर जागरूकता मॉर्निंग वॉक में शामिल रहे। अलग अलग स्लोगन लिखे पोस्टर हाथ में लिए लोगों को जागरूक करते रहे। पश्चिमी दिल्ली का सबसे बड़ा पार्क है जनकपुरी का डिस्ट्रिक पार्क। यहां सैकड़ों की संख्या में लोग मॉर्निंग वाक पर आते हैं। इसलिए डॉक्टरों ने उन्हें जागरूक करने के लिए सुबह का समय चुना।

घरों में सेंधमारी करने वाला दबोचा

- 75 हजार कैश, 4 मोबाइल बरामद

संवाददाता

ख्याला थाना के रघुवीर नगर पुलिस चौकी की टीम ने एक शातिर सेंधमार को गिरफ्तार किया है। जिसकी पहचान देव उर्फ जुड़ी के रूप में हुई है। यह पहले से सात मामलों में शामिल रहा है। इसके पास से 75 हजार कैश और चार मोबाइल के अलावा एक ब्रीफकेस और डॉक्यूमेंट इत्यादि बरामद किया गया है। डीसीपी विचित्र वीर ने बताया कि 4 अक्टूबर को ख्याला इलाके में घर में चोरी की वारदात हुई थी। उस मामले की शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने छानबीन शुरू की।

एसीपी सुरेंद्र सिंह राठी की देखरेख में चौकी इंचार्ज सुदीप पूनिया की टीम ने सीसीटीवी फुटेज की मदद से पता लगाना शुरू किया। लगभग दो दर्जन सीसीटीवी फुटेज चेक करने के बाद इस शातिर सेंधमार के बारे में पुलिस पता लगाने में कामयाब हो गई। फिर इसके बारे में जानकारी इकट्ठा करके इसे पकड़ा गया। इसके पास से कैश, मोबाइल, ब्रीफकेस इत्यादि बरामद किए गए। आगे की कार्रवाई की जा रही है।

नारकोटिक्स स्क्वाड ने हेरोइन तस्कर महिला को पकड़ा

संवाददाता

पश्चिमी जिला के एंटी नारकोटिक्स स्क्वाड की टीम में हेरोइन की तस्करी के मामले में एक आरोपी महिला को गिरफ्तार किया है। इसके पास से 126 ग्राम फाइन क्वालिटी की हेरोइन बरामद की गई है। इस महिला के बारे में एक इनफॉरमेशन पुलिस टीम को मिली थी। जिसके आधार पर इंस्पेक्टर अनुज कुमार की देखरेख में पुलिस टीम ने इंद्रपुरी इलाके में पता लगाकर छापा मारा और इस महिला को जेजे कॉलोनी से गिरफ्तार किया। उसके पास से हेरोइन बरामद की गई। पुलिस ने इंद्रपुरी थाने में महिला के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया।

नारायणा के कार शो रूम से फिर मांगी गई रंगदारी

संवाददाता

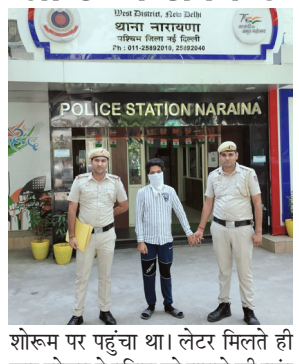

- AATS की पुलिस टीम ने 24 घंटे में बदमाश को दबोचा
- इसी शो रूम पर फायरिंग कर मांगी थी 5 करोड़ की रंगदारी
- उसमें क्राइम ब्रांच/ स्पेशल सेल ने कई को किया गिरफ्तार

नारायणा थाना इलाके के कार शोरूम को धमकी देकर लाखों की रंगदारी मांगने के मामले ने एक बार फिर सनसनी फैला दी। लेकिन इस मामले की जानकारी मिलते ही पश्चिमी जिला के अअळर की टीम ने टेक्निकल जांच की मदद से 24 घंटे के अंदर पता लगा करके रंगदारी मांगने वाले बदमाश को गिरफ्तार कर लिया। जिसकी पहचान करण ढींगरा के रूप में हुई है, यह रानी बाग के ऋषि नगर का रहने वाला है। पहले से एक्सटॉर्शन सहित आधा दर्जन मामलों में शामिल रहा है। डीसीपी विचित्र वीर ने बताया की हैंड रिटेन एक लेटर जिस पर रंगदारी की धमकी लिखी हुई थी, वह कार स्ट्रीट शोरूम पर पहुंचा था। लेटर मिलते ही कार शोरूम ने पुलिस को मामले की तुरंत सूचना दी। इस मामले में एसीपी ऑपरेशन अरविंद कुमार की देखरेख में इंस्पेक्टर मनीष चौधरी की टीम को जांच के लिए लगाया गया। और टेक्निकल सर्विलांस की मदद से इस बदमाश को दबोचा गया। गौरतलब है की इसी कार शोरूम पर कुछ समय पहले विदेश से बैठे गैंगस्टर ने 15 राउंड फायरिंग करवा करके 5 करोड़ की रंगदारी मांगकर दिल्ली में सनसनी फैला दी थी। जिसमें क्राइम ब्रांच और स्पेशल सेल की टीम ने अलग-अलग जगह पर कार्रवाई करते हुए मुठभेड़ में कई बदमाशों को गिरफ्तार किया था।

अक्षय कुमार वध लंका हुई दहन

प्रात : किरण संवाददाता

धार्मिक लीला कमेटी लाल किला मैदान में लंका दहन का दृश्य बड़ी भव्यता के साथ दिखाया गया जिसमे मुख्य अथिति रॉबर्ट वड्रा,कपिल खन्ना अध्यक्ष- विश्व हिंदु परिषद,इंद्रेश कुमार (फरर),सैयद शाहनवाज हुसैन(बीजेपी नेता), हरहा शर्मा ,चिंटू लीडर पुरानी दिल्ली ,विंदू दारा सिंह,भारतीय अभिनेता, शिल्पा रायजादा,भारतीय अभिनेत्री,शहबाज खान,अभिनेता और 06 अक्टूबर2024 को कवि सम्मेलन ,12 अक्टूबर को दशहरा है और 13 अक्टूबर को विशेष आतिशबाजी के साथ भरत मिलाप है और 14 अक्टूबर को रामजी भव्य यात्रा है।

भारत के वर्तमान राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी और भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी और विभिन्न देशों के कई राजदूतों और राजनयिकों को रामलीला के लिए आमंत्रित किया गया।

इस वर्ष रामलीला के 101 वर्ष हैं और इस वर्ष हम उन सभी को सम्मानित कर रहे हैं जो सामाजिक गतिविधि कर रहे हैं विकास, अनाथालय, महिला सशक्तिकरण, वृद्धावस्था देखभाल, शिक्षा और शिक्षित भारत संरक्षित भारत, लैंगिक समानता, स्वच्छता और स्वच्छ भारत और सुरक्षित वातावरण. जो लोग अच्छा काम कर रहे हैं उन्हें सम्मानित किया जाएगा ताकि समाज के लिए सभी की भलाई के लिए प्रेरित किया जा सके और श्री राम जी के सिद्धांतों का भी पालन किया जा सके।

श्री धार्मिक लीला कमिटी (रजि.), लाल किला मैदान के सभी सदस्यों आमंत्रित हैं और अपना समय रामलीला के लिए समर्पित किया और निम्नलिखित नाम हैं: धीरज धर गुप्ता, सुरेश गोयल,प्रदीप सरन,महेश गुप्ता,राकेश गुप्ता,रजत गुप्ता,अतुल गुप्ता,कमल कांत जैन,सतीश गर्ग,ब्रहम सोनी,मनीष गुप्ता,सुनील गुप्ता,मोहम्मद उस्मान,राजेश गुप्ता,सुशील जैन,ब्रहम सोनी,ओम किशन गुप्ता,अभिषेक गोयल,सोनल गुप्ता,शिवम गुप्ता,विकास गुप्ता, विनय शर्मा,चमन शर्मा ,उत्सव शर्मा।

आकाश में 180 फुट उडते हनुमान जी ने किया सोने की लंका का दहन

नई दिल्ली।(जीतेन्द्र शर्मा)

लालकिला मैदान में आयोजित ख्याति प्राप्त लव कुश रामलीला कमेटी के अध्यक्ष अर्जुन कुमार बताया आज अनेक राजदूत व विदेशी राजनयिको ने लीला स्थल पर प्रभु श्री राम की लीला का अवलोकन किया तथा प्रभु श्री रामचन्द्र जी की वंदना की और आशीर्वाद लिया।

लीला के अध्यक्ष अर्जुन कुमार के अनुसार आज शबरी से भेंट, वन मार्ग में राम-हनुमान मिलन, पर्वत पर राम-सुग्रीव मित्रता, बालि भवन में बालि सुग्रीव संवाद व युद्ध, घायल बालि की इच्छापूर्ण कर राम द्वारा मोक्ष प्रदान करना, सुग्रीव का राज तिलक व राम वियोग, लक्ष्मण को सुग्रीव के पास भेजना, सुग्रीव की क्षमा-याचना व वानर सेना को सीता जी का पता लगाने का आदेश, हनुमान जी द्वारा समुद्र लांघना व अशोक वाटिका में सीता माता से मिलन, रावण द्वारा अक्षय कुमार को अशोक वाटिका भेजना, अक्षय कुमार वध, मेघनाद को अशोक वाटिका भेजना व मेघनाद द्वारा हनुमान जी को ब्रहमपाश में बांधना, रावण-हनुमान संवाद, सोने की लंका का दहन तक की लीला का मंचन हुआ।

लीला पश्चात कमेटी के महासचिव सुभाष गोयल, चैयरमैन पवन गुप्ता, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सत्यभूषण जैन, सौरव गुप्ता, संदीप भूटानी, कोषाध्यक्ष अंकुर गोयल, लीला मंत्री प्रवीण सिंहल, गौरव सूरी, लोकेश बंसल देवेंद्र चौधरी, अशोक कटारिया आदि सभी पदाधिकारियों ने आये हुए सभी अतिथियों का सम्मान किया और प्रभु श्रीराम की आरती एवं चरण वंदना के साथ लीला सम्पन्न हुई ।

अजय देवगन रोहित शेट्टी एवं करीना कपूर करेंगी रावण का दहन

प्रात : किरण संवाददाता

नई दिल्ली। लाल किला स्थित लव कुश रामलीला में इस बार 12 अक्टूबर को रावण दहन के लिए *सिंघम अगेन के कलाकारों को आमंत्रित किया गया है यह जानकारी देते हुए लव कुश रामलीला के अध्यक्ष अर्जुन कुमार ने बताया कि हमने इस बार बुराई पर सच्चाई की जीत के लिए सिंघम अगेन के कलाकारों को आमंत्रित किया है जिसमें *अजय देवगन, रोहित शेट्टी एवं करीना कपूर ने अपनी सहमति प्रदान कर दी है यह लोग 12 अक्टूबर को लव कुश रामलीला में रावण का वध करेंगे और बुराइयों पर अच्छाई की जीत को स्थापित करेंगे

टा हमेशा प्रेरणास्रोत बने रहेंगे: दिल्ली के उपराज्यपाल और मुख्यमंत्री ने उनके निधन पर शोक जताया

नई दिल्ली। दिल्ली के उपराज्पाल वी.के सक्सेना, मुख्यमंत्री आतिशी और आम आदमी पार्टी (आप) के सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल ने उद्योगपति रतन टाटा को बृहस्पतिवार को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करेगी और उनकी सादगी, करुणा, काम के प्रति उनकी विनम्रता एवं जुनून को हमेशा याद रखा जाएगा। टाटा समूह के पूर्व अध्यक्ष रतन नवल टाटा का बुधवार रात 11.30 बजे दक्षिण मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में निधन हो गया था। वह 86 वर्ष के थे। ह्यआपह्न के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि भारत ने अपना सच्चा रत्न खो दिया, जिन्होंने असंभव को संभव बना दिया था। केजरीवाल ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि रतन टाटा की विरासत आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी। उपराज्यपाल सक्सेना ने एक पोस्ट में कहा, रतन टाटा! आपने न केवल अपनी विरासत को आगे बढ़ाया बल्कि उसे समृद्ध और उन्नत भी किया। आपके निधन पर मेरी श्रद्धांजलि। भारत आपको हमेशा याद रखेगा। आतिशी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, रतन टाटा ने नैतिक नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत किया तथा देश और उसके लोगों के कल्याण को सदैव सर्वोपरि रखा। दिल्ली की मुख्यमंत्री ने कहा, उनकी सादगी, शालीनता, सौम्यता, दयालुता, विनम्रता और बदलाव लाने के जुनून को हमेशा याद रखा जाएगा।

चाकू से हमला करने वाले नाबालिग को दबोचा

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

नई दिल्ली। किशनगढ़ थाना पुलिस ने नौ अक्तूबर को एक नाबालिग को उसके रिश्तेदार के घर से पकड़ा है। आरोपी नाबालिग ने अपने दोस्त के साथ मिलकर पांच अक्तूबर को हॉर्न बजाने को लेकर हुए झगड़े के बाद दो युवकों को चाकू से गोद दिया था। पुलिस ने नाबालिग के दोस्त देव को पहले गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस उपायुक्त सुरेन्द्र चौधरी ने बताया कि पीड़ित विक्रम और अंकित पांच अक्तूबर की रात बाइक से किशनगढ़ गांव में फूलों का ऑर्डर देने गए थे। वहां से लौटते समय अखाड़ा रोड, किशनगढ़ में हॉर्न बजाने को लेकर उनका स्कूटी सवार युवकों से झगड़ा हो गया। झगड़े के दौरान स्कूटी सवार युवकों ने उन पर हमला कर दिया। आरोपियों ने दोनों युवकों पर चाकू से कई वार किए और फरार हो गए। राहगीरों ने दोनों को अस्पताल पहुंचाया था। 70 से ज्यादा सीसीटीवी कैमरों की फुटेज की जांच के बाद आरोपियों की पहचान की गई। इसके बाद इन्हें पकड़ लिया गया।

दिल्ली: ईस्ट ऑफ कैलाश में खड़े ट्रक पर पेड़ गिरा, यातायात प्रभावित

नई दिल्ली। दक्षिणी दिल्ली के ईस्ट ऑफ कैलाश क्षेत्र में बृहस्पतिवार को धीर सेन मार्ग पर एक पेड़ गिर जाने से यातायात प्रभावित हो गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार, सड़क पर खड़े एक ट्रक पर पेड़ गिर गया। पुलिस को इसकी सूचना सुबह 10 बजे मिली। पुलिस ने बताया कि सड़क के दोनों ओर यातायात रोक दिया गया और पेड़ को हटाया जा रहा है।

दिल्ली में न्यूनतम तापमान 23.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज, आसमान साफ रहेगा

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी में बृहस्पतिवार को न्यूनतम तापमान 23.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो इस मौसम के औसत तापमान से दो डिग्री अधिक है और मौसम विभाग ने दिन में आसमान साफ रहने का अनुमान व्यक्त किया है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के अनुसार, सुबह साढ़े आठ बजे आर्द्रता का स्तर 76 प्रतिशत रहा। अधिकतम तापमान 35 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार, राष्ट्रीय राजधानी में सुबह नौ बजे वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 132 दर्ज किया गया, जो मध्यम श्रेणी में आता है। शून्य से 50 के बीच एक्यूआई को अच्छा, 51 से 100 के बीच संतोषजनक, 101 से 200 के बीच मध्यम, 201 से 300 के बीच खराब, 301 से 400 के बीच बहुत खराब तथा 401 से 500 के बीच को गंभीर माना जाता है।

राष्ट्रपति ने दिए फिल्म अवार्ड

नई दिल्ली।(जीतेन्द्र शर्मा)

नई दिल्ली के विज्ञान भवन में मंगलवार को 70वें नेशनल फिल्म अवॉर्ड दिए गए। कार्थिकेय-2 के फि ल्म निमार्ता श्री अभिषेक अग्रवाल को देश की माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, केंद्रीय सूचना प्रसारण मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव जी ने सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फि ल्म का अवॉर्ड दिया। अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन की महामंत्री श्रीमती शिखा गर्ग भी इस कार्यक्रम में उपस्थित हुई और अग्र समाज के मान बढ़ाने वाले निमार्ता श्री अभिषेक अग्रवाल को इस सम्मान के लिए शुभकामनाएँ दी।

श्रीमती शिखा गर्ग ने कहा, आज अग्र समाज के नायक हर विधि में निपुणता से कार्य कर रहे हैं और अपने देश व समाज का नाम रौशन कर रहे। इस अवसर पर शिखा गर्ग जी अग्रवाल समाज के प्रतिभावान युवा युवतियों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए आमंत्रित किया और यह आश्वासन दिलाया की सबको अपने अपने हुनूर दिखाने का मोका दिया जायेगा। पूर्व में कश्मीर फाइल्स जैसी फि ल्म का निर्माण कर चुके, अभिषेक अग्रवाल, सम्मान मिलने पर अग्रवाल समाज बड़ा उत्साहित हैं और गोरवंतित महसूस कर रहे है।

राष्ट्रीय पुरस्कार की घोषणा के बाद अभिषेक अग्रवाल आर्ट्स ने एक बयान में कहा, भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद हम पर बना हुआ है।

दिल्ली के नारायणा में कार शोरूम को फिर मिली धमकी, स्थानीय अपराधी गिरफ्तार

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली पुलिस ने नारायणा स्थित पुरानी लग्जरी कारों के शोरूम को कथित तौर पर धमकी भरा पत्र भेजने के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। पिछले महीने एक विदेशी गैंगस्टर के निर्देश पर इसी शोरूम में गोलीबारी हुई थी।

पुलिस ने बताया कि धमकी भरा पत्र भेजने के आरोप में गिरफ्तार करण ढींगरा का किसी गिरोह से कोई संपर्क नहीं है। वह पिछले दिनों कार शोरूम में हुई गोलीबारी की घटना का फायदा उठाना चाहता था।

इससे पहले गोलीबारी प्रकरण में कथित संलिप्तता के आरोप में दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा और विशेष प्रकोष्ठ ने चार लोगों को गिरफ्तार किया था। आरोपियों ने विदेशी गैंगस्टर हिमांशु भाऊ के निर्देश पर शोरूम मालिक से पांच करोड़ रुपये की फिरौती मांगी थी।

पुलिस उपायुक्त (डीसीपी) (पश्चिम) विचित्र वीर ने बताया कि चार अक्टूबर की शाम साढ़े सात बजे नारायणा विहार स्थित कार स्ट्रीट शोरूम को रंगदारी मांगने का धमकी भरा हस्तलिखित पत्र मिला। भारतीय न्याय संहिता की धारा 308(4) के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई। जांच में पता चला कि आरोपी ने शोरूम पर पत्र पहुंचाने के लिए रैपिडो एप्लीकेशन से दोपहिया वाहन बुक किया था।

पत्र एक पॉलीथिन बैग में रखा हुआ था जिस पर भाऊ गैंग- 20 लिखा हुआ था। पत्र में यह भी लिखा था, अब गोली भेजे पे लगेगी।

वीर ने कहा, तकनीकी और मैनुअल निगरानी का उपयोग करके आरोपी ढींगरा की पहचान की गई और उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

अधिकारी के अनुसार, पूछताछ के दौरान आरोपी ने पुलिस को बताया कि उसका किसी भी गिरोह से कोई संबंध नहीं है, उसने मौके का फायदा उठाकर जिस शोरूम में 27 सितंबर को गोलीबारी की घटना हुई थी वहां एक धमकी भरा पत्र भेजने की कोशिश की थी।

पुलिस ने बताया कि रानी बाग निवासी ढींगरा पहले भी जबरन वसूली, चोट पहुंचाने और चोरी के छह आपराधिक मामलों में शामिल रहा है।

पुलिस ने बताया कि रैपिडो बाइक की बुकिंग के लिए इस्तेमाल किया गया मोबाइल फोन और सिम कार्ड बरामद कर लिया गया है।

संक्षिप्त खबरें

समुह से दिए गए रूपए मांगने पर महिला के साथ कि गई मारपीट

जमुई [झाझा] उधार के रूप में दिए गए राशि मांगने पर एक महिला के साथ एक महिला और कुछ लोगों के द्वारा मारपीट करते हुए घायल कर दिया। घटना थानाक्षेत्र अंतर्गत बलियो गांव की है। मारपीट में घायल महिला की पहचान चानो देवी के रूप में हुई है जिसे इलाज के लिए परिजनों की मदद से रेफरल अस्पताल लाया गया जहां घायल महिला का इलाज हुआ। घायल महिला ने बताया कि समूह से 90 हजार रूपए लोन लेकर गांव की ललीता देवी को दिया जिसके बाद उससे दिए गए रूपए मांगा तो मेरे साथ विवाद करना शुरू कर दिया और गोतिया में रहने वाले मकूंदी यादव, नंदकेश्वर यादव के कहने पर ललीता देवी ने मेरे साथ लाठी डंडा से मारपीट किया और उसके बाद उक्त दोनो ने भी मेरे साथ लाठी डंडा से मारपीट करते हुए घायल कर दिया। महिला ने बताया कि मारपीट में मेरा बेटा रिसव कुमार, पृथ्वी राज, आशीष कुमार बेटी करिश्मा कुमारी, पृता कुमारी को भी चोट पहुंचा है।

जिला प्रशासन द्वारा दशहरा एवं दुर्गा पूजा शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने हेतू खैरा, सिकंदरा, अलीगंज प्रखंड में किया फ्लैग मार्च

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई जिलाधिकारी श्रीमती अभिलाषा शर्मा, पुलिस अधीक्षक चंद्र प्रकाश, अनुमंडल पदाधिकारी अभय कुमार तिवारी तथा अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सतीश सुमन द्वारा बुधवार 09 अक्टूबर को खैरा, सिकंदरा एवं अलीगंज प्रखंड के संवेदनशील क्षेत्रों एवं महत्वपूर्ण स्थानों पर फ्लैग मार्च किया गया। फ्लैग मार्च खैरा थाना क्षेत्र में बड़ी बाग, बेला, चौकीतांड से होते हुए सिकंदरा प्रखंड में जगदंबा मंदिर, बड़ी दुर्गा, शिवनाथी पोखर तथा अलीगंज थाना क्षेत्र में कुमार सोनखार, अलीगंज बाजार तक किया गया। जिलाधिकारी श्रीमती अभिलाषा शर्मा ने स्नेही जनों से दशहरा पर्व परंपरागत एवं रीति-रिवाज के अनुकूल मनाए जाने का आग्रह किया। जिलाधिकारी महोदया ने मौके पर कहा कि दशहरा पर्व के पावन अवसर पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। संवेदनशील, अतिसंवेदनशील और विशिष्ट जगहों की सुरक्षा हेतु ड्रोन एवं सीसीटीवी की व्यवस्था की गई है। मेले में अफवाह पर रोक लगाने एवं सुरक्षा स्थापित करने हेतू कंट्रोल रूम एवं सीसीटीवी कैमरे की व्यवस्था की गई है। जिलाधिकारी महोदया द्वारा संबंधित पदाधिकारियों को विसर्जन हेतु पोखर,तालाब की बैरिकेडिंग करने का निर्देश दिया गया। पुलिस अधीक्षक चन्द्र प्रकाश ने कहा कि संवेदनशील जगहों पर मजिस्ट्रेट के साथ पुलिस की तैनाती सुनिश्चित की गई है। सुरक्षा के दृष्टिकोण से पूजा पंडाल और स्थल पर सादे लिबास में पुलिस तैनात रहेंगे। संपूर्ण जिला में विधि व्यवस्था कायम रखने के लिए यथोचित संख्या में जवानों को तैनात किया जा रहा है। सभी थाना पुलिस को सघन गश्ती करने को कहा गया है। जिला नियंत्रण कक्ष लगातार 24 घंटे कार्यरत रहेगा। जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं जिला स्तरीय पदाधिकारीयों के नेतृत्व में संबंधित प्रखंड विकास पदाधिकारी, अंचलाधिकारी, थानाध्यक्ष तथा सार्जेंट मेजर के साथ पुरुष तथा महिला पुलिस के जवानों ने फ्लैग मार्च में हिस्सा लिया।

स्वच्छता ही सेवा अभियान 2024 में उत्कृष्ट प्रदर्शनः जमुई जिला को राज्य-स्तरीय मान्यता

- कर्मठता के साथ चौमुखी विकास को गति प्रदान करने वाले उप विकास आयुक्त को मंत्री ने किया सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई, बिहारः स्वच्छता ही सेवा 2024 पखवाड़ा के दौरान बिहार ने जन भागीदारी और कचरा प्रबंधन में जमुई जिला उत्कृष्टता प्राप्त की, जिससे यह राष्ट्रव्यापी प्रथम स्थान पर रहा। ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार ने अधिवेशन भवन में आयोजित राज्य-स्तरीय समारोह में विशिष्ट पदाधिकारियों, कर्मचारियों और जन प्रतिनिधियों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया। इस अभियान में जमुई जिला विशेष रूप से चमका, जहां उप विकास आयुक्त सुमित कुमार के नेतृत्व में, सामुदायिक भागीदारी और नवाचारी कार्यान्वयन में उल्लेखनीय प्रगति हुई एवं माननीय ग्रामीण विकास मंत्री के द्वारा उप विकास आयुक्त सुमित कुमार को सम्मानित किया गया। 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2024 तक आयोजित इस अभियान में स्वच्छता अभियान, जन भागीदारी की पहल, सफाई कर्मियों के लिए स्वास्थ्य शिविर, कचरा प्रबंधन, ह्लएक पेड़ माँ के नामह्व पहल के तहत वृक्षारोपण अभियान, कचरे से कला, स्कूलों में विशेष स्वच्छता कक्षाएँ, और जीविका स्वच्छता संवाद जैसी विभिन्न गतिविधियाँ शामिल थीं। जमुई के उप विकास आयुक्त सुमित कुमार को उनके उत्कृष्ट नेतृत्व और नवाचारी कार्यान्वयन विचारों के लिए विशेष रूप से बुधवार 09 अक्टूबर को आयोजित कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम ने स्वच्छता ही सेवा अभियान में बिहार की उपलब्धियों को उजागर किया, विशेष रूप से जमुई जिले में जन भागीदारी और सफाई कर्मियों और उनके परिवारों के स्वास्थ्य जांच पर जोर दिया। यह मान्यता जमुई और बिहार में स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण बनाने की प्रतिबद्धता और सहयोगात्मक प्रयासों को रेखांकित करती है।

आपस में तीन बाइक की भीषण टक्कर मे एक की हुई मौत, दो युवक की हालत गंभीर

- दुर्गा पूजा का मेला घूमने के लिए बाइक पर सवार होकर कुमार गांव आया था,वापस आने के दौरान हुई घटना

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/ई०अलीगंजः-सिकंदरा नवादा मुख्य मार्ग रवय मुसहरी के पास गुरुवार की दोपहर करीब 1:00 बजे तेज रफ्तार तीन बाइक आपस में भीषण टक्करा गई इस दुर्घटना में एक बाइक पर सवार नाबालिग की घटना स्थल पर ही मौत हो गई।जबकि दो युवक बुरी तरह घायल हो गया।स्थानीय लोगों द्वारा घटना की जानकारी पुलिस को दी गई और दोनो घायलों लोगो की मदद से इलाज के लिए सिकंदरा हॉस्पिटल लाया गया, हालत गंभीर देखते हुए जमुई भेजा गया और भर्ती कराया गया।जहां दोनों घायलों की गंभीर स्थिति को देखते हुए डॉक्टर ने प्रारंभिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए पटना रेफर कर दिया। मृतक नाबालिग की पहचान चंद्रदीप थाना क्षेत्र के इस्लामनगर निवासी महेंद्र यादव के पुत्र रंजीत कुमार के रूप में हुई है, जबकि घायलों में मसूदन यादव के पुत्र बालेंद्र कुमार और बाखोरी यादव के पुत्र राहुल कुमार शामिल है। परिजनों ने बताया जाता है कि तीनों एक ही गांव इस्लानगर के साथी हैं।दुर्गा पूजा का मेला घूमने के लिए बाइक पर सवार होकर कुमार गांव आया था, जहां से वापस अपने घर लौट रहा था, जैसे ही बाइक रवय मुसहरी के पास पहुंची इसी दौरान सामने से आ रही एक बाइक के बीच जोरदार टक्कर हो गई ।तभी पीछे से आ रही एक और बाइक भी टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई। तीन बाइक के आपस में टकराने के बाद घटनास्थल पर ही रंजीत कुमार की मौत हो गई, जबकि बलेंद्र कुमार और राहुल कुमार की हालत गंभीर बनी हुई है। वहीं पुलिस द्वारा कागजी प्रक्रिया पूरी कर मृतक युवक के शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेजा गया है।वहीं एक तरफ दुर्गा पूजा महोत्सव मे खुशी का माहौल था वहीं रंजीत की मौत के बाद पूरे परिवार में मातमी सन्नाटा पसरा हुआ है परिजन का रोल होकर पूरा हाल हो रहा है।

खेत की जुताई को लेकर कुछ लोगों के द्वारा मारपीट किए जाने का मामला थाना में हुआ दर्ज

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] खेत की जुताई को लेकर कुछ लोगों के द्वारा मारपीट किए जाने का मामला थाना में दर्ज किया गया । अपने दर्ज आवेदन में थाना क्षेत्र अंतर्गत धवटिया गांव निवासी मुकेश राय ने अपने दर्ज आवेदन में बताया कि गुरुवार को शाम 4:00 बजे गांव के ही चंदन पंडित का प्रतीक खेत मेरे द्वारा भाड़े पर अपने ट्रैक्टर द्वारा खेत जुताई कर रहा था । उसी वक्त बगल के खेत में मवेशी चरा रहे मुकेश यादव, निक्कू यादव, ब्रह्मदेव यादव , दशरथ यादव , बीजू यादव , उचित यादव सभी लक्ष्मीपुर थाना क्षेत्र के करीबा पत्थर गांव का एक मत होकर लाठी पैना हाथ में पत्थर उठाकर मेरे पास आया मेरा ट्रैक्टर रोक कर ट्रैक्टर से खींचकर मुझे नीचे उतार लिया और गली-ग्लौज देते हुए कहा कि आज तुम्हें नहीं छोड़ेंगे । इतना कह कर सभी मिलकर लाटी डंडा से मेरे साथ मारपीट कर मुझे घायल कर दिया । जिसका मामला थाना में दर्ज किया गया मामला दर्ज होने के बाद पुलिस आगे की कार्रवाई में जुट गई ।

एसडीपीओ ने सुरक्षा को लेकर किया निरीक्षण

जमुई [झाझा] झाझा के रेलवे इंडियन इंस्टीच्यूट , बड़ी दुर्गामंदिर सार्वजनिक दुर्गामंदिर में मां दुर्गा का पट संध्या सात बजे खुलने के बाद भक्तों की भीड़ पूजा स्थल पर जुट गई तो वही झाझा एसडीपीओ राजेश कुमार, एसएचओ संजय सिंह, बीडीओ रविजी पूजा पंडाल का निरीक्षण करने के लिए पहुंचे। इस दौरान सुरक्षा को लेकर पूजा पंडाल एवं अन्य स्थलों पर लगे सीसीटीवी कैमरा का जांच किया और कंट्रोल रूम पहुंचकर हर गतिविधि की जानकारी ली। इंडियन इंस्टीच्यूट में अध्यक्ष विकास शर्मा, सचिव नीलेश चैधरी से पूजा पंडाल में सुरक्षा को लेकर दिए गए गाइडलांइस के बारे में फिर से दुहाराते हुए दिशा निर्देश दिया और कहा कि मेले में वाले हर गतिविधियों पर सीसीटीवी के माध्यम से नजर बनाकर रखे। इसके अलावे पुलिस पदाधिकारी एवं अन्य आवश्यक नंबर के बारे में भी लोगों को जानकारी माइकिंग के माध्यम से भी दे। मेला में किसी भी प्रकार की कोई दिक्कत हो तुरंत इसकी जानकारी पुलिस पदाधिकारी को दे।

मुंगेर में चार हथियार तस्कर गिरफ्तार भारी मात्रा में अर्ध निर्मित हथियार बरामद

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर। गुप्त सूचना पर मुंगेर जिला पुलिस और एसटीएफ पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में चार हथियार तस्कर को गिरफ्तार किया गया है। उनके पास से 11 अर्ध निर्मित पिस्तौल बरामद किया गया है पकड़े गए हथियार तस्कर से हुई पूछताछ के आधार पर पुलिस हथियार तस्करी से जुड़े अन्य तस्करों की पहचान के लिए कार्रवाई कर रही है उपर्युक्त बातें मुंगेर के आरक्षी अधीक्षक सैयद इमरान मसूद ने कही। एसपी ने बताया कि हथियार तस्करी की सूचना पर एसटीएफ और जिला पुलिस की टीम मकसदपुर बजरंगबली चौक के समीप राजू के पेप्सी गोदाम में छापेमारी करने पहुंची इस दरमियान पुलिस को देखकर दो तस्कर बोरा लेकर पेप्सी गोदाम में घुसकर दरवाजा बंद कर लिया जब दरवाजा खुलवाया और बोरा के संबंध में पूछताछ की इस दरमियान पेप्सी के एक कार्टून के पीछे प्लास्टिक का बोरा मिला जिसकी तलाशी लेने पर पिस्टल मिला है बताया जाता है कि हथियार तस्कर मकसदपुर निवासी संजय कुमार शर्मा और अनिल कुमार शर्मा पुरानी गंज निवासी सोनू अग्रवाल और जितेंद्र कुमार पंडित इस में शामिल है। संजय शर्मा और अनिल शर्मा दोनों आपस में चचेरा भाई बताया जाता है एसपी सैयद इमरान मसूद ने बताया कि पकड़े गए चारों हथियार तस्करों के विरुद्ध कासिम बाजार थाना में आर्म्स एक्ट के तहत प्राथमिकी दर्ज कर जेल भेज देने की कार्रवाई की गई है चारों पूर्व में भी आर्म्स एक्ट मामले में जेल जा चुके हैं पुलिस सभी का आपराधिक इतिहास को खंगाल रही है तस्कर के निशानदेही पर हथियार तस्कर और विक्रेता की गिरफ्तारी दोनों हथियार तस्करों से पूछताछ में बताया कि पुरानी गंज निवासी सोनू अग्रवाल अर्ध निर्मित हथियार फिनिशिंग हेतु बचने के लिए दिया है निशानदेही पर पुलिस पुरानी गंज स्थित सोनू अग्रवाल के घर पहुंची सोनू अग्रवाल के घर में बाथरूम के पास प्लास्टिक के पीला डोल में 06 अर्धनिर्मित पिस्टल एवं वायरल बरामद कर सोनू को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। सोनू ने बताया कि पुरानी गंज निवासी जितेंद्र पंडित के साथ मिलकर हथियार तस्करी का काम करते है पुरानी गंज के जितेंद्र पंडित के घर पहुंची पुलिस को देखकर जितेंद्र भागने लगा जिसे दौड़ कर पकड़ लिया गया। जितेंद्र ने हथियार तस्करी में अपनी संलिप्त स्वीकार की है।

सोझी घाट पर महिलाओं के लिए नवनिर्मित चेंजिंग रूम का डीएम ने किया उद्घाटन

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर। सोझी घाट पर महिलाओं के लिए बने दो चेंजिंग रूम का उद्घाटन गुरुवार को जिलाधिकारी अवनीश कुमार सिंह ने किया गया। इस मौके पर जिलाधिकारी ने कहा कि सोझी गंगा घाट एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण घाट है, जहां महिला पुरुष सभी स्नान के साथ ही पूजा पाठ, धार्मिक अनुष्ठान आदि करते हैं। पूर्व के भ्रमण में पाया गया था कि यहां स्नान के बाद महिलाओं को वस्त्र बदलने में परेशानियों का सामना करना पड़ता है ।इसके दृष्टिगत नगर आयुक्त को तत्काल इस घाट पर महिलाओं के वस्त्र बदलने के लिए दो चेंजिंग रूम बनाने का निर्देश दिया गया था। उसी के आलोक में आज बने नवनिर्मित चेंजिंग रूम का उद्घाटन किया गया है । उन्होंने कहा कि कष्टहरणी और बबुआ घाट पर चेंजिंग रूम की व्यवस्था है परंतु सोझी घाट पर महिलाओं के लिए चेंजिंग रूम नहीं होने के कारण उसके निर्माण का निर्देश दिया गया था। अब दो दो चेंजिंग रूम बन जाने से महिलाओं को परेशानी नहीं होगी। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन आमजन की सुविधाओं के लिए भी लगातार कार्य कर रही है। नगर निगम द्वारा दुर्गा पूजा को लेकर पूरे शहर में साफ सफाई की व्यवस्था के साथ ही पूजा पंडालों में ब्लीचिंग फॉगिंग आदि की व्यवस्था कर रही है। जिलाधिकारी ने आमजन को दुर्गा पूजा की शुभकामनाएं देते हुए इस पर्व को भक्तिमय माहौल में शांतिपूर्ण तरीके से हर्षोल्लास पूर्वक मनाने के साथ ही जिला एवं पुलिस प्रशासन को अपना पूर्ण सहयोग देने की अपील की है। उन्होंने कहा कि किसी भी पर्व त्योहार को शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराने में जिला एवं पुलिस प्रशासन के साथ आमजन का सहयोग भी अत्यंत ही अपेक्षित है। सभी मिलजुल कर पर्व त्योहार को मनाएं, जिला प्रशासन आपके साथ है।

दुर्गा मंदिर में श्रद्धालुओं की दिखी अत्यधिक भीड़

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] प्रखंड क्षेत्र के अलग अलग दुगार्मंदिर में मां के दर्शन और डलिया चढ़ाने वाले श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। नगर क्षेत्र स्थित महाअष्टमी पर बारोवारी दुगार्मंदिर, सार्वजनिक दुर्गा मंदिर, रेलवे इंडियन इंस्टीच्यूट में श्रद्धालुओं की भीड तो लगी रही लेकिन सबसे अधिक भीड़ मुख्य बाजार स्थित बड़ी दुगार्मंदिर में देखने को मिला जहां गुरूवार की सुबह आसमान में लालिमा दिखाई देने से पहले दूर दराज से पहुंचे श्रद्धालुओं का जमावड़ा मां के दर्शन और पूजा अर्चना को लेकर जुट गई। पूरी होने जाने पर दंडवत देते दिखाई दिए। सुबह की महाआरती में मंदिर परिसर और पूजा पंडाल में भीड़ बेकाबू दिखाई दे रहे थे जिसे पूजा कमेटी और पुलिस संभालनें में जुटे हुए थे। लोग मां दुर्गा की दर्शन कर पूजा अर्चना करते हुए अपने सुखमय जीवन की कामना किया। महाअष्टमी पर विभिन्न दुगार्मंदिर में श्रद्धालुओं जनसैलाब उमड़ा हुआ था। भक्ति गीत के बीच श्रद्धालुओं के द्वारा लगाए जा रहे जय मां दुर्गे, जय माता दी के जयकारों से पूरा वातावरण भक्तिमय में तब्दील था।

नेताजी हमारे आंदोलनो व विचारों में जीवित रहेंगे : पप्पू

- मुलायम की पुण्यतिथि पर सपाइयों ने लिया संघर्ष का संकल्प

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर। समाजवादी पार्टी के तत्वाधान में गुरुवार को पार्टी के संस्थापक समाजवादी योद्धा भारतीय राजनीति के संकट मोचन धरतीपुत्र मुलायम सिंह यादव की दूसरी पुण्यतिथि जिला मुख्यालय स्थित शहीद स्मारक में संकल्प दिवस के रूप में सपा जिला अध्यक्ष पप्पू यादव की अध्यक्षता में आयोजित की जहां सपाइयों ने अपने प्रणेता मुलायम को श्रद्धांजलि निवेदित करते हुए जिले के विकास के लिए संघर्ष करने का संकल्प लिया। मौके पर सपा जिला अध्यक्ष पप्पू यादव ने कहा कि भारतीय राजनीति के संकटमोचन महान समाजवादी नेता धरतीपुत्र मुलायम सिंह यादव उस विरले नेताओं में से एक है जो धर्मनिरपेक्षता एवं समाजवाद को धरातल पर उतार राजनीति की एक नई फिजा उत्पन्न किया और यह कहने में कोई गुरेज नहीं कि आज कोई भी दल के नेता चाहे जितना दम भर लें पर वो मुलायम नहीं हो सकते उन्होंने आगे नेताजी सदैव हमारे संघर्ष और आंदोलन में जीवित रहेंगे और यही हम सपाईयों की अपने नेता को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मौके पर महिला सभा अध्यक्ष रंजन अराफात जिला महासचिव अशोक भारत वरिष्ठ नेता सुरेश यादव जिला सचिव सुधीर यादव मीडिया प्रभारी मनोज क्रांति गोपाल वर्मा माधुरी यादव छडपन मंडल दिनेश साहू सत्यजीत पासवान सहित अन्य लोगों उपस्थित थे।

प्राईवेट नौकरी करने वाले पर सरकार विचार करें : लोकमंच

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। भारतीय लोकमंच पार्टी के राष्ट्रीय प्रधान महासचिव कुणाल सिकंद ने मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार से एक्स शोशल मीडिया के माध्यम से और पत्र लिखते हुए कहा की बिहार सरकार के तरफ से जरूरी सेवा छोड़ कर राज्यकर्मियों को तीन दिनों का छुट्टी दिया गया है लेकिन इसी बिहार राज्य में जो गैर सरकारी नौकरी कर रहें है उन लोगो को कोई छुट्टी नही मिला है। गैर सरकारी नौकरी करने वाले कर्मियों पर सरकार विचार करते हुए नवरात्री, दीपावली, छठ में तीन दिनों की छुटियाँ लोकमंच ने निर्धारित करवाने का आग्रह किया है। श्री सिकंद ने कहाँ की प्राइवेट जॉब करने वाले लोगो को हमेशा से उनका कार्यालय शोषण करता आया है।

ऑल इंडिया मिशन ट्रेड यूनियन, ऐम्टू से जुड़े बिहार प्रदेश सफाई कर्मी महासंघ का कन्वेंशन आयोजित

सफाई कर्मी भुखमरी के कगार पर, सुधि लेने वाला कोई नहीं : मधुबाला उमेश

- एक-डेढ़ वर्षो से लंबित मजदूरी सफाई कर्मी को जल्द भुगतान करें प्रशासन व सरकार : किरण देव यादव

प्रात : किरण संवाददाता

खगड़िया। मजदूर बचाओ - देश बचाओ नारों के साथ देश बचाओ अभियान के तत्वाधान में ग्राम पंचायत, नगर पंचायत नगर परिषद एवं स्कूल के सफाई कर्मियों का संयुक्त बैठक अशोक बैंक्विट सभागार में हुई, जिसकी अध्यक्षता अभियान के संस्थापक अध्यक्ष किरण देव यादव ने किया। बैठक में सफाई कर्मियों की समस्या रेखांकित कर समाधान के लिए संघर्ष करने का निर्णय लिया गया। बैठक में बिहार प्रदेश सफाई कर्मी महासंघ का संगठन निर्माण किया गया, जिसका संरक्षक किरण देव यादव, संयोजक मधुबाला, समन्वयक उमेश ठाकुर के अलावे संयोजन समिति का सर्व समिति से गठन किया गया जिसमें संयोजक दिलखुश कुमार , सह संयोजक वशिष्ठ कुमार व डब्लू रजक, रोहित कुमार, जितेंद्र शर्मा, हरे राम शाह , नीलम देवी, सहित दुलारी देवी चंद्र रोशन कुमार, विजय पोद्दार, नारायण सदा, रंजीत सदा, सुरेंद्र सदा, रेखा देवी, शुकनी देवी को चयन गया। ऑल इंडिया मिशन ट्रेड यूनियन , ऐम्टू के अध्यक्ष सह महासंघ के संरक्षक किरण देव यादव ने कहा कि सफाई कर्मियों को एक से डेढ़ साल से मजदूरी मानदेय लंबित है, जिससे पर्व त्योहार में भी भुखमरी के कगार पर हैं। स्कूल एवं ग्राम पंचायत सहित सभी सफाई कर्मी को जल्द लंबित मजदूरी भुगतान करने, सफाई किट, ड्रेस, दस्ताना, जूता, चश्मा, ठेला, कुदाल, फावड़ा, फर्स्ट एड मेडिसिन, सफाई सामग्री सर्फ साबुन, 20 लाख का बीमा, गरीब भूमिहीन सफाई कर्मी को 5 डिसमिल जमीन एवं भवनहीन को पीएम आवास, निर्धारित छुट्टी देने की मांग मुख्यमंत्री, जिलाधिकारी, उप विकास पदाधिकारी, प्रखंड विकास पदाधिकारी संबंधित अधिकारी से किया है अन्यथा उक्त मांगों को लेकर 19 अक्टूबर 2024 को जिलाधिकारी के समक्ष धरना प्रदर्शन सभा किया जाएगा। श्री यादव ने सभी सफाई कर्मियों से लंबित मजदूरी भुगतान को लेकर अधिकाधिक संख्या में आंदोलन में भाग लेने का अपील किया। कार्यक्रम में चयनित सांगठनिक पदाधिकारी को पुष्पमाला एवं गुलदस्ता से सम्मानित किया गया। इधर, देश बचाओ अभियान की ओर से कार्यक्रम में समाजवादी नेता मुलायम सिंह यादव के पुण्यतिथि एवं उद्योगपति रतन टाटा के निधन पर इनके शैली चित्र पर माल्यार्पण पुष्पांजलि समर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई तथा कोटि-कोटि नमन याद किया गया। नेताओं ने उनके जीवनी व्यक्तित्व कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए समाजवादी आंदोलन को तेज करने का संकल्प लिया।

रावण वध कार्यक्रम, 2024 के अवसर पर प्रतिनियुक्त दण्डाधिकारियों एवं पुलिस पदाधिकारियों की संयुक्त ब्रीफिंग

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। जिलाधिकारी, पटना डॉ. चन्द्रशेखर सिंह एवं वरीय पुलिस अधीक्षक, पटना श्री राजीव मिश्रा ने कहा है कि रावण वध कार्यक्रम, 2024 के अवसर पर विधि-व्यवस्था संधारण प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। सभी पदाधिकारियों को इसके लिए सजग, सतर्क एवं सक्रिय रहना होगा। आपस में सार्थक समन्वय भी कायम रखना होगा। अधिकारीद्वय आज प्रतिनियुक्त दण्डाधिकारियों एवं पुलिस पदाधिकारियों को गाँधी मैदान, पटना में संयुक्त ब्रीफिंग में संबोधित कर रहे थे। डीएम डॉ. सिंह व एसएसपी श्री मिश्रा ने कहा कि सुरक्षा व्यवस्था से कोई समझौता नहीं किया जा सकता। लोगों का गाँधी मैदान में प्रवेश एवं निकास हर हाल में अवरोधमुक्त तथा सुगमतापूर्वक होना चाहिए। आस-पास के क्षेत्रों में बाइकर्स गैंग के विरुद्ध तत्परता से कार्य करते हुए उनपर नियंत्रण रखें। पुलिस बाईक दस्ता को लगातार भ्रमणशील रखें। डीएम डॉ. सिंह ने कहा कि पूरे जिले में लगभग १८ जगहों पर रावण वध कार्यक्रम का आयोजन हो रहा है। मुख्य कार्यक्रम का आयोजन गाँधी मैदान, पटना में हो रहा है। गाँधी मैदान, पटना में आयोजित होने वाले सभी कार्यक्रमों का एक निर्धारित प्रोटोकॉल है। साथ ही यह फिक्स्ड वेन्यू-फिक्स्ड टाईम कार्यक्रम भी है। मानक संचालन प्रक्रिया के अनुसार प्रोटोकॉल का अक्षरशः अनुपालन सभी पदाधिकारियों को सुनिश्चित करना है। डीएम डॉ. सिंह ने कहा कि कार्यक्रम के महत्व को देखते हुए आयुक्त महोदय द्वारा भी गाँधी मैदान, पटना का नियमित निरीक्षण किया जाता है। रावण बध कार्यक्रम में अपार जन-समूह के एकत्रित होने की संभावना है। इसलिए विशेष सतर्कता एवं निगरानी बरता जाना आवश्यक है, ताकि सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था एवं उत्कृष्ट भीड़ प्रबंधन सुनिश्चित किया जा सके। डीएम डॉ. सिंह ने पदाधिकारियों को निदेश दिया कि सभी प्रतिनियुक्त दण्डाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी एवं पुलिस बल ससमय अपने प्रतिनियुक्ति स्थल पर पहुँच जाएंगे तथा तब तक अपने प्रतिनियुक्ति स्थल पर मुस्तैद रहेंगे जबतक कि भीड़ कार्यक्रम स्थल से पूरी तरह वापस न चली जाए एवं मैदान पूर्णतः खाली न हो जाए। डीएम डॉ. सिंह व एसएसपी श्री मिश्रा ने कहा कि विधि-व्यवस्था संधारण के दृष्टिकोण से पूरे गाँधी मैदान को चार सेक्टर में विभाजित किया गया है। सभी सेक्टर में एम्बुलेंस, फायर यूनिट एवं पेयजल की व्यवस्था की गई है। सेक्टर में अपर जिला दंडाधिकारी एवं पुलिस उपाधीक्षक को वरीय प्रभार में रखा गया है। प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी चिकित्सकों, फायर यूनिट के पदाधिकारियों एवं पेयजल व्यवस्था के प्रभारी पदाधिकारियों से समन्वय बनाए रखेंगे ताकि किसी भी तरह की कोई समस्या न हो। सेक्टर के प्रभारी दंडाधिकारियों एवं वरीय पुलिस पदाधिकारियों के साथ गाँधी मैदान एवं आस-पास विधि-व्यवस्था संधारण हेतु कुल 47 विभिन्न स्थानों पर 90 दण्डाधिकारियों की प्रतिनियुक्ति की गई है। दंडाधिकारियों के साथ पुलिस पदाधिकारियों को भी तैनात किया गया है। महिला बल, लाठी बल एवं अन्य पुलिस बल भी ड्यूटी पर मुस्तैद रहेंगे। जिला नियंत्रण कक्ष में 07 दंडाधिकारियों तथा गाँधी मैदान नियंत्रण कक्ष में 08 दंडाधिकारियों को प्रतिनियुक्त किया गया है। बैरिकेडिंग गैंगवे पर 08 दंडाधिकारियों के नेतृत्व में पुलिस पदाधिकारियों एवं पुलिस बल को लगाया गया है। सीसीटीवी नियंत्रण कक्ष में तीन आईटी पदाधिकारियों को लगाया गया है। सभी गेट पर दंडाधिकारियों, पुलिस पदाधिकारियों एवं बलों की प्रतिनियुक्ति की गई है। 03 क्विक रिस्पॉन्स टीम भी तैनात रहेगा जो किसी भी प्रकार की आकस्मिक सूचना पर त्वरित कार्रवाई करेगा। गाँधी मैदान, पटना में सेन्ट्रल माईकिंग की व्यवस्था रहेगी। इसके साथ सभी 13 गेट एवं बाह्य क्षेत्रों में भी माईकिंग की व्यवस्था की गई है। नगर आयुक्त, पटना नगर निगम श्री अनिमेष कुमार पराशर ने नगर निगम एवं स्मार्ट सिटी लिमिटेड के द्वारा की गयी व्यवस्था के बारे में विस्तार से बताया। पूरे गाँधी मैदान में एवं आस-पास हाई क्वालिटी के 128 सीसीटीवी कैमरों से निगरानी की जाएगी। ये फिक्स्ड बुलेट एवं पीटीजेड कैमरा हैं। त्रुटिहीन सुरक्षा व्यवस्था के लिए गाँधी मैदान में अस्थायी नियंत्रण कक्ष भी कार्यरत रहेगा। इससे सम्पूर्ण भीड़ की गतिविधि पर नजर रखी जाएगी। डीएम डॉ. सिंह व एसएसपी श्री मिश्रा ने कहा कि गाँधी मैदान में भीड़ नियंत्रण एवं विधि-व्यवस्था संधारण हेतु मुख्य गेट के नजदीक तथा ध्वजारोहण स्थल के पास वाच टावरों की स्थापना की गई है। 13 वाच टावरों पर दंडाधिकारियों, पुलिस पदाधिकारियों एवं पुलिस बलों को ड्रैगन लाईट/ध्वनि विस्तारक यंत्र के साथ मुस्तैद रखा जाएगा। प्रत्येक वाच टावर पर सिविल डिफेन्स के दो कर्मी भी तैनात रहेंगे। इन वाच टावरों से पूरे गाँधी मैदान में नजर रखी जाएगी। गाँधी मैदान में लोगों को सूचना का आदान-प्रदान करने तथा आवश्यक सहायता पहुंचाने हेतु चार हेल्प डेस्क (खोया-पाया सहायता केन्द्र) कार्यरत रहेगा। यह हेल्प डेस्क गेट नं0 5, 7, 10 एवं ध्वजारोहण स्थल के पास क्रियाशील रहेगा। इसमें दंडाधिकारियों एवं पुलिस पदाधिकारियों की प्रतिनियुक्ति की गई है। आम जनता की सुविधा के लिए सुरक्षा के दृष्टिकोण से द्वारों पर ह्यक्या करें, क्या न करेंह्व के बारे में बैनर लगाया जा रहा है। जिलाधिकारी ने कहा कि 34 प्रकाश मीनारों से 136 एलईडी मेटल लाईट, 229 पोल लाईट एवं 20 हाईमास्ट लाईट के द्वारा गाँधी मैदान एवं उसके चारों ओर प्रकाश की उत्कृष्ट व्यवस्था रहेगी। पाथवे लाईट की भी बेहतर व्यवस्था रहेगी।

चला गया खास होते हुए भी आम दिखने वाला रतन टाटा

रतन टाटा सिर्फ एक अरबपति नहीं बल्कि एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंगने टाटा समूह के साथ इस देश और इस देश के करोड़ों लोगों के लिए बहुत कुछ किया है। तभी तो रतन टाटा के निधन से हर कोई दुखी है। उन्हीं संयमित जीवनशैली और टाटा ट्रस्ट के माध्यम से परोपकारी कार्यों के प्रति गहरी प्रतिबद्धता के लिए भी जाना जाता रहा है। उनके निधन के बाद यह सवाल उठ रहा है कि उनका उत्तराधिकारी कौन होगा? करीब 3800 करोड़ रुपये की नेटवर्थ के मालिक रतन टाटा जीवन भर अविवाहित रहे हैं। टाटा परिवार में एन. चंद्रशेखर टाटा संस के 2017 से चेयरमैन हैं। उनके अलावा टाटा ग्रुप की अलग-अलग कंपनियों से ऐसे बहुत से लोग हैं, जो भविष्य में टाटा समूह में अलग-अलग जिम्मे दारी निभाते नजर आ सकते हैं। रतन टाटा के पिता नवल टाटा की दूसरी शादी सिमोन से हुई थीं। उनके बेटे नोएल टाटा, रतन टाटा के सौतेले भाई हैं। रतन टाटा की विरासत हासिल करने के लिए उनका यह संबंध उन्हें एक प्रमुख उत्तराधिकारी उदावेदार बनाता है। नोएल टाटा के तीन बच्चे हैं, जिनमें माया, नेविल और लीह हैं। यह रतन टाटा के उत्तराधिकारी हो सकते हैं। टाटा संस के मानद चेयरमैन रतन नवल टाटा का 86 साल की उम्र में निधन हो गया। वे मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल की इंटेसिव केयर यूनिट में भर्ती थे और उम्र संबंधी बीमारियों से जूझ रहे थे। रतन टाटा ईमानदारी, नैतिक नेतृत्व और परोपकार के प्रतीक थे। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के शब्दों में, भारत ने एक ऐसे आइकॉन को खो दिया है, जिन्होंने कॉरपोरेट ग्रोथ, राष्ट्र निर्माण और नैतिकता के साथ उत्कृष्टता का मिश्रण किया। पद्म विभूषण और पद्म भूषण से सम्मानित रतन टाटा ने टाटा ग्रुप की विरासत को आगे बढ़ाया है। वही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि टाटा एक दूरदर्शी बिजनेस लीडर, दयालु आत्मा और एक असाधारण इंसान थे। उन्होंने भारत के सबसे पुराने और सबसे प्रतिष्ठित व्यापारिक घरानों में से एक को स्थिर नेतृत्व प्रदान किया। उनका योगदान बोर्ड रूम से कहीं आगे तक गया। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी बोले, रतन टाटा दूरदृष्टि वाले व्यक्ति थे। उन्होंने बिजनेस और परोपकार दोनों पर कभी न मिटने वाली छाप छोड़ी है। उनके परिवार और टाटा कम्युनिटी के प्रति मेरी संवेदनाएं हैं। प्रसिद्ध उद्योगपति मुकेश अंबानी का कहना है कि ये भारत के लिए बहुत दुखद दिन है। रतन टाटा का जाना ना सिर्फ टाटा ग्रुप, बल्कि हर भारतीय के लिए बड़ा नुकसान है। व्यक्तिगत तौर पर रतन टाटा का जाना मुझे बहुत दुख से भर गया है, क्योंकि मैंने अपना दोस्त खो दिया है। रतन टाटा, दुनियाभर में फैले टाटा साम्राज्य के सबसे चमकदार रत्न थे। उन्होंने मैनेजमेंट की मॉडर्न तकनीकों को अपनाकर टाटा ग्रुप को दुनिया का भरोसेमंद ब्रांड बनाया। उन्होंने कभी भी टाटा के संस्थापकों के विजन से समझौता नहीं किया। आज जब नैतिकता का स्तर गिर रहा है, उस दौर में भी रतन टाटा व्यक्तिगत स्तर पर मॉरल वैल्यूज को थामे रहे। सही मायनों में रतन टाटा देश के उद्योग का प्रतिनिधित्व करते थे। हम विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हर क्षेत्र में उनके भरोसे, उत्कृष्टता और नवीनता के मूल्यों को अपनाते हुए प्रयास कर रहे हैं, यही रतन टाटा को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। वे भारतीय उद्योग के आधुनिकीकरण से गहराई से जुड़े थे। और इससे भी अधिक इसके वैश्वीकरण के साथ जुड़े थे। बड़ी संपत्ति होने के बावजूद वे अपनी साधारण जीवनशैली और टाटा ट्रस्ट के जरिये परोपकारी कार्यों के लिए चर्चा में रहे। टाटा संस में अपने नेतृत्व के दौरान, उन्होंने टेटली, कोरस और जगुआर लैंड रोवर जैसी कंपनियों का अधिग्रहण करके टाटा समूह को मुख्य रूप से घरेलू कंपनी से वैश्विक पावरहाउस में बदल दिया. उनके नेतृत्व में, टाटा वास्तव में 100 बिलियन डॉलर से अधिक मूल्य के वैश्विक व्यापार साम्राज्य में विकसित हुआ. दिसंबर 2012 में, टाटा अपने पद से रिटायर हो गए और उनकी जगह पर साइरस मिस्त्री ने पदभार संभाला, जिनका 2022 में एक कार दुर्घटना में निधन हो गया था। बुढापे के बावजूद रतन टाटा जीवन पर्यंत बेहद साधारण जीवन जीते रहे। उनकी सादगी स्वयं सदी के महानायक अमिताभ बच्चन ने भी एक हवाई यात्रा के दौरान महसूस की थी। ऐसे महान व्यक्तित्व को नमन।

रतन टाटा भारत के उद्योगों के रत्न

कल रात मुंबई के ब्रिज कैंडी हॉस्पिटल में 86 वर्ष की उम्र में रतन टाटा का निधन हो गया रतन टाटा के निधन की खबर से लोग काफी ज्यादा दुखी हैं। रतन टाटा न केवल अपने बिजनस के लिए बल्कि अपने व्यक्तित्व के लिए भी जाने जाते थे। दूसरों की मदद करते रहने की आदत की वजह से लोग टाटा संस के चेयरमैन की इतनी ज्यादा इज्जत करते हैं। रतन टाटा से आप सिर्फ बिजनस ही नहीं बल्कि जिंदगी जीने का तरीका भी सीख सकते हैं। अगर आपने रतन टाटा द्वारा कही गई इन बातों पर अमल कर लिया, तो यकीन मानिए आपको सफलता का मुकाम हासिल करने से कोई नहीं रोक सकता। उतार-चढ़ाव को स्वीकार करें रतन टाटा कहते थे कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए उतार-चढ़ाव जरूरी है। ईसीजी में एक सीधी रेखा का मतलब है कि हम जीवित नहीं है। रतन टाटा के इस कोट के मुताबिक आपको उतार-चढ़ाव को स्वीकार करने की कोशिश करनी चाहिए। असफलता का शोक मनाने की जगह सीख लेकर आगे बढ़िए। खुद पर होना चाहिए भरोसा रतन टाटा का कहना था कि वो सही फैसले लेने में विश्वास नहीं करते, वो फैसले लेते हैं और फिर उन्हें सही साबित कर देते हैं। इस कोट के मुताबिक आपको खुद पर भरोसा होना चाहिए। अगर आप अपने लिए गए फैसलों को लेकर कॉन्फिडेंट हैं, तो आपको आज नहीं तो कल सफलता जरूर मिलेगी। सबको साथ लेकर चलें रतन टाटा कहते थे कि अगर आप तेजी से चलना चाहते हैं तो आपको अकेले चलकर सफर तय करना चाहिए। लेकिन अगर आप दूर तक चलना चाहते हैं तो आपको सभी के साथ मिलकर सफर तय करने की कोशिश करनी चाहिए। चुनौती को मौके में बदलें रतन टाटा का कहना था कि अगर लोग आपके ऊपर पत्थर मारते हैं, तो आपको उन पत्थरों का इस्तेमाल अपना महल बनाने के लिए कर लेना चाहिए। कुल मिलाकर आपको अपने सफलता के सफर के दौरान दिखाई देने वाली बाधाओं या फिर चुनौतियों को अवसर में बदल देना चाहिए। आगे आने वाली कई पीढ़ियां रतन टाटा के इन अनमोल विचारों से बहुत कुछ सीख सकती हैं। इस तरह के विचारों पर अमल कर आप न केवल अपने प्रोफेशन में सफलता हासिल करेंगे बल्कि लोगों के प्रेरणादायक भी हैं रतन टाटा भारत के उद्योगों के रत्न के हैं जिन्होंने टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ फंडमेन्टल रिसर्च, टाटा स्टील, टी आई एफ आर जैसे संस्थान को चमकाया है विनम्र श्रद्धांजलि!

भगवान राम द्वारा शक्ति जागरण

वास्तव में, यह विजय दशमी भगवान राम द्वारा प्रारंभ किया हुआ तथा परब्रह्म परमेश्वरी से प्रेरित शक्ति जागरण है। इस जगत में अगर आप बाहरी युद्ध में विजय प्राप्त करना चाहते हैं तो सर्वप्रथम आंतरिक विजय आवश्यक है। अपने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि को माया के वशीभूत मत होने दीजिए। सत्य के लिए तथा सत्य में ही प्रतिष्ठित होकर युद्ध कीजिए। इस तरह से जीवन की प्रत्येक संग्राम में आपका विजय सुनिश्चित है। भगवान अपने अमोघ शक्ति से उसके सारे अहंकार का नाश कर दिए और जैसे ही अहंकार का नाश हुआ, उसे अपने स्वरूप में प्रभु श्रीराम का दर्शन हो गया। इसलिए, अंहकार ही आत्मतत्व के दर्शन में सबसे बड़ा बाधक है।

अवधेश झा

शक्ति परब्रह्म परमात्मा का ही अनंत स्त्रोत का क्रिया भाव है। इसलिए, शक्ति के माध्यम से ही विभिन्न भावों की प्राप्ति होती है और शक्ति से ही विभिन्न भावों का नाश होता है। शक्ति की अधिष्ठिता ह्लमहामायाह्व देवी हैं, जो अपनी योगमाया से ब्रह्मांड को शक्तिशाली और क्रियाशील रखी हैं। आदि शक्ति प्रकृति की मूल दुर्गा हैं जो महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती के रूप में विद्यमान हैं। पुरुष आत्म तत्व है तथा प्रकृति ही उसकी शक्ति है। इसलिए, शक्ति कभी भी आत्मा के विपरीत नहीं जाता है। शक्ति से ही शक्ति (सत्य भाव से) पर विजय प्राप्त किया जा सकता है। शक्ति ब्रह्मनिष्ट, आत्मनिष्ट या सत्यनिष्ठ पुरुष को हानि नहीं पहुंचाती है। शक्ति सुरक्षा और कवच भी है। शक्ति संकल्प और साधना भी है। रावण अपने कुल देवी की साधना कर उनसे सुरक्षा प्राप्त तो कर लिया। वास्तव में, साधना चाहे शुभ संकल्प के लिए हो या अशुभ कृत के लिए; माता तो तत्क्षण उसके साधना का फल तो दे ही देतीं हैं, लेकिन वह फलित नहीं हो पाता है। श्रीराम और रावण का जब युद्ध प्रारंभ हुआ तो रावण को कुलदेवी की विशेष सुरक्षा के कारण युद्ध में उसे क्षति नहीं पहुंच रही थी। जामवंत इस बात से अवगत थे और उन्होंने प्रभु श्रीराम को भी दुर्गा शक्ति को जागृत करने की परामर्श दिया। प्रभु, बड़ों की अनुभव पूर्ण बात कैसे टाल सकते थे। उन्होंने, उनकी परामर्श को सहज ही स्वीकार किया तथा माता की आराधना हेतु संकल्प लिए और शक्ति जागरण हेतु साधना प्रारंभ कर दिए। युद्ध की ऐसी विकराल स्थिति जिसका द्रष्टा तीनों लोक था। देवता परिणाम की प्रतीक्षा में थे। उस रणभूमि के मध्य में तपस्वी, मनीषी और योगेश्वर राम ह्लशक्ति जागरणह्व की साधना में लीन हो गए। प्रथम दिवस यम और नियम का पालन किए, तत्पश्चात शक्ति के सातों (कुंडलिनी) द्वार को खोलते हुए, वहां पहुंच गए जहां, शक्ति की अधिष्ठिता देवी सहस्त्रहार चक्र में अर्धनारीश्वर महादेव के साथ अवस्थित थीं। इस क्रम में, उन्होंने राम का परीक्षा लिया और अजेय राम सफल हुए तथा विजयश्री की प्राप्ति हुई। वास्तव में, माता आदि शक्ति भगवान की ही वहीरंगा शक्ति हैं और माता सीता प्रभु की अंतरंगा शक्ति हैं। प्रभु जिस आंतरिक शक्ति के लिए युद्ध आरंभ किए थे, स्वाभाविक है कि केवल बाहरी शक्ति को आज्ञा ही देना था और वो सक्रिय हो जाती। जब प्रभु श्रीराम आज्ञा चक्र तक की यात्रा किए तो शक्ति माता ने कहा, ह्लआप केवल मुझे आज्ञा दीजिए मैं समस्त शक्ति के साथ आपके समक्ष उपस्थित हो जाऊंगीह्व। लेकिन, प्रभु मयार्दा पुरुषोत्तम हैं, नियमों की उपेक्षा कैसे कर सकते थे! इसलिए, सम्पूर्ण विधि विधान का पालन करते हुए, माता की आराधना किए तथा उन्हें जागृत किए और वरदान प्राप्त किया। वास्तव में, यह विजय दशमी भगवान राम द्वारा प्रारंभ किया हुआ तथा परब्रह्म परमेश्वरी से प्रेरित शक्ति जागरण है। इस जगत में अगर आप बाहरी युद्ध में विजय प्राप्त करना चाहते हैं तो सर्वप्रथम आंतरिक विजय आवश्यक है। अपने काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि को माया के वशीभूत मत होने दीजिए। सत्य के लिए तथा सत्य में ही प्रतिष्ठित होकर युद्ध कीजिए। इस तरह से जीवन की प्रत्येक संग्राम में आपका विजय सुनिश्चित है। किसी भी भाव का अति रूप ही रावण है। इसलिए, वह अत्यधिक ज्ञानी और बुद्धिमान होते हुए भी, अत्यधिक अभिमानी, क्रोधी, अहंकारी, लोभी, कामना से ग्रसित तथा आसुरी प्रवृत्तियों में लिप्त होने से उसके समस्त शुभ गुण ऐसे ढका हुआ था, जैसे सूर्य बादल से ढक जाता है। भगवान अपने अमोघ शक्ति से उसके सारे अहंकार का नाश कर दिए और जैसे ही अहंकार का नाश हुआ, उसे अपने स्वरूप में प्रभु श्रीराम का दर्शन हो गया। इसलिए, अंहकार ही आत्मतत्व के दर्शन में सबसे बड़ा बाधक है।

शक्ति संकल्प से ही पूर्ण होता है। शक्ति का जागरण अगर शुभ संकल्प के लिए होता है तो उसका परिणाम चिरकाल तक व्याप्त रहता है। इसका उत्तम उदाहरण प्रभु श्रीराम हैं।अपने पंच भौतिक शरीर की जो शोधन क्रिया है उसमें भी शक्ति की ही आवश्यकता है। इसलिए, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश और आत्म तत्व आदि का शोधन किया जाता है। माता की सम्पूर्ण शक्ति आपमें सुप्त रूप से विद्यमान है। इसे जागृत करने की आवश्यकता है। यही शक्ति माता हैं, जो महालक्ष्मी रूप भरण पोषण तथा धन - ऐश्वर्य प्रदान करती हैं। यही शक्ति दुर्गा रूप में समस्त कामनाओं की पूर्ति करती हैं और मुक्ति प्रदान करती हैं। यही शक्ति महासरस्वती हैं जो बुद्धि और ज्ञान प्रदान करती हैं, जिससे कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। ॐ श्रीसीता - रामाय नमः! ॐ क्लीं कृष्णाय नमः! ॐ दुं दुगार्यै नमः ! ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे!

मां सिद्धिदात्री ने भगवान शिव को 18 प्रकार की सिद्धियाँ दी थी - नवरात्र में नवमी को होती है मां सिद्धिदात्री की पूजा

जब देवी कुष्मांडा ने अपनी मुस्कान के तेज से ब्रह्मांड की रचना की थी। इसके बाद मां कुष्मांडा ने भगवान ब्रम्हा - सृजन की ऊर्जा, भगवान विष्णु - पालन की ऊर्जा और भगवान शिव - विनाश की ऊर्जा - की, इस प्रकार त्रिमूर्ति का निर्माण हुआ। एक बार जब वे निर्मित हो गए, तो भगवान शिव ने माँ कुष्मांडा से उन्हें पूर्णता प्रदान करने के लिए कहा। तो, मां कुष्मांडा ने एक और देवी का निर्माण किया जिसने भगवान शिव को 18 प्रकार की सिद्धियाँ प्रदान कीं। इनमें भगवान कृष्ण द्वारा वर्णित अष्ट सिद्धि (पूर्णता के 8 प्राथमिक रूप) के साथ-साथ पूर्णता के 10 माध्यमिक रूप भी शामिल हैं।

जितेन्द्र कुमार सिन्हा,

लेखक

नवरात्र शब्द से नव अहोरात्रों (विशेष रात्रियों) का बोध होता है। इस अवधि में मां दुर्गा के नवरूपों की उपासना की जाती है। रात्रि शब्द सिद्धि का प्रतीक है। भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों ने रात्रि को दिन की अपेक्षा अधिक महत्व दिया है, इसलिए दीपावली, होलिका, शिवरात्रि और नवरात्रि आदि उत्सवों को रात में ही मनाने की परंपरा है। मान्यता यह भी है कि नवरात्रि के दिनों में मां दुर्गा, धरती पर आती हैं और नौ दिनों तक अपने स्वागत करने वाले भक्तों के साथ रहती हैं। मां दुर्गा की रचना देवताओं ने, राक्षसों के भयानक अत्याचारों को समाप्त करने के लिए की थी। महिषासुर और मां दुर्गा ने नौ दिन और नौ रात युद्ध किया था और अंत में, दसवें दिन, मां दुर्गा राक्षस महिषासुर को मारकर विजयी हुईं थी। इसलिए नवरात्र के नौवें दिन, सभी लोग अपनी आजीविका और काम के उपकरणों की पूजा करते हैं। नवरात्र के अंतिम दिन यानि नौवे दिन मां सिद्धिदात्री की पूजा-आराधना होती है। नवमी का विशेष महत्व होता है। मां दुर्गा का हर रूप अद्भुत और शारदीय नवरात्र के 9 दिन के बाद दशमी पर सिंदूर खेला, विसर्जन और रावण दहन का त्योहार मनाया जाता है। करुणामय है। मां दुर्गा की नौवीं शक्ति है मां सिद्धिदात्री, जो सभी प्रकार की सिद्धियां देने वाली मां हैं। मां सिद्धिदात्री की कहानी उस समय शुरू होती है जब हमारा ब्रह्मांड एक गहरे शून्य से ज्यादा कुछ नहीं था। वह अंधकार से भरा हुआ था और जीवन का कोई चिन्ह नहीं था। यह वह समय था जब देवी कुष्मांडा ने अपनी मुस्कान के तेज से ब्रह्मांड की रचना की थी। इसके बाद मां कुष्मांडा ने भगवान ब्रम्हा - सृजन की ऊर्जा, भगवान विष्णु - पालन की ऊर्जा और भगवान शिव - विनाश की ऊर्जा - की, इस प्रकार त्रिमूर्ति का निर्माण हुआ। एक बार जब वे निर्मित हो गए, तो भगवान शिव ने माँ कुष्मांडा से उन्हें पूर्णता प्रदान करने के लिए कहा। तो, मां कुष्मांडा ने एक और देवी का निर्माण किया जिसने भगवान शिव को 18 प्रकार की सिद्धियाँ प्रदान कीं। इनमें भगवान कृष्ण द्वारा वर्णित अष्ट सिद्धि (पूर्णता के 8 प्राथमिक रूप) के साथ-साथ पूर्णता के 10 माध्यमिक रूप भी शामिल हैं। यह देवी जिसमें भगवान शिव को ये सिद्धियाँ प्रदान करने की क्षमता थी, माँ सिद्धिदात्री हैं - पूर्णता की दाता। अब, भगवान ब्रह्मा को शेष ब्रह्मांड का निर्माण करने के लिए कहा गया। हालाँकि, उन्हें सृष्टि के लिए एक पुरुष और एक महिला की आवश्यकता थी, भगवान ब्रम्हा को यह कार्य बहुत चुनौतीपूर्ण लगा। उन्होंने माँ सिद्धिदात्री से प्रार्थना की और उनसे उनकी मदद करने को कहा। भगवान ब्रम्हा के अनुरोध को सुनकर, मां सिद्धिदात्री ने भगवान शिव के आधे शरीर को एक महिला के शरीर में बदल दिया। इसलिए, भगवान शिव को अर्धनारीश्वर (अर्ध - आधा, नारी - महिला, ईश्वर - भगवान शिव को संदर्भित करता है) के रूप में भी जाना जाता है। भगवान ब्रम्हा अब शेष ब्रह्मांड के साथ-साथ जीवित प्राणियों का निर्माण करने में सक्षम थे। तो, यह माँ सिद्धिदात्री ही थीं जिन्होंने ब्रह्मांड के निर्माण में भगवान ब्रम्हा की मदद की और भगवान शिव को पूर्णता भी प्रदान की। मां सिद्धिदात्री को कमल या सिंह पर विराजमान दशार्या गया है। उनकी चार भुजाएं हैं और प्रत्येक हाथ में शंख, गदा, कमल और चक्र है। ऐसा माना जाता है कि मां सिद्धिदात्री अपने भक्तों को आध्यात्मिक ज्ञान का आशीर्वाद देती हैं और उनकी अज्ञानता को नष्ट करती है। मान्यता है कि मां सिद्धिदात्री की शास्त्रीय विधि- विधान और पूर्ण निष्ठा के साथ साधना करने वाले साधक को सभी सिद्धियों की प्राप्ति हो जाती है। भगवान शिव ने भी मां सिद्धिदात्री की कृपा से ही तमाम सिद्धियाँ प्राप्त की थीं, इन सिद्धियों में अणिमा, महिमा, गरिमा, लधिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व शामिल हैं। इस देवी की कृपा से ही शिव अर्द्धनारीश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए। हिमाचल के नन्दापर्वत पर इनका प्रसिद्ध तीर्थ है। यह भी मान्यता है कि मां सिद्धिदात्री की पूजा करने से बाकी मां दुर्गा के अन्य रूपों की उपासना भी स्वयं हो जाती है और अष्ट सिद्धि, नव निधि, बुद्धि और विवेक की प्राप्ति होती है।

मां सिद्धिदात्री का मन्त्र

सिद्धगन्धर्व-यक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि ।

सेव्यमाना सदा भूयात सिद्धिदा सिद्धिदायिनी।।

ऋषि परम्परा के उद्योगपति थे रतन टाटा

राकेश अचल

आज हिंदुस्तान में सबसे बड़ी खबर श्रीमान रतन के निधन की है। रतन टाटा आजाद भारत में उद्योग जगत के ऐसे नायक कहें या महानायक कहें जिन्हें हर कोई स्नेह करता था। वे 86 साल के थे, उनका जाना दुखी करता है लेकिन उनका जीवन कभी भी शोक का क्षोभ का कारण नहीं रहा। क्योंकि उनके हिस्से में यश-कीर्ति के अलावा कुछ और था ही नहीं। वे अपयश से कोसों दूर रहे। जो उनसे मिला वो भी और जो उनसे नहीं मिला वो भी रतन टाटा का मुरीद था। मै रतन टाटा से कभी नहीं मिला, लेकिन मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि वे हमारे घर के ही बुजुर्ग सदस्य हैं। वे न हमारी जाति के थे और न बिरादरी के, फिर भी अपने से थे। वे पारसी थे, ये बहुत कम लोग जानते होंगे, क्योंकि उन्होंने कभी अपने पारसी होने का डंका नहीं पीटा, जैसे की आज लोग अपने हिन्दू होने का डंका पीटते हैं। हिन्दुस्तान के बच्चे-बच्चे की जुबान पर रतन टाटा का नाम था। आखिर क्यों न होता? आखिर एक जमाने में टाटा उद्योग समूह ने भारतीयों के लिए छोटे से लेकर बड़े उपभोक्ता सामन का गुणवत्ता के साथ निर्माण किया और जन-जन तक उसे पहुंचाया। रतन टाटा दरअसल आज के भारत में एक अपवाद थे, जो उद्योगपति होते हुए भी सादगी पसंद थे। उनका जीवन हर किसी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन के तमाम ऐसे किस्से हैं जो आपको चौंकाएंगे भी और प्रभावित भी करेंगे। आज के युग में जहाँ कोई भी उद्योगपति विवादों से परे नहीं है। विवाद भी ऐसे जो कि जो आपको हैरान भी करें और दुखी भी। लेकिन रतन टाटा इन सबसे बचे रहे। कैसे बचे रहे ये शोध का विषय हो सकता है। रतन टाटा को हालाँकि भारतरत्न अलंकरण नहीं मिला लेकिन वे थे तो भारतीय उद्योग जगत के रतन ही। उनकी चमक दमक आखरी वक्त तक कायम रही। उनका नाम सड़क से संसद तक सम्मान के साथ ही लिया गया। कभी किसी कि सरकार के साथ उनकी न नजदीकी रही और न दूरी। किसी सरकार को उनकी वजह से और उन्हें किसी सरकार की वजह से न विवादित होना पड़ा और न अपमानित। उन्हें लेकर संसद में कभी कोई उत्तेजक बस नहीं हुई। रतन टाटा को ईश्वर ने बेहद खूबसूरत बनाया था। वे यदि उद्योगपति न होते और फिल्मी दुनिया में काम कर रहे होते तो शायद वहां भी उनका स्थान शीर्ष पर ही होता। रतन जी खास होकर भी हमेशा आम आदमी कि बारे में सोचते थे। पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी कि छोटे बेटे की कल्पना से जैसे सबसे सस्ती पारिवारिक कार मारुती-800 का जन्म हुआ था उसी तरह रतन टाटा ने भी 1 लाख की कीमत वाली नैनो कार का निर्माण कराया और आम आदमी कि कार वाले सपनों में रंग भरे थे। नैनो को मारुती-800 जैसा प्रतिसाद नहीं मिला लेकिन उनकी सोच को प्रणाम किया गया और उसे एक कीर्तिमान की तरह हमेशा याद किया जाएगा। रतन टाटा अविवाहित थे, क्यों थे इसकी एक अलग कहानी है। उस पर आज लिखना मुनासिब नहीं है। लेकिन अविवाहित होने से उनके जीवन पर, उनकी उपलब्धियों पर उनकी रफ्तार पर कोई फर्क पड़ा हो ये किसी ने अनुभव नहीं किया। इस मामले में आप उनकी तुलना पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी से कर सकते हैं। उनका अविवाहित होना या उनका पढ़ा-लिखा होना कभी उस तरह विवादित नहीं हुआ जैसा आज कि जननायकों का होता है। वे एक विरासत कि मालिक थे। उनके ऊपर परिवारवाद का आरोप नहीं लगाया जा सकता जिस तरह राजनेताओं पर लगाया जाता है। हमेशा हंसमुख रहने वाले रतन टाटा के जीवन में दर्द भी कम नहीं था लेकिन उन्होंने अपना दुःख बांटा नहीं बल्कि उसे अपने उद्योग में विलीन कर सुख में बदलने की कोशिश की। वे अविवाहित तो थे ही साथ ही उन्होंने जिस युवक को अपना उत्तराधिकारी बनाया था वो भी उनके जीवनकाल में ही असमय चल बसा। रतन टाटा कि भारत के विकास में योगदान को रेखांकित करने की जरूरत नहीं है क्योंकि वे किस न किसी रूप में भारत कि जनमानस में मौजूद हैं। नमक से लेकर कलाई घडी तक टाटा ही टाटा है। भारत में जो विश्वसनीयता टाटा और बाटा को मिली वैसी विश्वसनीयता कि लिए आज दुनिया कि नंबर एक और दो क्रम कि भारतीय उद्योगपतियों को भी हासिल नहीं है। बल्कि आज तो उद्योगपतियों को लुटेरों की संज्ञा दी जाने लगी है जो सरकार की मदद से, संरक्षण से जनता को लूटने में लगे हैं। रतन टाटा कि साथ ये सब बाबस्ता नहीं है। वे निर्विवाद रहे और जो विवाद उनके साथ जोड़े भी गए उनकी उम्र बहुत छोटी साबित हुई। रतन टाटा हालाँकि उद्योगपति थे किन्तु वे राजनीतिक क्षेत्र में काम करने वालों कि लिए भी आदर्श बन सकते हैं। उन्होंने अपने जीवनकाल में ही अपने उद्योग समूह से निवृत्ति ले ली थी। वे कुर्सी से चिपके रहने में भरोसा नहीं करते थे, जबकि रजनीति में लोग आजन्म सत्ता से चिपके रहा चाहते हैं। रतन टाटा अपने उद्योग समूह कि मानद प्रमुख जरूर थे किन्तु उन्होंने जो आदर्श प्रस्तुत किया वो अनुकरणीय है। वे कैमरा प्रेमी भी नहीं थे, वे मूक प्राणियों कि मित्र थे, खासतौर पर श्वानों क। मैंने कहीं पढ़ा था कि वे सालों से मुम्बई के कोलाबा जिले में एक किताबों और कुत्तों से भरे हुए बेचलर फ्लैट में रह रहे थे। रतन टाटा कि चेरे से शर्म ऐसे टपकती थी जैसे किसी सुकुमार कि चेहरे से टपकती है। उन्हें कभी भारत के आज कि जन नायकों की तरह दिन में दस बार कपडे बदलते नहीं देखा गय। इस मामले में वे उद्योग जगत के डॉ मन मोहन सिंह थे। एक खास रंग का सूट और टाई उनकी पहचान रहे। वे चाहते तो दुनिया का महंगे से महंगा कपड़ा पहन सकते थे, लेकिन सादगी से प्रेम ने उन्हें ऐसा करने नहीं दिया। भारतरत्न जेआरडी टाटा रतन टाटा के चाचा थे। रतन टाटा का जाना लम्बे समय तक एक शून्य का कारण बना रहेगा, क्योंकि कोई दूसरा रतन टाटा पैदा होने में वक्त लगता है और कभी-कभी कोई दूसरा पहले जैसा पैदा हो भी नहीं पाता। रतन टाटा के लिए मै कोई स्मारक बनाने या कोई संसथान खोलने का सुझाव नहीं दूंगा, क्योंकि ये सब तो नेताओं की जरूरत होते हैंउद्योगपतियों की नहीं। खासतौर पर रतन टाटा जैसे ऋषि परम्परा के उद्योग पतियों को तो इसकी जरूरत होती ही नहीं है। विनम्र श्रृद्धांजलि।

संक्षिप्त खबरें

तीन पूजा स्थलों के पास धू-धू कर जलेगा रावण और मेघनाथ

प्रातः किरण संवाददाता

इसुआपुर । विजयादशमी की संध्या इसुआपुर थाना क्षेत्र के निपनिया बाजार पर 52 फीट ऊंचे दशानन रावण का पुतला दहन किया जएगा। वही प्रखंड मुख्यालय बाजार इसुआपुर तथा मुड़वा बाजारों पर भी 40 से 50 फीट ऊंचे के दशानन रावण और मेघनाथ के पुतले दहन किए जाएंगे तथा आतिशबाजी होगी। इस दौरान विधि व्यवस्था को लेकर प्रशासन काफी सजग है।

गंगा नदी मे डुबने से एक युवती की मौत

प्रातः किरण संवाददाता

डोरीगंज।स्थानीय थाना क्षेत्र के पश्चिमी बलुआ निवासी मोसाहेब राय की 17 वर्षीय पुत्री गुड़िया कुमारी की गंगा नदी मे स्नान करने के क्रम मे पैर फिसलने से गहरे पानी मे चले जाने के कारण डुबने से उसकी मौत हो गयी ।घटना गुरुवार सुबह की है जब गुड़िया नवरात्र मे प्रति दिन की भाति स्नान करने के लिए गाँव के सामने गंगा नदी मे स्नान करने के लिए गयी हुई थी तभी स्नान करने के क्रम मे उसका पैर फिसल गया और वह गहरे पानी मे चली गयी और डुबने से उसकी मौत हो गयी ।सुचना पर पहुँची स्थानीय पुलिस एवं एसडीआरएफ की टीम शव को खोजने का प्रयास कर रही है । समाचार लिखे जाने तक शव का पता नही चल सका है ।

अनियंत्रित ट्रक के चपेट में आने से एक युवक जख्मी

प्रातः किरण संवाददाता

कोपा । छपरा-सिवान मेन रोड एनएच 531 पर कोपा थाना क्षेत्र के बलडीहा गांव के समीप अनियंत्रित ट्रक ने बाइक सवार युवकों को रौंद दिया। जख्मी युवक मांझी थाना क्षेत्र के नटवर सेमरिया गांव के हरि यादव का पुत्र अर्जुन यादव उर्फ तेजस्वी बताया गया है। युवक अपने पुत्री पुत्र एव मां को लेकर बलडीहा गांव के दुर्गा मंदिर के पास पूजा करने आया था।तभी छपरा के तरफ से आ रही ट्रक ने रौंद दिया। युवक गंभीर रूप से जख्मी हो गया है। युवक जिंदगी एवं मौत से जूझ रहा है।अन्य घायलों को सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

खैरा में मेला घूमने आए युवक को चाकू मार किया घायल,पटना के निजी क्लीनिक में चल रहा इलाज

प्रातः किरण संवाददाता

नगरा।खैरा थाना क्षेत्र के खैरा बाजार में मेला घूमने आया एक युवक को आधा दर्जन युवकों ने सीटी बजाने के विवाद पर चाकू मारकर घायल कर दिया.उक्त घायल युवक नगरा थाना के अफौर रामाचौरा गांव निवासी जागेश्वर राय के 16 वर्षीय पुत्र धोनी कुमार बताया जाता है.स्थानीय लोग व परिजनों के सहयोग से घायल युवक को आनन फानन में इलाज के लिए छपरा अस्पताल में भर्ती कराया जहां चिकित्सकों ने स्थिति को नाजुक देखकर उसको बेहतर इलाज के लिए पटना रेफर कर दिया.घटना के बाद घायल युवक के चाचा जोगिंदर राय ने खैरा थाना में लिखित आवेदन लेकर शिकायत करने पहुंचे जहां आवेदन देते हुए लगभग आधा दर्जन लोगो को नामजद किया हैं.घायल युवक के चाचा ने जानकारी देते हुए बताया कि मेला में सीटी बजाने को लेकर आपस मे युवक भीड़ गए और आरोपियों ने चाकू मार धोनी को घायल कर फरार हो गया.युवक का पटना के निजी अस्पताल में इलाज चल रहा है.वहीं यहां बताते चले की समाचार प्रेषण तक खैरा थाना में आवेदन की प्रक्रिया चल रही थी.

गुप्त सूचना पर की गई छापेमारी में 10 लीटर देसी शराब जब्तअभियुक्त मौके से फरार

प्रातः किरण संवाददाता

बगहा। बगहा पुलिस जिला अंतर्गत वाल्मीकिनगर पुलिस ने पूजा पर्व के मद्देनजर शराब कारोबारियों के विरुद्ध कार्यवाई तेज कर दिया है। बुधवार को दिवा गश्ती कर रहे एएसआई राजेश कुमार चंपापुर स्थित बाजार में जब पहुंचे तो इन्हें गुप्त सूचना मिली कि ढंगरहिया गांव में देसी शराब बनाया और बेचा जा रहा है।गुप्त सूचना की जानकारी वरीय अधिकारियों को देते हुए एसएसआई ने उक्त गांव में पहुंचकर छापेमारी शुरू की लेकिन पुलिस की भनक लगते ही शराब कारोबारी घर के पीछे के दरवाजे से भागने लगा। पुलिस कर्मियों द्वारा उसका पीछा किया गया लेकिन गन्ने के खेत का लाभ उठाते हुए अभियुक्त भागने में कामयाब हो गया। अभियुक्त की पहचान सुरेश उरांव पिता सरयुग उरांव के रूप में की गई है।

छापेमारी स्थल से प्लास्टिक के 2-2 लीटर के 5 बोतलों में करीब 10 लीटर देसी चुलाई शराब बरामद किया गया है। इस छापेमारी में एएस-।आई राजेश कुमार के साथ एएसआई रविशंकर सिंह,साधना कुमारी, गुंजन कुमारी और अनन्या कुमारी शामिल थी।

कैम्प मोड में लंबित म्यूटेशन सहित अन्य राजस्व कार्यों को कराएं निष्पादित :डीएम

सप्ताह के अंदर अपेक्षित प्रगति नहीं होने पर होगी कार्रवाई

प्रातः किरण संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)। राजस्व कार्यों यथा-दाखिल खारिज, परिमार्जन, अभियान बसेरा-2, आधार सीडिंग, ई-मापी अंतर्गत लंबित मामलों का त्वरित गति से निष्पादन कराने तथा प्राप्त हो रहे आवेदनों का ससमय निष्पादन कराने को लेकर जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय की अध्यक्षता में महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक समाहरणालय सभाकक्ष में सम्पन्न हुयी।

दाखिल-खारिज (म्यूटेशन) की समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने अंचलाधिकारियों को निर्देश दिया कि कैम्प मोड में एक सप्ताह के अंदर लंबित मामलों का निष्पादन कराना सुनिश्चित करें। अंचलाधिकारी चनपटिया एवं मझौलिया अत्यंत ही गंभीरता एवं पूरी मुस्तैदी के साथ लंबित दाखिल-खारिज के मामलों को निष्पादन कराना सुनिश्चित करें।

जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि दाखिल-खारिज (म्यूटेशन) सहित अन्य राजस्व कार्य परिमार्जन, अभियान बसेरा-2, आधार सीडिंग, ई-मापी आदि से संबंधित लंबित मामलों को भी प्राथमिकता के आधार पर अविलंब तीव्र गति से निष्पादित कराना सुनिश्चित करें। राजस्व कार्यों के निष्पादन में गड़बड़ी, लापरवाही, शिथिलता बरतने वाले अधिकारियों एवं कर्मियों के विरूद्ध कठोर अनुशासनिक कार्रवाई की जायेगी।

उन्होंने अनुमंडल पदाधिकारी, भूमि सुधार उप समाहर्ता को निर्देश दिया कि राजस्व कार्यों का सतत अनुश्रवण करेंगे। साथ ही लंबित मामलों का निष्पादन त्वरित गति से कराना सुनिश्चित करेंगे। लंबित मामले रहने पर अनुमंडल पदाधिकारी एवं भूमि सुधार उप समाहर्ता जिम्मेवार होंगे। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिया कि अनुमंडल पदाधिकारी एवं भूमि सुधार उप समाहर्ता राजस्व कार्यों के निष्पादन को अत्यंत ही गंभीरता से लें। साथ ही इस कार्य में अभिरूचि नहीं लेने वाले तथा लापरवाही एवं कोताही बरतने वाले राजस्व कर्मचारी सहित अन्य कर्मियों के विरूद्ध प्रतिवेदित करें। ऐसे राजस्व कर्मचारी, कर्मियों के विरूद्ध निलंबन की कार्रवाई करने के साथ ही सुधार नहीं होने की स्थिति में बर्खास्तगी की भी कार्रवाई की जायेगी।

इस अवसर पर अपर समाहर्ता, विभागीय जांच कुमार रविन्द्र, अनुमंडल पदाधिकारी, बेतिया विनोद कुमार, अनुमंडल पदाधिकारी नरकटियागंज सूर्य प्रकाश गुप्ता, अनुमंडल पदाधिकारी, बगहा गौरव कुमार सहित भूमि सुधार उप समाहर्ता, बेतिया एवं नरकटियागंज, सभी अंचलाधिकारी आदि उपस्थित थे।

आलोक रंजन संभालेंगे राज्य संगठन आयुक्त का कार्यभार जिले के लिए गौरव पुर्ण क्षण स्काउट और गाइड में हर्ष

प्रातः किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। राज्य मुख्यालय बिहार राज्य भारत स्काउट और गाइड पटना के पत्रांक इरत्र्रलद/141/24 दिनांक 09-10-24 और कार्यालय आदेश संख्या 1414 के अलोक में जिला संगठन आयुक्त स्काउट अलोक रंजन रराज्य की प्रतिनियुक्ति पर अगले आदेश तक के लिए अतिरिक्त प्रभार के रुप में राज्य संगठन आयुक्त स्काउट के पद पर हुई है। ज्ञात हो कि आलोक रंजन ने भारत स्काउट और गाइड सारण में एक स्काउट के रूप में लक्ष्मी नारायण ब्राह्मण उच्च विद्यालय से अपनी स्काउटिंग की शुरूआत की थी और उसके बाद निरंतर अपनी योग्यता को बढ़ाते रहे हैं। उन्होंने राष्ट्रपति अवार्ड 2004 में लक्ष्मी नारायण ब्राह्मण उच्च विद्यालय छपरा के स्काउट के रूप में प्राप्त किया तदोपरान्त उन्होंने अपने ओपन यूनिट चंद्रशेखर आजाद ओपन यूनिट के स्काउट मास्टर के रूप में अपनी सेवा संस्था को देनी प्रारंभ की और 2011 में उन्होंने जिला संगठन आयुक्त स्काउट के रूप में सारण जिले के पद को लगातार सुशोभित किया है और दो बार पूर्वी चंपारण जिले के जिला संगठन आयुक्त के अतिरिक्त प्रभार में भी रहे हैं। राष्ट्रीय मुख्यालय के प्लानिंग और रिव्यू कमिटी के सदस्य के रूप में इन्होंने राज्य का प्रतिनिधित्व राष्ट्रीय मुख्यालय में सत्र 2017-2018 किया है ।एक स्काउट गाइड प्रशिक्षक के रूप में उन्होंने सहायक लीडर ट्रेनर स्काउट की योग्यता 2014 में प्राप्त की। इसके साथ ही श्री रंजन राज्य में स्टेट मीडिया क्रॉस्पोंडेंट के भी दायित्व को दो वित्तीय वर्ष 2022-2023 और 2023-2024 मे तथा राज्य के लिए बने स्ट्रेटजिक प्लानिंग कमिटी के सदस्य की भी निभा चुके हैं। वर्तमान में जिला संगठन आयोग सारण के दायित्व का निर्माण करते हुए राज्य द्वारा प्रतीक जिले में स्काउटिंग गाइडिंग की गतिविधि को जानकारी देने वाली पत्रिका (ई मैगजीन) मेरा बिहार के प्रकशन में भी उपसंपादक की भूमिका का भी निर्वहन करते हैं।ज्ञात हो कि इसके पूर्व राजेन्द्र प्रसाद सिंह(लीडर ट्रेनर स्काउट) पूर्व प्राचार्य राजेन्द्र कॉलेजिएट राष्ट्रीय मुख्यालय के कई पदों को सुशोभित करते हुए सहायक राज्य संगठन आयुक्त सारण प्रमंडल का दायित्व निर्वहन कर चुके हैं। जिले में स्काउट और गाइड के पदाधिकारी गण और स्काउट गाइड में हर्ष का माहौल है।

जदयू जिलाध्यक्ष ने विभिन्न गावों में दुर्गा पूजा समिति से की मुलाकात कर दीं नवरात्रि की शुभकामनाएं

प्रातः किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। जदयू जिलाध्यक्ष अलताफ आलम राजू ने मढ़ौरा विधानसभा क्षेत्र के नगरा और मढ़ौरा प्रखण्ड के विभिन्न गांवों का दौरा करते हुए दुर्गा पूजा के शुभ अवसर पर पूजा पंडाल के अध्यक्ष और जनता से मिलकर नवरात्रि ,दुर्गा पूजा की बधाई दी।उन्होंने नगरा प्रखण्ड के अरवां कोठी, पटेरा, सैदपुर, अफौर, धूपनगर, रघुनाथपुर, कनार हरिहरपुर, डूमरी, गोविंदपुर और खैरा गांवों में जाकर दुर्गा पूजा समिति के सम्मानित सदस्यों से मुलाकात की और उन्हें बधाई दी। इसके साथ ही मढ़ौरा प्रखण्ड के मोथहा रामपुर, नरहरपुर, नरहरपुर मठिया, गौरा, अगहरा, चंदा और शेरपुर सहित अन्य गांवों में भी पहुंचकर उन्होंने दुर्गा पूजा समिति और वहां की सम्मानित जनता से मुलाकात की और शुभकामनाएं दीं।इस मौके पर अलताफ आलम राजू ने कहा कि दुर्गा पूजा हमारी सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं का प्रतीक है,जो समाज में शांति, सद्भाव और आपसी भाईचारे का संदेश फैलाती है। उन्होंने नवरात्रि के इस पावन अवसर पर समाज में एकता और सौहार्द बनाए रखने का आह्वान किया।पूजा समितियों और ग्रामीणों ने जिलाध्यक्ष का गर्मजोशी से स्वागत किया और अपनी समस्याओं और सुझावों को साझा किया।जिलाध्यक्ष ने सभी को आश्वासन दिया कि उनकी समस्याओं का समाधान जल्द ही किया जाएगा और वे हमेशा जनता की सेवा के लिए तत्पर रहेंगे।इस अवसर पर जदयू प्रखण्ड अध्यक्ष अनिल सिंह,जिला महासचिव ई0 प्रभास शंकर,अरुण सिंह ,रवि प्रकाश ,सोनू आलम ,रियाजउद्दीन मंसूरी,भोलू सिंह,आफताब आलम इत्यादि उपस्थित थे

शारदीय नवरात्र सप्तमी को डोली कहार के साथ मां दुर्गा का बुलावा हुआ दरबार में

प्रातः किरण संवाददाता

बगहा। नेपाल और उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित पश्चिमी चम्पारण जिलें के रामनगर में प्रत्येक वर्ष की भाती इस वर्ष भी शारदीय नवरात्र के सप्तमी कों डोली कहार के साथ मां दुर्गा का बुलावा राजदरबार में हुआ है । रामनगर के राजघराने से माता रानी का बुलावा विधि विधान पुर्वक सदियों से होती चली आ रहीं है । बताया जा रहा है की नवरात्र के सप्तमी कों हर जगह पुजा पंडालों में माँ के आगमन को लेकर तैयारी है वहीं बेल के वृक्ष से डाली पुजा कर विभिन्न पंडालों तक लाया जाता है।

इसी दौरान रामनगर में एक अनोखा डोली पुजा देखने बनता है । दरअसल रामनगर के प्रसिद्ध कोट बंजरीया माई स्थान से रामनगर राजघराने की दुरी करीब 4 किलोमीटर की है जहाँ सबसे अधीक भक्तो की भीड़ उमड़ती है। रामनगर राज घराने से विधी पुर्वक बुलावा एक दिन पुर्व संध्या में ही कोट बंजरीया माई स्थान पर निमंत्रण भेजा जाता है। सप्तमी कों पुजारी और श्रद्धालु माँ की डोली पुजन कर राज घराने के लिए निकलते हैं और बिच रास्ते में ही राजा परिवार से माँ की डोली का पुजन करने के बाद राजा अपने साथ ले जाते हैं।

वहीं इस पुजा को देखने के लिए हजारों भक्तो की भीड़ उमड़ पडतीं है। महिलाएं हलवा पूड़ी बनाकर श्रद्धा भक्ति से माता रानी को चढ़ाती है । यह परम्परा रामनगर राज घराने में सदियों से चली आ रहीं है लिहाजा शारदीय नवरात्र में आज माँ की भव्य डोली यात्रा के हजारों भक्त गवाह बनें। बता दें की नवरात्री के आखिरी दिन विजयादशमी का त्यौहार बुराई पर अच्छाई के प्रतिक रूपी मनाया जायेगा लिहाजा पुलिस प्रशासन की ओर से कड़ी सुरक्षा व्यवस्था कर निगरानी में पूजा संपन्न कराने की तैयारी चल रहीं है ताकि आस्था और भक्ति में श्रद्धालुओं कों कोई दिक्कतें न हों ।

तेजस्वी यादव पर बीजेपी द्वारा लगाया गया आरोप ओछी मानसिकता का प्रतीक

छपरा कार्यालयः नेता प्रतिपक्ष व पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव पर पाँच देश रत्न मार्ग आवास खाली करने के क्रम में उसे नुकसान पहुँचाने का भाजपा द्वारा लगाया गया आरोप निंदनीय व आधारहीन है । यह पिछड़े समाज के प्रति उनकी घृणा का परिचायक है । उक्त बाते सारण राजद जिला प्रवक्ता डॉ रंजन ने प्रेस विज्ञप्ति के द्वारा कही । ध्यातव्य है कि तेजस्वी यादव ने कुछ दिन पूर्व उपमुख्यमंत्री आवास खाली किया है । इस क्रम में भाजपा द्वारा आरोप लगाया गया है कि वह आवास से कीमती सामान समेत नल, वाश बेसिन आदि लेकर चले गए हैं । डॉ रंजन ने आगे कहा कि भाजपा सदा से ही दलित-पिछड़े समाज से आने वाले जनप्रतिनिधियों पर ऐसे घृणित व शर्मनाक आरोप लगा उनका चरित्र हनन करने का प्रयास करती रही है । उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री पर वह टोंटी चोरी का आरोप लगा चुकी है किंतु बिहार में उसका यह कुत्सित षडयंत्र असफल होगा । दलित-पिछड़ों की अस्मिता पर कीचड़ उछलने वाली भाजपा को आगामी बिहार विधानसभा चुनाव में जनता करारा जवाब देगी । पार्टी द्वारा इस मुद्दे पर शीघ्र कानूनी नोटिस भी भेजा जाएगा । भाजपा के इस कृत्य की निंदा करने वालों में राजद जिला महासचिव सुमित्रा चौरसिया, सी ए अमित, श्याम जी प्रसाद, पूर्व विधायक मुद्रिका राय, इंजीनियर निशांत इत्यादि प्रमुख रहे ।

दुर्गा पूजा में धार्मिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन

इसुआपुर । प्रखंड के विभिन्न दुर्गा पूजा समितियों द्वारा धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन किए गए हैं। सढ़वारा चहपुरा बाजार पर जय माता दी पूजा समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रम में गोरखपुर की रामलीला मंडली द्वारा जहां रामलीला प्रस्तुत किया जा रहा है। वहीं इसुआपुर , मुड़वा, निपनिया बाजारों पर दुर्गा पूजा पंडालों के परिसर में नाटक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन किए गए हैं। रामलीला देखने के लिए खासकर महिलाओं तथा बच्चों की भारी भीड़ इकट्ठी हो रही है। सढ़वारा बाजार पर मां दुर्गा की 15 फीट ऊंची मूर्ति तथा अन्य देवी देवताओं की मूर्तियां लोगों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। कार्यक्रम का संचालन मंदिर के पुजारी कृष्णा गिरी, पूर्व मुखिया राम प्रकाश दास, अमित कुमार शर्मा, शिक्षक विकास गौरव, पैक्स अध्यक्ष राजेश राय, संजय कुशवाहा, बबीता देवी, अजय पटेल,कृष्णा पीड़ित, गुरुदेव राय व अन्य कर रहे हैं।

सरपंच संघ अध्यक्ष प्रतिनिधि धीरज सिंह ने फीता काट कर विधिवत मेले में का किया उद्घाटन

प्रातः किरण संवाददाता

अमनौर । शारदीय नवरात्र के सप्तमी तिथि को माँ दुर्गा का पट खुला।माता रानी के दर्शन के लिए दर्शको की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। प्रखंड के धरहरा पंचायत स्थित शेखपुरा गांव में बाबा केश्वनाथ दुर्गा पूजा मेला समिति के तत्वधान में मूर्ति स्थापित की गई है।मेला का उद्घाटन मुख्य अतिथि सरपंच प्रतिनिधि सह सरपंच संघ अध्यक्ष धीरज कुमार सिंह ने फीता काटकर किया।कार्यक्रम की अध्यक्षता अध्यक्षता संजीत सिंह उर्फ बुलेट सिंह मंच संचालन चंद्रमोहन सिंह ने किया।

समिति के लोगो ने आये अतिथियों को अंगवस्त्र से सम्मानित किया ।धीरज सिंह ने कहा महिषासुर के कहर से परेशान होकर देवताओ ने देवी दुर्गा से अत्याचार को खत्म करने की बिनती की।जिससे माँ दुर्गा ने असुर से दुनिया को रक्षा की थी। त्योहार हमारी संस्कृति की पहचान है.जो हमें जोड़ने का काम करती है. पर्व त्यौहार के जरिए हमारी पीढ़ी को काफी कुछ सीखो और समझने का मौका मिलता है.इस मौके पर

धरहरा सरपंच प्रतिनिधि मनोज सिंह,समाजसेवी मयंक सिंह,पूर्व जिला परिषद विकर्मा मांझी,मुखिया सतेंद्र मांझी, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष जयंत सिंह, नशामुक्ति के अध्यक्ष बिमल सिंह, हरेंद्र चौहान, मनन सिंह विक्की सिंह,सुरजीत सिंह मनीष कुमार, पवन सिंह, अजीत सिंह,भरत सिंह, रजनीश राय, अतुल सिंह, मनोज सिंह, कौशल सिंह समेत सैकड़ो भक्त मौजूद थे।

मंडल कारा बेतिया व मेडिकल कॉलेज में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)।जिले में गुरुवार को विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर मंडल कारा बेतिया व मेडिकल कॉलेज में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया साथ ही मेडिकल कॉलेज में सैकड़ों लोगों के स्वास्थ्य की जाँच गैर संचारी रोग पदाधिकारी डॉ मूर्तजा अंसारी के देखरेख में की गई। मौके पर मानसिक तनाव से बचने के बारे में डॉ अंसारी ने जानकारी देते हुए कहा की अस्वस्थ जीवनशैली व तनावपूर्ण जीवन जीने के कारण आज 10 में 5 लोग मानसिक रोग से पीड़ित है, वहीं प्रो डॉ हेमंत, क्लिनिकल साइकोलॉजीस्ट डॉ वरुण कुमार, अभिषेक कुमार ने कहा की विभिन्न मानसिक रोगों यथा साइकोसिस, न्यूरोसिस, एपिलेप्सी (चमकी), अवसाद, डिमेंशिया, सब्सटेंस एब्यूज आदि के बारे में मरीजों को जानकारी तथा बचाव के उपायों के बारे में विस्तृत चर्चा की गईं ताकि लोग इन बीमारियों से सुरक्षित रहें। डॉ ने तनावमुक्त जीवनशैली अपनाने पर बल दिया। उन्होने बताया कि कुंठा, अवसाद एवं तनाव सभी गम्भीर बीमारियों जैसे उच्च रक्तचाप, माइग्रेन, मधुमेह इत्यादि की जननी है।

स्वस्थ जीवन शैली अपनाने पर बचेंगे मानसिक रोगों से:

डॉ मूर्तजा अंसारी ने कहा कि तनाव से मुक्त रहने के लिए नियमित व्यायाम, प्राणायाम, स्वस्थ जीवन शैली अपनायें व स्वस्थ जीवन बसर करें।इसे अपनाने पर ही मानसिक रोगों से बच सकते है। उन्होंने कहा की स्वास्थ्य संस्थानों पर बैनर-पोस्टर, हैंडबिल, पम्पलेट के माध्यम से जागरूक किया जा रहा है। इस अवसर पर मण्डल कारा के जेल सुपेरिंटेंडेंट, एसोसिएट प्रो डॉ हेमंत कुमार , क्लिनिकल साइकोलॉजीस्ट डॉ वरुण कुमार , साइकोलॉजीस्ट अभिषेक कुमार, जेल स्टाफ व अन्य स्वास्थ्यकर्मी उपस्थित थे।

गंडक नदी के कटाव स्थल का निरीक्षण एडीएम ने किया

मकेर (सारण) प्रखंड के सीमावर्ती गांव लगुनिया में हो रहे गंडक नदी के धारा से प्रभावित गांव लगुनिया ,बघाकोल ,पोखरी का निरीक्षण सारण उपसमाहर्ता ने बुधवार को किया ।विदित हो की कोशी बराज से अत्यधिक पानी छोड़े जाने से निचले हिस्से में बाढ़ की हालात हो गए थे ,पानी कम हुआ है तो गंडक नदी अपनी धारा गांव की तरफ कर दी है जिसकारण ग्रामीणों को चिंता बढ़ गई है जबकि जलसंसाधन विभाग द्वारा निरोधात्मक कार्रवाई की गई है इसके बाद भी कटाव तेजी से हो रहा है । आज जिला के आला अधिकारियों द्वारा निरीक्षण किया गया है ,निरीक्षण में एडीएम ,डीएसपी ,मकेर बीडीओ ,सीओ ने पहुँच कर स्थल निरीक्षण किया ।स्थानीय मुखिया अनिल सिंह द्वारा कटाव को रोकने हेतु हर संभव प्रयासरत है ।मीडिया द्वारा भी ग्रामीणों को चिंता को बखूबी प्रकाशित किया जा रहा है ताकि समय रहते जिला प्रशासन एवम जलसंसाधन विभाग द्वारा स्थाई एवम कारगर उपाय करें ताकि लगुनिया गांव नदी में सम्माहित न हो जाए।

दशहरा (दुर्गा पूजा) को शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न कराने को लेकर किया गया फ्लैग मार्च

बेतिया, प्रातः किरण। दशहरा त्यौहार को शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न कराने के उदेश्य से जिलाधिकारीदिनेश कुमार राय तथा बेतिया पुलिस अधीक्षक शौर्य सुमन के नेतृत्व में बेतिया प्रखंड के विभिन्न स्थलों पर फ्लैग मार्च किया गया। फ्लैग मार्च में एसडीएम, बेतिया, श्री विनोद कुमार सहित अन्य प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारी शामिल रहे। इसके साथ ही बेतिया शहर अवस्थित कई दुर्गा पूजा पंडालों का मुआयना भी किया गया।

इस दौरान जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक द्वारा लोगों से शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण तरीके से पर्व को मनाने की बात कही गयी। जिलाधिकारी द्वारा जिलेवासियों से अपील की गयी है कि आपसी भाईचारे के साथ दशहरा त्यौहार मनाएं। जिला प्रशासन की पूरी टीम आपके साथ है। जिलेवासी अफवाहों पर ध्यान नहीं देंगे तथा अफवाह फैलाने वाले असामजिक तत्वों के बारे में नजदीकी थाने अथवा जिला प्रशासन को सूचित करेंगे ताकि त्वरित गति से कार्रवाई करते हुए निरोधात्मक कार्रवाई की जा सके।

सांसद प्रतिनिधि ने बाढ़ग्रस्त क्षेत्र का किया दौरा,किया राहत सामग्री का वितरण

प्रातः किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय।सारण जिला के दरियापुर प्रखंड के बाढ़ प्रभावित इलाके का दौरा कर प्रदेश कार्य समिति सदस्य राकेश सिंह ने जायजा लिया और बारवे पंचायत तुर्की वार्ड 11 मे जाकर पीड़ित परिवार के बीच चूड़ा मीठा और बिस्किट का लगभग 150 परिवारों के बीच वितरण किया ।

प्रदेश कार्य समिति सदस्य सह सांसद प्रतिनिधि राकेश सिंह ने अधिकारी से भी बात कर लोगो को उचित लाभ पहुंचाने और मदद करने की बात कही और कहा कि यह प्रेरणा हमें सांसद राजीव प्रताप रूडी से मिली और रूडी भी बाढ़ छेत्र मे हर संभव मदद पहुंचे इसके लिए लगातार मॉनिटरिंग कर रहे है ।अधिकारी से बात कर पल पल की रिपोर्ट लें रहे है कि सभी बाढ़ पीड़ितो को सहायता मिले।

इस अवसर भाजपा नेता संतोष शर्मा, योगेंद्र सिंह ,सुमंत तिवारी, राजेंद्र सिंह, मोनू सिंह ,जीतेन्द्र गिरि,सरोज सिंह, कृष्णा राय, बर्जेश सिंह सहित सैकड़ो लोग उपस्थित थे और कहा कि यह समय राजनीतिक करने का नहीं है यह लोगो के इस आपदा की घड़ी मे सहयोग करने का समय है सभी लोगो को सहयोग करना चाहिए कुछ लोग अपने राजीनीतिक चमकाने मे लगे हुए है और कहा की महागठबंधन की लोग मुख्यमंत्री जी के योजना का ही लोगो को लाभ दिला कर खुद अपना क्रेडिट लें रहे है ऐसे कार्य से बचना होगा और केवल हवा बाजी से काम नहीं होगा लोगो को अपने स्तर से भी सहयोग करना चाहिए।

एसएसबी ने बाढ़ पीड़ितों के बांटे दवा और पौष्टिक आहार

प्रातः किरण संवाददाता

बगहा। बगहा पुलिस जिला के एसएसबी 21वीं बटालियन लगातार बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए आगे आ रही है। खाद्य सामग्री के साथ बाढ़ पीड़ितों के स्वास्थ्य का ख्याल रखते हुए उन्हें पौष्टिक आहार न्यूट्रिमिक्स फूड भी दे रही है ताकि बीमारी से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता पीड़ित प्राप्त कर सके।बतादें की नारायणी गंडक नदी ने इंडो नेपाल सीमा के दुर्गम क्षेत्र पर बसे कान्ही टोला, बिन टोला,रहुआ टोला,चकदहवा, झंडू टोला के करीब 250 परिवार को बाढ़ के चपेट में ले लिया था। बाढ़ के समय भी 21 वीं बटालियन के जवानों ने इन पीड़ितों की जान माल की रक्षा की थी और बाढ़ उतर जाने के बाद भी लगातार इनकी सहायता के लिए आगे आकर खाद्य सामग्री के साथ साथ मेडिकल कैम्प लगाकर स्वास्थ्य जांच कर रही है और निशुल्क दवा का वितरण कर रही है। जानकारी के लिए बतादूँ की एसएसबी के जवान बाढ़ पीड़ितों के घर घर जाकर उनको सहायता मुहैया करा रही है।बतातें चलें कि इन सब के बीच एसएसबी के जवान लोगों से नशा मुक्त भारत अभियान व बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के तहत ग्रामवासियों को जागरूक भी कर रही है। इस मौके पर एम टी मेरेन उप कमान्डेंट,डा.एम,सहायक कमांडेंट चिकित्सा, निरीक्षक/सामान्य राजेंद्र सिंह, उप निरीक्षक /सामान्य एफ निधि पाल एवं अन्य बलकर्मी मौजूद रहे।

जिले में राज्य स्तरीय विद्यालय कबड्डी तथा कुश्ती प्रतियोगिता का होगा आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)। खेल विभाग, बिहार राज्य खेल प्राधिकरण बिहार पटना तथा जिला प्रशासन पश्चिम चंपारण के संयुक्त तत्वाधान में राज्य स्तरीय विद्यालय कबड्डी आयु वर्ग अंडर-19 बालक की प्रतियोगिता दिनांक 15 -20 अक्टूबर 2024 तथा कुश्ती आयु वर्ग अंडर 17, 19 ग्रीको रोमन पद्धति बालक की प्रतियोगिता दिनांक 18-20 अक्टूबर 2024 तक क्रमशः महाराजा स्टेडियम एवं इंडोर बैडमिंटन हॉल बेतिया में आयोजित की जाएगी।

राज्य स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता में बिहार प्रदेश के 38 जिले के लगभग 550 खिलाड़ी व 76 टीम प्रबंधक, टीम कोच तथा कुश्ती प्रतियोगिता में 800 खिलाड़ी व 76 टीम प्रबंधक, टीम कोच शिरकत करेंगे।

इस खेल के सफल संचालन के लिए विभाग की ओर से खेल विधा कबड्डी से 18 तथा कुश्ती से 08 तकनीकी पदाधिकारी प्रतिनियुक्ति किए गए हैं।

इसके सफल आयोजन को लेकर जिला पदाधिकारी दिनेश कुमार राय ने समीक्षात्मक बैठक की तथा जिला खेल पदाधिकारी को प्रतियोगिता से संबंधित सभी तैयारियां ससमय पूर्ण करने का दिशा निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि किसी के प्रभाव में आकर पक्षपात नहीं होनी चाहिए। जिलाधिकारी ने सिविल सर्जन को आयोजन स्थल पर प्रतिदिन प्राथमिक उपचार करने हेतु मेडिकल टीम व एंबुलेंस सहित दवा की व्यवस्था, नगर आयुक्त नगर निगम बेतिया को साफ-सफाई, चलंत शौचालय, पानी की व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया।

इसके साथ ही अनुमंडल पदाधिकारी सदर को दंडाधिकारी सहित पुरुष पुलिस बल की व्यवस्था, जिला शिक्षा पदाधिकारी को स्वागत गान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, निबंधन, प्रमाण पत्र लेखन, आवासन, पुरस्कार व्यवस्था, डीपीआरओ को उक्त खेल प्रतियोगिता को स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशन करना, जिला कल्याण पदाधिकारी को खिलाड़ियों हेतु गुणवत्तापूर्ण भोजन की व्यवस्था की व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देश दिया।इस दौरान बताया गया कि जिला खेल पदाधिकारी को जूरी आफ अपील, मार्च पास्ट समिति, कोर्ट निर्माण समिति का नोडल पदाधिकारी बनाया गया है जबकि खिलाड़ियों के आयु से संबंधित जांच हेतु असैनिक शल्य चिकित्सक की अधीनस्थ तीन सदस्यीय आयु-सह-चिकित्सीय जांच समिति का गठन कर दिया गया है ।

दुर्गा पूजा समिति के सदस्यों के बीच टीशर्ट का हुआ वितरण

प्रातः किरण संवाददाता

माँझी प्रखंड के घोरहट पंचायत अंतर्गत नव युवक दुर्गा पूजा समिति सलेमपुर के सदस्यों के बीच गुरुवार को एक सभा का आयोजन कर पंचायत के पंचायत समिति सदस्य एवं भाजपा के अनुसूचित जनजाति के जिलाध्यक्ष प्यारे अंगद द्वारा अंग वस्त्र का वितरण किया गया।

इस अवसर पर प्यारे अंगद ने बताया कि पूजा समिति में कार्य करनेवाले दो दर्जन युवाओं को भगवा टीशर्ट दिया गया। उन्होंने बताया की दुर्गा मंदिर में अधिक भीड़ होने के कारण कर्मियों की पहचान नहीं हो पाती थी। अब टीशर्ट पहनकर समिति के सदस्य अपना कार्य करेंगे। ताकि भीड़ में भी उनलोगों की पहचान हो सके।

इस अवसर पर गांधी कुमार, बबलू साह, राजीव कुमार, मन्तोष कुमार, दीपक कुमार, बिक्की कुमार, राहुल कुमार, जुगुल कुमार, नवीन सिंह, दीपांशु कुमार, कुंदन कुमार, आकाश कुमार, राजन कुमार, रोहित कुमार, विशाल कुमार, सचिन कुमार, मनीष कुमार सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर मंडल कारा में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

सासाराम(रोहतास) : बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार पटना के पत्र के आलोक में तथा जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार रोहतास अनुज कुमार जैन के निर्देशानुसार 10 अक्टूबर गुरुवार को विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर मंडल कारा सासाराम में विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें विधिक जागरूकता के तहत पैनल अधिवक्ता मो इकबाल हुसैन ने बंदियों को मानसिक स्वास्थ्य से होने वाली परेशानी एवं उपचार के बारे में विधिवत रूप से जागरूक किया गया। कार्यक्रम में बंदियों को मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरुक किया गया। साथ ही साथ स्वास्थ्य विभाग द्वारा मंडल कारा में स्वास्थ्य शिविर का भी आयोजन किया गया। जिसमे बंदियों को मानसिक स्वास्थ्य की संबंधित समीक्षा की गई एवं बंदियों को रोगों से संबंधित दवाओं का वितरण किया गया। मौके पर जेल अधीक्षक सुजीत कुमार राय, उपाधीक्षक के के झा, जेल डॉक्टर जन्मजेय कुमार, सदर अस्पताल के चिकित्सा पदाधिकारी डॉ राजीव रंजन, डॉ अजय कुमार, डॉ प्रेम प्रकाश हरि, डॉ माधवी निधि, डॉ विपुल कुमार सिंह, धर्मदेव सिंह, राजीव कुमार आदि उपस्थित रहे।

दिनारा प्रखंड के दस बकायेदार उपभोक्ताओं पर नीलामवाद दर्ज

प्रातः किरण संवाददाता

बिक्रमगंज(रोहतास) : विद्युत आपूर्ति अवर प्रमंडल बिक्रमगंज अंतर्गत सभी प्रशाखाओं में राजस्व वसूली को लेकर लगातार अभियान चलाया जा रहा है । जिसमें बिजली चोरी को लेकर जुमार्ना एवं प्राथमिकी दर्ज की जा रही है । बकायेदार उपभोक्ताओं के विरुद्ध विभाग द्वारा सख्त कार्रवाई करते हुए विद्युत कनेक्शन काटा जा रहा है । बकायेदार उपभोक्ता जो विद्युत विपत्र की राशि जमा नहीं किये हैं ,उनपर नीलामवाद की कार्रवाई की गई है । बताते चलें कि प्रखंड दिनारा क्षेत्र अंतर्गत ग्राम कौवाखोच निवासी भरत सिंह, खनिता निवासी गीता देवी , प्रदीप साह,भरत मुनि पांडेय,बलिया निवासी ललन सेठ, करहंसी निवासी रामावतार सिंह,जय प्रकाश राय, समहुति निवासी निर्मल कुमार पांडेय, सहुआरी निवासी ललन सिंह एवं कृष्णा सिंह द्वारा बकाया राशि जमा नही करने के कारण बिहार और उड़ीसा लोक मांग वसूली अधिनियम 1914 के तहत नीलामपत्र पदाधिकारी के यहां नीलामवाद दायर कर दिया गया है । सहायक विद्युत अभियंता बिक्रमगंज राज कुमार द्वारा बताया गया कि पूर्व में 41 बकायेदार उपभोक्ताओं पर नीलामवाद की कार्रवाई करने हेतु नीलामपत्र पदाधिकारी के कार्यालय में तथ्य विवरणी उपलब्ध कराई गई थी ।जिसके पश्चात चालू माह में 10 और उपभोक्ताओं पर नीलामवाद की कार्रवाई की गई है । विद्युत आपूर्ति अवर प्रमंडल बिक्रमगंज क्षेत्र अंतर्गत अबतक 51 बकायेदार उपभोक्ताओं पर नीलामवाद की कार्रवाई की गई है ।

थानाध्यक्ष एवं सीओ ने पूजा पंडालो का किया मुआयना

प्रातः किरण संवाददाता

गडहनी। अंचलाधिकारी दीपा कुमारी एवं प्रभारी थानाध्यक्ष गडहनी कुमार गौरव के द्वारा गुरूवार को नगर पंचायत गडहनी के विभिन्न पूजा पंडालो का मुआयना किया गया ।इस दौरान थानाध्यक्ष ने विधि ब्यवस्था, सीसीटीवी कैमरा, पूजा पंडालो मे भुलेन्टियर सहित अन्य कई ब्यवस्थाओं का जायजा लिया साथ ही पूजा कमिटी के अध्यक्ष सचिवो को जारी गाइडलाइन से संबंधित आवश्यक दिशा-निर्देश दिया ।वहीं उन्होंने कहा कि शान्ति और सौहार्द के बीच पूजा सम्पन्न कराने को लेकर नगर वासियों का सहयोग अपेक्षित है ।प्रशासन की पैनी नजर असमाजिक तत्वों, उपद्रवियों, शराबियों पर है ।पूजा मे खलल डालने वालों को किसी भी हालत मे बख्शा नही जायेगा ।निरीक्षण दल मे गडहनी पुलिस सहित जदयू जिला मीडिया समन्वयक मोहम्मद इमरान अहमद उर्फ सोनु शामिल थे।

देश के उद्योगपति रतन टाटा और आरएसएस के पूर्व प्रचारक संजय तिवारी के निधन पर भाजपा भोजपुर द्वारा शोक संवेदना व्यक्त की गई

प्रातः किरण संवाददाता

आरा । भारतीय जनता पार्टी भोजपुर द्वारा देश के महानतम उद्योगपति और समाजसेवी रतन टाटा के मृत्यु होने पर शोक संवेदना व्यक्त किया गया। भाजपा जिलाध्यक्ष सहित नेताओं ने रतन टाटा को देश के विकास मे अहम योगदान बताते हुए शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि आजादी के बाद देश मे यदि चतुमुर्खी विकास होना शुरू हुआ तो उसमे सबसे बड़ा योगदान रतन टाटा का रहा। वे देश के महान रत्न थे।

काराकाट में पूजा पंडालों पर जुटी श्रद्धालुओं की भीड़

प्रातः किरण संवाददाता

काराकाट (रोहतास) : काराकाट प्रखंड क्षेत्र में शारदीय नवरात्रि के सप्तमी पर मां दुर्गा की आराधना का भव्य आयोजन कर बुधवार को देर शाम से श्रद्धालुओं के लिए मां दुर्गा के कालरात्रि स्वरूप की पूजा अर्चना कर सभी दुर्गा पूजा पंडालों में विधि-विधान से पट खोल दिए गाय है ।जिससे सभी पूजा पंडालों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ मां के दर्शन के लिए उमड़ पड़ी। दर्शन के लिए पंडालों में लगी कतारों से एनएच 120 मुख्य मार्ग पर जगह जगह जाम जैसी स्थिति पैदा कर दी। जिससे नगर के अंदर वाहनों से आने वाले श्रद्धालुओं को इस भीड़ के कारण कठिनाई का सामना करना पड़ा ।लेकिन पूजा पंडाल व चौक-चौराहों पर पुलिस प्रशासन व समिति सदस्यों की मुस्तैदी से तैनाती ने श्रद्धालुओं से लगी भिड़-भाड़ को नियंत्रण कर शांति पूर्वक दर्शन करने में सफल दिखी । पूरे प्रखंड में दुर्गा की श्लोक और मां की वंदना से वातावरण भक्ति में डूबा नजर आया। पूजा पंडालों को रंग-बिरंगी रोशनियों से सजाया गया है जो भक्तों को आकर्षित कर रहा हैं। प्रखंड के गोडारी, करूप, सातों परासी, कूरूर, मोथा, जयश्री, बेलवाई, सकला सहित अन्य आकर्षक पूजा पंडालों और मां दुर्गा की भव्य प्रतिमाओं के दर्शन के लिए सड़कों पर जनसैलाब सप्तमी रात से ही देखने को मिल रही है। वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में भी दुर्गा पूजा का उल्लास देखने को मिला, जहां विभिन्न स्थानों पर सजाए गए पूजा पंडाल लोगों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। सप्तमी के देर संध्या विशेष पूजा आराधना कर पट खुलते ही श्रद्धालु मां के दर्शन के लिए पंडालों की ओर दौड़ पड़े। प्रखंड में 20 से ज्यादा दुर्गा पूजा पंडाल स्थापित किए गए हैं, जो इस पर्व को और भी भव्य बना रहे हैं। प्रखंड के नगर से लेकर कस्बाई इलाकों में भव्य पंडाल बनाकर मां दुर्गा की पूजा की जा रही है। पूरा प्रखंड रंग-बिरंगी रोशनी से जगमग है। सभी पंडालों के पट खुल गए हैं। मां के दर्शन-पूजन के लिए पंडालों में भक्तों की भीड़ जुट रही है। हर गली-मुहल्ले से लोग निकलकर सीधे पंडालों तक पहुंच रहे हैं। चौक-चौराहों से लेकर गलियों तक में भीड़-भाड़ है।

महाअष्टमी पर आरण्य देवी के दर्शन के लिए भक्तों का उमड़ा जनसैलाब

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। शारदीय नवरात्र के आठवें दिन गुरुवार को देवी दुर्गा के अष्टम स्वरूप महागौरी की पूजा-अर्चना की गई। महाअष्टमी को पूजन करने के लिए पूजा पंडालों एवं मंदिरों में भारी भीड़ उमड़ी रही। मां आरण्य देवी मंदिर विकास ट्रस्ट के मीडिया प्रभारी कृष्ण कुमार ने बताया कि शहर की अधिष्ठात्री देवी मां आरण्य देवी के मंदिर में पूजन एवं दर्शन को लेकर गुरुवार की अहले सुबह से ही महिला-पुरुष श्रद्धालु भक्तों का सैलाब उमड़ पडा। लोगों को देवी दर्शन के लिए घंटों कतार में खड़ा रहना पड़ा। मां आरण्य देवी की प्रतिमा एवं मंदिर परिसर को आकर्षक ढ़ंग से फूल से सजाया गया था। भीड का आलम यह था कि महिला-पुरुष भक्तो की लाइन आरण्य देवी, व्यापार मंडल से आगे तक पहुंच गई। पूजन का सिलसिला शाम करीब साढ़े सात बजे तक चला। दोपहर ढाई बजे तक भक्त एवं श्रद्धालुओं की भीड़ कुछ कम हुई। लेकिन पुनः तीन बजे के बाद मंदिर में दर्शन करने वालों की भीड़ उमड़ पड़ी। यह सिलसिला शाम तक चला। मां आरण्य देवी मंदिर विकास ट्रस्ट एवं पुलिस-प्रशासन द्वारा श्रद्धालु भक्तों की भारी भीड़ को देखते हुए मंदिर परिसर में दीप जलाने एवं नारियल फोड़ने की सख्त मनाही की गई थी। पुलिस-प्रशासन की टीम, आरण्य देवी मंदिर विकास ट्रस्ट के पदाधिकारी, सदस्य, सेवक एवं स्थानीय वॉलेंटियर लोगों को कतारबद्ध कराकर मां आरण्य देवी के दर्शन करा रहे थे। भक्त आरण्य देवी मैया की जय एवं सच्चे दरबार की जय के जयकारे लगा रहे थे। इस मौके पर मां आरण्य देवी मंदिर ट्रस्ट के मुख्य संरक्षक भीम सिंह भवेश, सचिव अरविंद कुमार पांडेय, कोषाध्यक्ष श्रवण कुमार जालान, पुजारी रंगनाथ मिश्र, संजय मिश्र, मनोज कुमार पांडेय, ट्रस्टी राजीव रंजन, अशोक कुमार सिंह, गजेंद्र सिंह, संतोष कुमार सिंह, नवीन प्रकाश, जय शंकर तिवारी, गोलू बाबा, सुरेश प्रसाद, रिशु कुमार उर्फ सोनू, मुकेश पोद्दार, रवि शंकर चौधरी, रानु चौरसिया समेत अन्य थे।

सदर अस्पताल के आंख आउटडोर विभाग में विश्व दृष्टि दिवस मनाया गया

प्रातः किरण संवाददाता

आरा । एसीएमओ भोजपुर, डॉ के एन सिन्हा की अध्यक्षता में विश्व दृष्टि दिवस ,सदर अस्पताल के आंख आउटडोर विभाग मे मनाया गया। डॉ सिन्हा ने कहा की दृष्टि है तो ,सृष्टि है। ,यानी दुनिया का आनंद हम तभी ले सकते हैं जब आंखों में दृष्टि हो, रोशनी हो ।हमें हर हाल में अंधापन से आंख को बचाना है अंधापन का इलाज प्रारंभिक अवसर पर ही करना है। कभी भी आंख के मामले में ,तकलीफ में असवधानी नहीं करना है ।बल्कि आंख रोग विशेषज्ञ के पास तुरंत ,अभिलंब पहुंच जाना है ।चाहे आंखों में लाली हो ,आंख में पानी आता हो, आंख में कीचड़ हो या आंख की रोशनी कम लगे तो। कई आंखों का बीमारी होता है और कभी-कभी सिस्टमिक बीमारी में भी जैसे डायबिटीज,मधुमेह, ब्लड प्रेशर ,हाइपरटेंशन में भी आंख प्रभावित होता है इसलिए कभी भी बड़ी बीमारी में आंखों का विशेष ध्यान रखें और उसका तुरंत जांच और इलाज कराएं। आंख और इसकी रोशनी प्रकृति द्वारा प्रदत्त एक विशेष वरदान है, हमें दुनिया का ,जीवन का आनंद लेने के लिए। आज विश्व दृष्टि दिवस पर हमें अपनी आंखों और दूसरे की भी आंखों पर सावधानी बरतने एवं प्रारंभिक कष्ट में इलाज करने का व्रत लेना है। खानपान पर भी विशेष ध्यान देना है जैसे ताजीफल फूल और सब्जी, सलाद आंखों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है ।फास्ट फूड और अत्यंत तेल मसाला चीज, धुआं , प्रदूषण भी आंखों पर प्रभाव डालते हैं। इस दिवस सेमिनार में डॉ एस के प्रसाद एवं डॉ राजेश कुमार ने भी अपने विचार रखें ,जो हमारे सदर अस्पताल में दो आंख रोग विशेषज्ञ चिकित्सा पदाधिकारी हैं ।इस अवसर पर आंख विभाग के सभी कर्मचारी उपस्थित थे।
अन्य लोगों में एसीएमओ ऑफिस के रामजी बाबू ,बर्मन जी ,जिला अंधापन समिति के कुमारी प्रियंका ,बर्मन जी, राणा जी ,सुधीर सिंह, पंकज कुमार आदि एवं एएनएम भी इस अवसर पर उपस्थित थी।

मां महागौरी की उपासना करने से शीघ्र फल की होती है प्राप्तिःअमरेन्द्र

कुमार गौरव

गडहनी। नगर पंचायत गडहनी सहित प्रखण्ड क्षेत्र मे नवरात्रि के आठवें दिन श्रद्धालुओं ने मां दुर्गा के आठवें स्वरूप महागौरी की पूजा अर्चना कर मनोवांछित फल प्राप्ति की कामना की ।वहीं शुक्रवार को नवमी मे कन्या पूजन, हवन, कन्या भोजन दक्षिणादि कार्य संपन्न किया जायेगा ।साथ ही गृहस्थाश्रम मे माता बहनो द्वारा नवमी पूजाई की जायेगी ।वहीं दशमी तिथि मे प्रातः कालीन वेला मे कुल देवी पूजन की जायेगी ।बतादें कि सप्तमी तिथि को मां दुर्गा का पट खुलते ही श्रद्धालुओं की भीड़ पूजा पंडालों व देवी मंदिरों में उमड़ पड़ी ।पट खुलते ही श्रद्धालुओं ने मातारानी के जयकारें लगाए ।पूरा वातावरण भक्तिमय बना रहा ।पण्डित अमरेन्द्र कुमार मिश्र, पं० प्रदीप ओझा एवं राजीव रंजन मिश्र ने बताया कि नवरात्र के आठवें दिन मां के आठवें स्वरूप महागौरी की उपासना की जाती है। मां चार भुजाएं हैं ।वह अपने एक हाथ में त्रिशूल धारण किए हुए हैं, दूसरे हाथ से अभय मुद्रा में हैं, तीसरे हाथ में डमरू सुशोभित है तथा चौथा हाथ वर मुद्रा में है। मां का वाहन वृष है साथ ही मां का वर्ण श्वेत है। नवरात्र के दिनों में मां महागौरी की पूजा - उपासना करने से सभी मनोरथ पूरे होते हैं ।विशेष रूप से जिनकी जन्म कुंडली में विवाह से संबंधित परेशानियां, ग्रह बाधा हैं उन्हें मां महागौरी की उपासना करने से शीघ्र विवाह का आशीर्वाद प्राप्त होता है। नवरात्र के नौ दिनों में प्रति दिन देवी दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है लेकिन नवरात्र के आठवें और नौवें दिन देवी दुर्गा के नौ रूपों के प्रतीक में कन्या पूजन का भी विधान है जो इस पर्व के महत्व को और भी बढ़ा देता है। महागौरी को भगवान गणेशजी की माता के रूप में भी जाना जाता है ।मातारानी को दूध से बनी हुई चीजें जैसे खीर, मेवा, इत्यादि फल फ्रूट, नारियल पसंद है।
वहीं संध्या काल मे माता का भव्य महाआरती का आयोजन शुरू हुआ और माता के भक्त भक्ति भाव से माता की स्तुति अराधना कर मनोवांछित फल की कामना की ।इस बार नवमी तिथि का आरम्भ शुक्रवार को प्रातःकालीन वेला में 6 बजकर 52 मिनट से हो रहा है जो शनिवार को सूर्योदय से पूर्व प्रातः 5:51 तक है। उसके बाद दशमी तिथि का आगमन होगा ।जिन लोगों ने पूरे नवरात्रि उपवास रखा है उनका पारण शनिवार को दशमी मे होगा ।वहीं पूजा पंडालों व विभिन्न दुर्गा मंडपों को रौशनी से सजाया गया है। लाउडस्पीकर पर भक्ति गीत बजते सुने गए ।लगभग सभी पूजा स्थलों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम नाटक मंचन किया गया।
नवरात्रि मेले में गुड़हा जलेबी व चाट की दावेदारी सबसे उपर रही। यों तो चाइनीज फूड भी कम नहीं बिके लेकिन बाजी मारते गुड़हा जलेबी ही दिखा। मेले में दर्जनों की संख्या में लगे जलेबी दुकानों पर पूरे दिन भीड़ दिखी ।चाट का भी कारोबार बढ़ चढ़कर रहा।

देवी ज्वालामालिनी मां का किया गया भव्य श्रृंगार

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। भगवान महावीर मार्ग (जेल रोड) स्थित श्री दिगंबर जैन चंद्रप्रभु मंदिर जी में नवरात्रि महोत्सव बड़े ही भक्तिपूर्वक मनाया जा रहा है। बुधवार को प्रातः समय में श्रृंगारकर्ता परिवार द्वारा जिनेंद्र प्रभु की श्रद्धापूर्वक पंचामृत अभिषेक, पूजन किया गया। दोपहर समय में देवी ज्वालामालिनी मां का दिव्य आराधना, पूजन, श्रृंगार, गोद भराई किया गया। देवी मां की गोद भराई के पश्चात भक्तों के बीच प्रसाद वितरण किया गया। संध्या समय में महाआरती, भजन, पालना, रत्न वृष्टि, सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न हुआ। आयोजन में श्री दिगंबर जैन पंचायती मंदिर के अध्यक्ष कमलेश कुमार जैन, उपाध्यक्ष रीना जैन, सचिव डॉ आदित्य बिजय जैन, सह सचिव बिभु जैन, कोषाध्यक्ष धीरेंद्र चंद्र जैन, मीडिया प्रभारी निलेश कुमार जैन, मंदिर संयोजक डॉ शशांक जैन, सह संयोजक साहू जैन, सदस्य मनीष जैन, नीरज किशोर जैन, दीपू जैन के साथ सैकड़ो की संख्या में भक्तगण मौजूद रहे।

निबाव ने पटना में घर के मालिकों के लिए लॉन्च की अडवान्स्ड सीरीज 4 होम लिफ्ट्स ,घरों में लक्जरी और सुविधा बढ़ाने का लक्ष्य

प्रातः किरण संवाददाता

पटना, अक्टूबर, 2024: भारत के सबसे बड़े होम एलीवेटर ब्राण्ड निबाव लिफ्ट्स ने घर के भीतर मोबिलिटी के गुणवत्तापूर्ण समाधान उपलब्ध कराने के लिए पटना में आधुनिक निबाव सीरीज 4 होम लिफ्ट्स का लॉन्च किया। नई लॉन्च की गई होम लिफ्ट्स आधुनिक फीचर्स जैसे एआई-इनेबल्ड केबिन डिस्प्ले तथा सटीक नेविगेशन एवं आरामदायक लैंडिंग के लिए इन्ट्युटिव एलओपी डिस्प्ले एलआईडीएआर 2.0 टेक्नोलॉजी के साथ पटना में घर के मालिकों को लक्जरी एवं आरामदायक अनुभव प्रदान करेंगी। ये फीचर्स इन्हें होम एलीवेटर सेगमेन्ट में खास बनाते हैं। एक्सक्लुजिव एडीशन मिडनाईट ब्लैक एडीशन में उपलब्ध ये लिफ्ट्स किसी भी एयर-ड्रिवन लिफ्ट में सबसे बड़ा केबिन स्पेस देती है। निबाव सीरीज 4 लिफ्ट्स को एम्बिएन्ट लाइटिंग, न्यूजीलैण्ड वूल कारपेट, स्टारलाईट सीलिंग, लैदर फिनिश इंटीरियर के साथ बेहद स्टाइलिश रूप में डिजाइन किया गया है। श्री राणा सिंह, एक स्वास्थ्य देखभाल उद्यमी, और श्री आयुष सिंह, एक युवा उद्यमी, परोपकारी और प्रभावशाली व्यक्ति के नेतृत्व में आयोजित अनावरण समारोह में निबाव होम लिफ्ट्स के वरिष्ठ प्रबंधन ने भाग लिया और यह पटना में ब्रांड के प्रमुख एक्सपीरियंस सेंटर में आयोजित हुआ।
पटना में नए प्रोडक्ट के लॉन्च के अवसर पर श्री विमल बाबू, सीईओ एवं संस्थापक- निबाव लिफ्ट्स ने कहा, ह्व्ह्वहमें गर्व है कि हम अपने नए इनोवेशन-निबाव सीरीज 4 होम लिफ्ट्स को पटना के मार्केट में उतार रहे हैं। आज के दौर में हर व्यक्ति अपने घर में लक्जरी और आरामदायक अनुभव पाना चाहता है। हमारी सीरीज 4 होम लिफ्ट्स बेजोड़ लक्जरी और सुविधा के साथ आपकी जीवनशैली के अनुभव को पूरी तरह से बदल देंगी। इस प्रोडक्ट में हमने खासतौर पर दो चीजों पर विशेष रूप से ध्यान दिया है- टेक्नोलॉजी और डिजाइन, जो किसी भी घर की खूबसूरती में चार-चांद लगा देंगे। हमारे ब्राण्ड को सुरक्षा और टिकाउपन के लिए जाना जाता है, निबाव सीरीज 4 के साथ हमने उपभोक्ताओं को बेजोड़ गुणवत्ता प्रदान करने की दिशा में नए मानक स्थापित किए हैं। हमें विश्वास है कि घर के मालिक हमारी सीरीज 4 लिफ्ट्स को खूब पसंद करेंगे।ह्लह्ल
सुरक्षा के फीचर्स की बात करें तो इस दृष्टि से नए मानक स्थापित करते हुए निबाव लिफ्ट्स 4 में रैपिड रैस्क्यू लैच (आरआरएल) शामिल किया गया है, जिसके चलते किसी भी एमरजेन्सी के मामले बचाव टीम तुंरत और सुरक्षित निकासी को सुनिश्चित करती है। आरआरएल के द्वारा पॉलीकाबोर्नेट ग्लास को आसानी से निकाला जा सकता है, जिससे एमरजेन्सी के मामले में यात्रियों को जल्द से बाहर निकाला जा सकता है।

रतन टाटा के रूप में भारत ने खोया एक अद्वितीय कोहिनूरःडॉ मनीष

प्रातः किरण संवाददाता

बिक्रमगंज(रोहतास) : भारत पद्म विभूषण से सम्मानित एक महान उद्योगपति रतन टाटा के निधन से भारत ने अपना एक कोहिनूर खो दिया है.उनके निधन से हमारे देश को एक अपूरणीय क्षति हुई है.भाजपा नेता डॉ मनीष रंजन ने पद्म विभूषण से सम्मानित रतन टाटा जी के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि रतन टाटा भारतीय उद्योगपति थे जो टाटा समूह और टाटा संस के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया. वे भारत की सबसे बड़ी व्यापारिक इकाई, टाटा समूह, के 1991 से 2012 तक अध्यक्ष थे. इसके अतिरिक्त, अक्टूबर 2016 से फरवरी 2017 तक वे समूह के कार्यकारी अध्यक्ष भी रहे.उनके नेतृत्व में, टाटा समूह ने वैश्विक स्तर पर विस्तार किया और कई महत्वपूर्ण अधिग्रहण किए.2000 में तीसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म भूषण प्राप्त करने के बाद, 2008 में उन्हें भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म विभूषण मिला.उम्र संबंधी बीमारी के कारण कल उनकी मृत्यु हो गई.उनकी स्थिति गंभीर थी और उन्हें मुंबई के एक अस्पताल में गहन चिकित्सा देखभाल में रखा गया था.टाटा ने 7 अक्टूबर 2024 को कहा था कि वह अपनी आयु और संबंधित चिकित्सा स्थितियों के कारण नियमित चिकित्सा परीक्षण करवा रहे थे. डॉ रंजन ने कहा कि रतन टाटा का 9 अक्टूबर 2024 को 86 वर्ष की आयु में मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में निधन हो गया.उनके निधन से पूरे देश में शोक व्याप्त है. उनके जैसी विभूति का निधन भारत के लिए एक अपूरणीय क्षति है.शोक ब्यक्त करने वालो में नगर परिषद बिक्रमगंज के पूर्व चेयरमैन सिद्धनाथ सिंह उर्फ जवाहर सिंह,बिरेंद्र चौधरी,लालबिहारी सिंह ,सुरेंद्र कुमार सिंह,वीर बहादुर सिंह,उमाशंकर सिंह,ज्ञान प्रकाश सिन्हा,विजय कुमार सिंह,अनिल कुमार सिंह,दिनेश कुमार,बलवंत सिंह,प्रियतम कुमार,अभय कुमार सिंह,मंटू कुमार चौधरी,रोहित कुमार तिवारी,नरेंद्र कुमार सिंह,परवेज खान,आलोक राम आदि थे.

डेहरी पड़ाव मैदान में होगा रावण वध

डेहरी(रोहतास) : डेहरी पडाव्र मैदान में इस बार विजयदशमी को होगा रावण वध शहर के लोगों में खुशी की लहर। बताते चले की डेहरी पडाव्र मैदान में आजादी से पहले से रावण वध परंपरागत तरीके से होती आ रही थी लेकिन पिछले दो-तीन वर्षों से मैदान में पानी की वजह से रावण वध कमेटी द्वारा इसे बंद कर दिया गया इस पर नगर प्रशासन भी ध्यान नहीं दिया। लेकिन इस बार अध्यक्ष शशि कुमारी ने कमेटी को आश्वासन दिया कि नगर परिषद से रावण वध में सहयोग किया जाएगा। इसके बाद डेहरी पडाव्र मैदान में फिर से एक बार रावण वध की तैयारी शुरू कर दी गई है 60 फीट ऊंचा विशाल रावण बनाया जा रहा है। जिसे विजयदशमी के दिन रावण वध का कार्यक्रम होगा ओम शक्ति मंदिर पूजा समिति एवं जय श्री अखाड़ा रावण वध समिति द्वारा यह आयोजन किया जा रहा है ।कमेटी के अध्यक्ष राजेश गुप्ता ने बताया कि यहां पर आजादी से पहले से रावण वध होते आ रहा था लेकिन कुछ कारणो से रावण वध बंद हो गया था लेकिन शहर के लोगों को डालमियानगर रावण वध देखना जाने में काफी समस्या उत्पन्न होती है थी इसे देखते हुए डेहरी पड़ाव मैदान में रावण वध का इस बार कार्यक्रम रखा गया है इधर शहर के लोगों को डेहरी पडाव्र मैदान में रावण वध की खबर मिलते ही लोगों में खुशी की लहर है। विमल सिंह ,विजय कुमार सोनी, अर्जुन केशरी ,कुंवर सिंह, संजय गुप्ता प्रकाश गोस्वामी, प्यारेलाल ओझा ,ज्ञानी शर्मा आदि लोगों ने कहा कि कमेटी द्वारा रावण वध कार्यक्रम आयोजित किया है यह बहुत ही सराहनीय है क्योंकि डालमियानगर रावण वध देखना जाने में लोगों को काफी जम का सामना करना पड़ता था और डालमियानगर में आने जाने का बस एक ही मार्ग है इस वजह से महिलाओं और लोगों को काफी परेशानी होती थी अब शहर के लोग प्रणाम मैदान में ही रावण बस देखेंगे इससे लोगों में खुशी है। कमेटी के लोगों ने बताया कि रावण वध परंपरागत तरीक रावण वध किया जाएगा राम लक्ष्मण सीता की झांकी आएगी राम के द्वारा होगा रावण वध रावण वध के लिए प्रणाम मैदान में दूधिया रोशनी की रहेगी व्यवस्था।

नई दिल्ली की संस्था सनातनी गंगा फाउंडेशन और आईडीपीटीएस के संयुक्त तत्वावधान में वैदिक दिवस पर किया गया आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

आराःनई दिल्ली की संस्था सनातनी गंगा फाउंडेशन और आईडीपीटीएस के संयुक्त तत्वावधान में वैदिक दिवस का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्री जैन बाला विश्राम की संगीत शिक्षिका सोनी जैन ने वेदो की ऋचाओ का गान कर किया । तत्पश्चात उन्होंने कहा कि वेदों में उच्चतम आध्यात्मिक ज्ञान के साथ-साथ दुनिया का ज्ञान भी शामिल है। वही शास्त्रीय गायिका श्रेया पांडेय ने कहा कि वैदिक युग के आर्यों की संस्कृति और सभ्यता को जानने का वेद ही तो एकमात्र साधन है। मानव-जाति और विशेषतः वैदिकों ने अपने शैशव में धर्म और समाज का किस प्रकार विकास किया इसका ज्ञान केवल वेदों से मिलता है। वही गुरु बक्शी विकास ने कहा कि सामवेद धुनों और मंत्रों का वेद है। यह एक प्राचीन वैदिक संस्कृत पाठ है, और हिंदू धर्म के पवित्र ग्रंथों में से एक है। चार वेदों में से एक, यह एक धार्मिक पाठ है जिसमें 1,875 छंद हैं। 75 छंदों को छोड़कर सभी ऋग्वेद से लिए गए हैं। इस अवसर पर स्नेहा पांडेय, रीतिका, हंसिका, सलोनी व राका ने शांति पाठ की ऋचाओ पर मनोहारी नृत्य प्रस्तुत किया । वही श्रेया पांडेय, अभिजित पांडेय, लक्ष्मी कुमारी व ने भगवती स्तुति प्रस्तुत कर समां बाँधा । मंच संचालन आदित्य आर्या व धन्यवाद ज्ञापन सुशील कुमार देहाती ने किया

रामलीला आठवें दिन अत्री अनसूया सीता हरण बाली वध लंका दहन विभीषण शरण गति का मंचन हुआ

प्रातः किरण संवाददाता

आरा । (भोजपुर) रामलीला के आठवें दिन 400 वर्ष पुरानी संस्था नगर रामलीला समिति के तत्वाधान में सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा और समिति के सदस्यों द्वारा दीप प्रज्वलित कर प्रभु श्री राम का आरती किया गया उसके बाद वृंदावन मंडली के कलाकारों द्वारा प्रथम दृश्य में महर्षि अत्रि और माता अनसूया से राम और सीता की भेंट को दशार्या गया जिसमें माता अनसूया सीता को पति धर्म बतलाती दिख रही है. दूसरे दृश्य में मारीच की सहायता से राम और लक्ष्मण को सीता से दूर भेज कर रावण द्वारा छल से सीता का हरण दिखाया गया .तृतीय दृश्य में सुग्रीव और बाली के बीच में युद्ध दिखाया दिखाया गया और प्रभु श्री राम बालि का वध करते दिखाए गए .उसके पश्चात सुग्रीव द्वारा हनुमान को सीता की खोज में लंका भेजा जा रहा है जहां पर सीता से मिलकर हनुमान प्रभु राम का संदेश देते हैं. अशोक वाटिका में अक्षय और मेघनाथ का हनुमान से युद्ध दिखाया गया. उसके बाद हनुमान द्वारा लंका दहन का दृश्य दशार्या गया. इस दृश्य के बाद विभीषण द्वारा रावण को धर्म की नीति सिखाया जा रहा है. मगर रावण विभीषण को लात मार कर भगा देता है. जिससे वह प्रभु श्री राम के शरण में चला जाता है. मंडली द्वारा कार्यक्रम का मंचन बहुत ही सराहनीय था. अध्यक्ष सोनू राय ने आज की पीढ़ी को विभीषण से धर्म की शिक्षा और हनुमान से अपने स्वामी के प्रति वफादारी और अनसूया से पति धर्म जैसे शिक्षा लेने की बात कही. उन्होंने आए हुए अतिथियों का अभिवादन किया और वृंदावन की मंडली के इस मंचन के लिए सराहना की. मुख्य अतिथियों में बीरबल यादव ,अमित केसरी, राकेश रंजन उर्फ पुतुल जी, सूर्यकांत पांडे , अजय जी, मुन्ना सिंह, हरेंद्र पांडेय, मनोज सिंह, मंटू सिंह, संरक्षक मंडल में हकीम प्रसाद, रामेश्वर प्रसाद ,उपाध्यक्ष संजीव गुप्ता, विजय भारती, मदन प्रसाद, शंभूनाथ केसरी ,सचिव शंभूनाथ प्रसाद ,मंच संचालन दिलीप गुप्ता ने किया इस कार्यक्रम की जानकारी प्रवक्ता पंकज प्रभाकर ने दिया

मेयर के अवैध मकान का शिकायत करना वार्ड पार्षद पुत्र को पड़ा महंगा

प्रातः किरण संवाददाता

सासाराम(रोहतास) । सासाराम नगर निगम मेयर का अवैध तरीके से बने घर आदि का खिलाफ करना वार्ड पार्षद को मंहगा पड़ा तो उपमेयर समेत कई पार्षदों ने मेयर खिलाफ मोर्चा खोल दिया।
नगर निगम सासाराम के उप मेयर सत्यंवती देवी के कार्यालय कक्ष में प्रेस-वार्ता के दौरान पीड़ित पार्षद पुत्र सरोज गुप्ता ने मेयर सहीत उनके परिजन पर गंभीर आरोप लगाया है।
सासाराम नगर निगम के वार्ड 44 के पार्षद केला देवी के पुत्र सरोज गुप्ता ने बताया कि मेयर काजल कुमारी के प्रतिनिधि सह देवर अन्य परिजन ने बिहार सरकार के भूमि पर राधिका हाउस सुधीर बिहार एवं बसंती हाउस का निर्माण किया है। बिहार सरकार की भूमि पर नगर निकाय से बिना नक्शा पास कराए मकान का निर्माण कर दिया गया है। जिसकी शिकायत पर जांच में आरोप सत्यापन होने पर मेयर के देवर सह प्रतिनिधि डब्लू कुमार आदि परिजनों ने षड्यंत्र रचकर अज्ञात मोबाइल से वार्ड पार्षद पुत्र सरोज गुप्ता को मैसेज कर सासाराम मुफ्फसिल थाना पुलिस से सांठगांठ कर गिरफ्तार कराकर सोशल मीडिया पर पोस्ट कर दिया। वार्ड पार्षद पुत्र पीड़ित सरोज गुप्ता ने बताया कि सासाराम मुफस्सिल थाना में दर्ज झूठे मुकदमे के उक्त मामले में न्यायालय से रोक लगाया गया है।
इसकी सूचना उपमेयर सहित अन्य कई पार्षद को मिला तो लोगों ने थाने पहुंचे। जहां काफी घंटे के बाद आरोपी को पुलिस ने मुक्त किया।

महेश बाबू की फिल्म एसएसएमबी 29 पर आया अब तक का सबसे बड़ा अपडेट

महेश बाबू के प्रशंसक एसएसएमबी 29 को लेकर पिछले कुछ महीनों से किसी बड़े अपडेट का इंतजार कर रहे हैं। अब उनकी इंतजार की घड़ी खत्म हो चुकी है। फिल्म की शूटिंग शुरू होने को लेकर एक बड़ी जानकारी सामने आई है।

मौजूदा समय के देश के सबसे बड़े निर्देशकों सूची में एस एस राजामौली का नाम सबसे ऊपर आता है। अपने दो दशक से अधिक के करियर में उन्होंने अब तक एक भी फ्लॉप फिल्म नहीं बनाई है। आरआरआर के बाद से ही फैंस को उनकी अगली फिल्म का इंतजार है। उनकी इस आगामी फिल्म में महेश बाबू नजर आने वाले हैं।

एसएसएमबी 29 का है बेसब्री से इंतजार

अस्थाई तौर पर इसे एसएसएमबी 29 कहा जा रहा है। इस फिल्म का इंतजार केवल दक्षिण भारत के लागों को ही नहीं, बल्कि हिंदी पट्टी के दर्शकों को भी है। यह फिल्म अभी प्री प्रोडक्शन स्टेज में है। एस एस राजामौली भारत के उन निर्देशकों में से एक हैं जो अपनी फिल्म बनाने के दौरान छोटी से छोटी बात का ध्यान रखते हैं। यही वजह है कि उनकी फिल्मों को पर्दे तक पहुंचने में काफी समय लगता है। राजामौली की आगामी फिल्म की शूटिंग भी इसी कारण अब तक शुरू नहीं हो सकी है।

अगले साल शुरू होगी शूटिंग

महेश बाबू के प्रशंसक पिछले कुछ महीनों से इस फिल्म को लेकर किसी बड़े अपडेट का इंतजार कर रहे हैं। अब इस फिल्म को लेकर एक ऐसी जानकारी सामने आई है, जिससे प्रशंसकों का उत्साह काफी ज्यादा बढ़ जाएगा। एसएसएमबी 29 की शूटिंग जनवरी 2025 में शुरू होगी। इस बात का खुलासा राजामौली के पिता और मशहूर पटकथा लेखक विजयेंद्र प्रसाद ने एक कार्यक्रम के दौरान किया है।

विलेन के रोल में दिखेंगे पृथ्वीराज

बता दें कि मौजूदा समय में महेश बाबू एक्शन सीक्वेंस के लिए कार्यशालाओं में भाग ले रहे हैं। यह बहुप्रतीक्षित प्रोजेक्ट अफ्रीकी जंगलों की पृष्ठभूमि पर आधारित है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, पृथ्वीराज सुकुमारन इस फिल्म में विलेन के रूप में नजर आने वाले हैं।

इस सीन के बाद तृप्ति से माफी मांगती थीं 'बुलबुल' की निर्देशक

तृप्ति डिमरी और कार्तिक आर्यन की आगामी फिल्म 'भूल भुलैया 3' का ट्रेलर बुधवार को सामने आया। वहीं, उनकी फिल्म 'विक्की विद्या का वो वाला वीडियो' भी 11 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। अपनी इन फिल्मों को लेकर वह लगातार सुर्खियों में बनी हुई हैं। बता दें कि तृप्ति ने अपने करियर की शुरुआत श्रीदेवी की 'मॉम' से की थी। इसके बाद उन्हें 'बुलबुल' के नेटफ्लिक्स पर प्रसारित होने के बाद पहचान मिली। हाल ही में अभिनेत्री ने एक साक्षात्कार में 'बुलबुल' से जुड़ी कुछ बातें साझा कीं। उन्होंने बताया कि कई लोगों ने उन्हें इस फिल्म को ना करने की सलाह दी थी।

बातचीत के दौरान उन्होंने याद किया कि निर्देशक अन्विता दत्त गुप्तन अक्सर बलात्कार के दृश्य फिल्माने के बाद उनसे माफी मांगती थीं। उन्होंने कहा, 'बलात्कार के दृश्य बहुत तीव्र थे। बातें करते समय सीन के बारे में ऐसा लगता है, नॉर्मल है। हो जाएगा ये। लेकिन जब आप वास्तव में उस सीन में उस पल को जीते हैं, तो अलग लेवल का डर आता है। एक अभिनेता के रूप में, आप जानते हैं कि आप इससे भाग नहीं सकते।'तृप्ति ने आगे कहा,'यह बहुत डरावना और अजीब था, लेकिन मुझे राहुल बोस की तारीफ करनी होगी, जिन्होंने मुझे बहुत सहज महसूस कराया। जैसे ही सीन कट होता, वह विषय बदल देते या मेरे साथ खेल खेलना शुरू कर देते। इसलिए, मैं इस बारे में नहीं सोच रहा था कि सीन में वास्तव में क्या हो रहा है। मेरी निर्देशक हर सीन के बाद मेरे पास आकर बैठती और रोती। वह माफी मांगती और कहती, मुझे माफ कर दो, मैंने तुम्हें इन सब में डाला, तुम्हें यह सब सहना पड़ रहा है, लेकिन यह सिर्फ फिल्म के लिए है।'

तृप्ति ने कहा कि जब भी वह बुलबुल की कहानी सुनती, तो उनके रोंगटे खड़े हो जाते। उन्होंने कहा, 'जब मेरा चयन हुआ, तो सबने कहा था मत करना, क्योंकि 'लैला मजनू' रिलीज हुई थी और हिट नहीं हुई थी। कई बार, मेरा दिल टूट जाता था। इसलिए, मैंने पैसे के लिए कैटलॉग शूट करना शुरू कर दिया। मैं ऐसी थी कि जिंदगी फिर से पहले जैसी हो गई है। मैंने फिर से ऑडिशन देना शुरू कर दिया और इसी दौरान बुलबुल का ऑडिशन आया।' तृप्ति ने बातचीत के दौरान कहा कि वह 23 साल की उम्र में ऐसी भूमिका नहीं निभाना चाहती थीं, जिसमें साड़ी और भारी आभूषण पहने हों, लेकिन फिर भी उन्होंने ऑडिशन देने का फैसला किया और आखिरकार उनका चयन हो गया। इसके बाद उन्होंने कहानी सुनी और इसके लिए हां कर दिया।

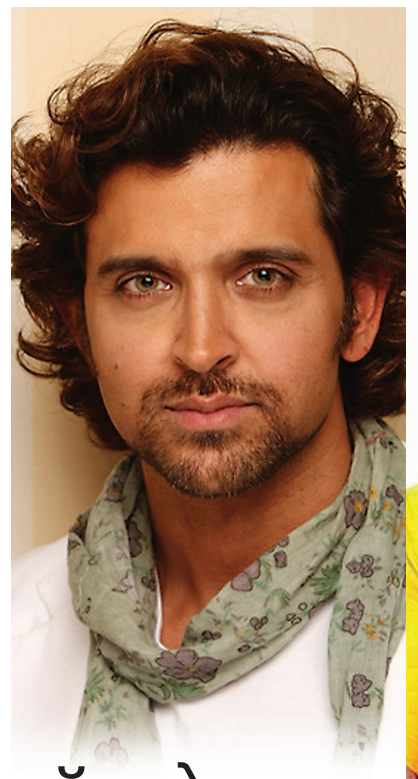

वॉर 2 के अलावा इन फिल्मों में नजर आएंगे ऋतिक रोशन

ऋतिक रोशन बॉलीविड के पसंदीदा अभिनेता हैं। ऋतिक रोशन की फिल्मों का प्रशंसकों को बेसब्री से इंतजार रहता है। वॉर 2 में जल्द ही ऋतिक, जूनियर एनटीआर के साथ एक्शन करते नजर आएंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, कृष 4 से भी ऋतिक धमाल कर सकते हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, सत्ते पे सत्ता रिमेक में भी ऋतिक नजर आ सकते हैं।

जूनियर एनटीआर ने दर्शकों पर फोड़ा देवरा के खराब प्रदर्शन का ठीकरा

साउथ सुपरस्टार जूनियर एनटीआर और जान्हवी कपूर की फिल्म 'देवरा' सिनेमाघरों में दर्शकों का मनोरंजन कर रही है। फिल्म ने ओपनिंग डे पर दमदार कमाई भी की थी, साथ ही समीक्षकों की मिलीजुली प्रतिक्रिया भी मिली, लेकिन अब दर्शकों के सिर से देवरा का क्रेज उतरता नजर आ रहा है। अब हाल ही में, जूनियर एनटीआर ने अपनी फिल्म देवरा के बॉक्स ऑफिस पर खराब प्रदर्शन का कारण बताया है।

निर्देशक कोरटाला शिवा की देवारा- पार्ट 1 जूनियर एनटीआर, सैफ अली खान और जान्हवी कपूर मुख्य भूमिकाओं में हैं और यह फिल्म लगातार अच्छी कमाई कर रही थी, लेकिन अब दर्शक फिल्म देखने के लिए सिनेमाघरों का रुख नहीं कर रहे हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि फिल्म उतना प्रभाव नहीं डाल पाई है, जितनी उम्मीद की जा रही थी। इस फिल्म ने वैश्विक ब्लॉकबस्टर आरआरआर के बाद दो साल बाद जूनियर एनटीआर की सिल्वर स्क्रीन पर वापसी की है, उम्मीदें तो काफी ज्यादा थीं।,लेकिन इसे फिल्म को आलोचकों और दर्शकों से मिली-जुली समीक्षा मिली। जबकि फिल्म ने सोमवार तक दुनिया भर में 466 करोड़ रुपये की कमाई की है, इसका प्रदर्शन प्रभास-स्टारर कल्कि 2898 एडी जैसी और हालिया भारतीय ब्लॉकबस्टर फिल्मों की तुलना में कम है। एक साक्षात्कार के दौरान अभिनेता फिल्म के खराब प्रदर्शन को लेकर सफाई देते हुए कहा, हम एक दर्शक के रूप में इन दिनों बहुत नकारात्मक हो गए हैं। हम अब एक अच्छे तरीके से फिल्म का आनंद नहीं ले पा रहे हैं। अभिनेता ने इंडिया टुडे को आगे कहा, जब मैं अपने बेटों को देखता हूं, तो उन्हें इसकी परवाह नहीं होती कि वे कौन सा अभिनेता या कौन सी फिल्म देख रहे हैं। वे सिर्फ फिल्मों का आनंद लेते हैं। अभिनेता ने आगे कहा, मुझे हैरत है कि हम अब बच्चों की तरह क्यों नहीं हो पा रहे? आज हम हर फिल्म का विश्लेषण करने के लिए उसे देख रहे हैं। हम सभी फिल्मों के बारे में लगातार निर्णय, विश्लेषण और ज्यादा सोच-विचार कर रहे हैं। शायद सिनेमा के संपर्क ने हमें ऐसा बना दिया है।

नागा चैतन्य का एक्स अकाउंट हुआ हैक

साउथ अभिनेता नागा चैतन्य अपनी आगामी फिल्म 'थंडेल' की तैयारियों में जुटे हैं। इस फिल्म का निर्देशन चंदू मोंडेती कर रहे हैं। फिल्म में उनके साथ साई पल्लवी मुख्य महिला भूमिका में नजर आएंगी। प्रशंसक इस जोड़ी को पर्दे पर देखने के लिए बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। हाल ही में अभिनेता से जुड़ी महत्वपूर्ण खबर सामने आई है। रिपोर्ट्स के मुताबिक उनका एक्स (ट्विटर) अकाउंट हैक हो गया है।

एक्स अकाउंट हुआ हैक

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अभिनेता नागा चैतन्य का एक्स अकाउंट आज दोपहर हैकिंग की घटना का शिकार हो गया। उनके अकाउंट पर बिटकॉइन से संबंधित एक पोल पोस्ट दिखाई दी, जिससे उनके फॉलोअर्स चिंतित दिखे।

अकाउंट है सुरक्षित

उनकी टीम वर्तमान में अकाउंट तक पहुंच को रद्द करने और इसकी सुरक्षा बहाल करने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। सौभाग्य से, उनका इंस्टाग्राम अकाउंट सुरक्षित है और सामान्य रूप से काम कर रहा है, जिससे प्रशंसक उनके नवीनतम अपडेट से जुड़े रह सकते हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक अभी इससे जुड़ी ज्यादा जानकारी सामने नहीं आई है।

पिता को पहली बार नेशनल अवॉर्ड मिलने पर भावुक हुईं यामी गौतम

यामी गौतम ने टीवी सीरियल 'चांद के पार चलो' और 'ये प्यार न होगा कम' से अभिनय की शुरुआत की है। उन्होंने बॉलीवुड में अपने करियर की शुरुआत 'विक्की डोनर' फिल्म से की है। अभिनेत्री ने अपने दम पर आज इंडस्ट्री में अपनी खास पहचान बना ली है। अब हाल ही में, यामी गौतम अपने पिता और फिल्म निर्माता मुकेश गौतम को पहला राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिलने पर अभिनेत्री ने खुशी जाहिर की है और बताया है कि पूरा परिवार उनके पिता पर गर्व कर रहा है।

यामी गौतम के पिता को उनकी फिल्म बागी दी धी के लिए 70वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ पंजाबी फिल्म का पुरस्कार मिला। मंगलवार को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में 70वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने पुरस्कार विजेताओं को सम्मानित किया। यामी ने इंस्टाग्राम पर अपने पिता के लिए एक भावुक पोस्ट शेयर की। अभिनेत्री इस कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सकीं, लेकिन उन्होंने अपने पिता को पुरस्कार लेते हुए देखने के इस खास पल को कैद कर लिया और अपने इंस्टाग्राम पर क्लिप पोस्ट कर दी। टेलीविजन पर समारोह देख रही यामी ने लाइव टेलीकास्ट की तस्वीरें साझा कीं। उन्होंने कहा कि अपने पिता को मंच पर देखकर वह बहुत भावुक हो गईं, साथ ही उन्होंने कहा कि उन्हें अपने पिता पर बहुत गर्व है। अभिनेत्री ने लिखा, यह बहुत भावुक पल था, क्योंकि मेरे पिता मुकेश गौतम को उनकी फिल्म - बागी दी धी के लिए निर्देशक के रूप में पहला राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। यामी ने कहा, भावनाओं को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। मुझे अपनी बेटी पर गर्व है। मेरे पिता का यहां तक का सफर मेरे द्वारा देखे गए सबसे कठिन सफरों में से एक रहा है, फिर भी यह उन्हें काम के प्रति उनकी मेहनत और नैतिकता में अपार ईमानदारी से नहीं रोक सका। आपके परिवार को आप पर गर्व है, पापा।

नार्थन की फिल्म में काम करने वाले हैं किच्चा सुदीप?

कन्नड़ फिल्मों के सुपरस्टार किच्चा सुदीप कथित तौर पर फिल्म निर्देशक नार्थन के साथ अगली फिल्म के लिए हाथ मिलाने वाले हैं। दोनों के साथ आने से जुड़ी खबरें लगातार सुर्खियां बटोर रही थीं। हालांकि, अब तक, प्रोजेक्ट की कहानी, कलाकारों और अन्य पहलुओं को लेकर कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। इस बीच नार्थन ने खुद इसे लेकर बात की है और उन्होंने इस खबर की पुष्टि भी की है। किच्चा सुदीप के साथ काम करने को लेकर नार्थन ने दी जानकारी

हाल में ही द न्यू इंडियन एक्सप्रेस को दिए एक इंटरव्यू में नार्थन ने इस प्रोजेक्ट को लेकर बात की है। मुफ्ती निर्देशक ने कहा, हां, हमने प्रोजेक्ट के बारे में बात की है, लेकिन हम अभी भी शुरुआती चरण में हैं। हमें ऐसा ठोस कंटेंट बनाने की ज़रूरत है, जो वास्तव में उन्हें फिल्म के लिए सार्थक बनाए और इसके लिए सही निर्माता का मिलना भी जरूरी है। उन्होंने आगे कहा कि वह फिलहाल शिवराजकुमार अभिनीत फिल्म भैरथी रानागल की रिलीज की तैयारी पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, जो फिल्म 15 नवंबर को सिनेमाघरों में आने वाली है। भैरथी रानागल एक निर्देशक के रूप में नार्थन की दूसरी फिल्म होगी।

यश के साथ भी नार्थन करने वाले हैं फिल्म

इसके अलावा नार्थन सुपरस्टार यश के साथ भी एक अनाम फिल्म का निर्देशन करने वाले हैं। फिल्म में वशिष्ठ एन सिम्हा, देवराज आदि कलाकार भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। आईएमडीबी पर उपलब्ध जानकारी के मुताबिक, तृप्ति डिमरी भी इस फिल्म में मुख्य भूमिका निभाएंगी, जिसका शीर्षक अभी सुनिश्चित नहीं किया गया है। हालांकि, अभी तक अभिनेत्री ने इस प्रोजेक्ट के बारे में कुछ भी नहीं बताया है। धर्मा प्रोडक्शंस द्वारा समर्थित इस फिल्म के कलाकारों और अन्य पहलुओं को लेकर आधिकारिक जानकारियां सामने आना अभी बाकी है।

बिग बॉस कन्नड़ 11 की मेजबानी कर रहे हैं सुदीप

वहीं, किच्चा सुदीप अगली बार अनूप भंडारी द्वारा लिखित और निर्देशित फिल्म बिल्ला रंगा बाशा में नजर आने वाले हैं। यह फिल्म अभी प्री-प्रोडक्शन वाले चरण में है। फिल्म की रिलीज और कलाकारों के बारे में अभी कोई आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है। इसके अलावा वह कब्जा 2, नरसंहार आदि में भी नजर आने वाले हैं। वर्तमान में अभिनेता बिग बॉस कन्नड़ 11 की मेजबानी कर रहे हैं।

17 साल बाद भूल भुलैया फ्रेंचाइजी में लौटीं विद्या बालन

भूल भुलैया 3 का बहुप्रतीक्षित ट्रेलर कलाकारों और प्रशंसकों के उत्साह के बीच जयपुर में लॉन्च किया गया। इस भव्य कार्यक्रम में मुख्य कलाकार कार्तिक आर्यन, विद्या बालन और तृप्ति डिमरी मौजूद थे। इसी दौरान विद्या बालन ने 17 साल बाद भूल भुलैया फ्रेंचाइजी में वापसी पर अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। विद्या बालन फ्रेंचाइजी में मंजुलिका की भूमिका में वापसी करने के लिए उत्साहित हैं। अभिनेत्री ने कहा, सतरह साल बाद मैं भूल भुलैया में आई हूं, इसकी खुशी तो बहुत है। विद्या ने आगे जोड़ा, पर आज मुझे लग रहा है कि जितना प्यार मुझे 17 साल में मिला है, उससे कहीं ज्यादा अगले 17 साल में मिलेगा।

इंटरनेट उपभोक्ताओं की संख्या बढ़कर 96.96 करोड़ पहुंची

दूरसंचार कंपनियों को हर ग्राहक से 8% अधिक कमाई

नईदिल्ली, एजेंसी। देश में इंटरनेट ग्राहकों की संख्या चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-जून अवधि में तिमाही आधार पर 1.59 फीसदी बढ़कर 96.96 करोड़ पहुंच गई। जनवरी-मार्च तिमाही में देश में 95.44 करोड़ इंटरनेट ग्राहक थे। कुल 96.96 करोड़ ग्राहकों में 4.20 करोड़ लोग वायर के जरिये इंटरनेट का इस्तेमाल करते हैं, जबकि वायरलेस इंटरनेट सब्सक्राइबर्स की संख्या 92.75 करोड़ पहुंच गई है।

भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) की ओर से 'इंडिया टेलीकॉम सर्विसेज परफॉर्मेंस इंडिकेटर' रिपोर्ट में कहा गया है कि अप्रैल-जून तिमाही के दौरान मोबाइल सेवाओं के लिए हर ग्राहक से दूरसंचार कंपनियों को होने वाली कमाई सालाना आधार पर 8.11 फीसदी बढ़कर 157.45 रुपये पहुंच गई है। मासिक आधार पर इन कंपनियों का प्रति उपयोगकर्ता औसत मासिक राजस्व (एआरपीयू) जनवरी-मार्च तिमाही के 153.54 रुपये की तुलना में 2.55 फीसदी बढ़ा है। रिपोर्ट के मुताबिक, अप्रैल-जून तिमाही में दूरसंचार सेवा क्षेत्र का समायोजित सकल राजस्व (एजीआर) बढ़कर 70,555 करोड़ रुपये पहुंच गया है। इसमें तिमाही आधार पर 0.13 फीसदी और सालाना आधार पर 7.51 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है।

ब्रॉडबैंड से 94 करोड़ लोग चलाते हैं इंटरनेट

रिपोर्ट के मुताबिक, ब्रॉडबैंड के जरिये इंटरनेट चलाने वालों की संख्या अप्रैल-जून तिमाही में 1.81 फीसदी बढ़कर 94.07 करोड़ पहुंच गई। जनवरी-मार्च तिमाही में इनकी संख्या 92.40 करोड़ थी। हालांकि, नैरोबैंड इंटरनेट सब्सक्राइबर्स की संख्या 3.03 करोड़ से घटकर 2.88 करोड़ रह गई।

117 करोड़ वायरलेस ग्राहक

देश में वायरलेस ग्राहकों की संख्या शुद्ध रूप से 50.4 लाख बढ़कर अप्रैल-जून में 117.05 करोड़ पहुंच गई है। मासिक आधार पर संख्या 0.43 फीसदी और सालाना आधार पर 2.36 फीसदी बढ़ी है। इस दौरान वायरलाइन ग्राहकों की संख्या मासिक आधार पर 3.90 फीसदी और सालाना आधार पर 15.81 फीसदी बढ़कर 3.51 करोड़ पहुंच गई।

दूरसंचार घनत्व बढ़कर 85.95 फीसदी

रिपोर्ट के मुताबिक, देश में कुल दूरसंचार घनत्व तिमाही आधार पर 85.69 फीसदी से बढ़कर 85.95 फीसदी पहुंच गया। ग्रामीण इलाकों में यह 59.19 फीसदी से बढ़कर 59.65 फीसदी पहुंच गया, जबकि शहरी दूरसंचार घनत्व 133.72 फीसदी से घटकर 133.46 फीसदी रह गया। वायरलेस दूरसंचार घनत्व 83.27 फीसदी से बढ़कर 83.45 फीसदी पहुंच गया है।

ड्रोन बनाने वाली कंपनी के शेयर ने भरी उड़ान, 63 से 1900 के पार पहुंचा

नईदिल्ली, एजेंसी। भारत वर्ष 2030 तक ड्रोन की दुनिया का नया हब बनकर उभरेगा। फिक्की के अनुसार भारत का ड्रोन बाजार 23 अरब डॉलर से अधिक का होगा। इस खबर के बाद एंटी ड्रोन बनाने वाली कंपनी जेन टेक्नोलाजीज के शेयर आज उड़ान भर रहे हैं। सुबह 1782 रुपये पर खुलकर यह 1910 रुपये के डे हाई पर पहुंच गया। 5 साल पहले यह केवल 63.70 रुपये का था। पांच साल में इस स्टॉक ने 2800 पर्सेंट से अधिक का मल्टीबैगर रिटर्न दिया है। पिछले एक साल में इसने अपने निवेशकों के

एक लाख रुपये को ढाई लाख और छह महीने में 1.86 लाख कर दिया है। इस साल अबतक इसने 136 फीसद का बंपर रिटर्न दिया है। पिछले 5 दिन में इसने करीब 15 पर्सेंट की उछाल दर्ज की है।भारत वर्ष 2030 तक ड्रोन की दुनिया का नया हब बनकर उभरेगा। फिक्की के अनुसार भारत का ड्रोन बाजार 23 अरब डॉलर से अधिक का होगा। देश में मौजूदा समय में ड्रोन से जुड़े 200 से अधिक स्टार्टअप चल रहे हैं। स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट के अनुसार भातीय सेना के पास 2500 से अधिक ड्रोन का बेड़ा है। आने वाले समय में बेड़े में पांच हजार से अधिक ड्रोन होंगे। आत्मनिर्भर भारत के तहत दुनिया का नया सुपरपावर बनने की राह पर है।केंद्रीय मंत्रिमंडल की सुरक्षा संबंधी समिति ने अमेरिकी प्रीडेटर ड्रोन 31 एमक्यू-9बी की खरीद को मंजूरी दे दी है। 31 ड्रोन खरीदने के लिए अमेरिका से 3.1 अरब डॉलर का करार हुआ है। अमेरिकी रक्षा कंपनी जनरल एटॉमिक्स ने इसे तैयार किया है। स्वदेशी आत्मघाती ड्रोन नागास्त्रत्-1 हाल ही में सेना की नई ताकत बना है। यह लॉन्च पैड, दुश्मन के ठिकानों और ट्रेनिंग कैंप के साथ घुसपैठ कर रहे दुश्मनों का सफाया कर सकता है। पाकिस्तान और चीन सीमा तैनाती की योजना है।

1 रुपये से कम के इस शेयर में तूफानी तेजी

नईदिल्ली, एजेंसी। पेनी स्टॉक श्रेष्ठ फिनवेस्ट में तूफानी तेजी आई है। 1 रुपये से कम दाम वाले श्रेष्ठ फिनवेस्ट के शेयर गुरुवार को 5 पर्सेंट की तेजी के साथ 0.89 रुपये (89 पैसे) पर पहुंच गए हैं। कंपनी ने क्रॉलीफाइड इंस्टीट्यूशनल प्लेसमेंट के जरिए फंड जुटाने का ऐलान किया है। श्रेष्ठ फिनवेस्ट के शेयरों का 52 हफ्ते का हाई लेवल 1.28 रुपये है। वहीं, कंपनी के शेयरों का 52 हफ्ते का लो लेवल 0.49 रुपये है। श्रेष्ठ फिनवेस्ट का मार्केट कैप 145.96 करोड़ रुपये पहुंच गया है। श्रेष्ठ फिनवेस्ट के शेयर बुधवार को 0.85 रुपये पर बंद हुए थे। श्रेष्ठ फिनवेस्ट की 9 अक्टूबर को हुई बोर्ड मीटिंग में इक्विटी शेयर जारी करके फंड जुटाने को मंजूरी दी गई है। कंपनी 100 करोड़ रुपये का फंड जुटा रही है। कंपनी क्रॉलीफाइड इंस्टीट्यूशनल प्लेसमेंट के जरिए फंड जुटाएगी। क्यूआईपी से जुटाई गई रकम का इस्तेमाल कंपनी कर्ज के प्री-पेमेंट या रिपेमेंट, वर्किंग कैपिटल रिक्वॉयरमेंट्स को पूरा करने और जनरल कॉरपोरेट पर्पज में करेगी। इसके अलावा, कंपनी के बोर्ड ने 1.05 रुपये के इश्यू प्राइस पर 93 करोड़ तक इक्विटी शेयर इश्यू करने की मंजूरी दी है। श्रेष्ठ फिनवेस्ट के शेयर पिछले 6 महीने में 50 पर्सेंट से अधिक चढ़ गए हैं। कंपनी के शेयर 12 अप्रैल 2024 को 0.59 रुपये पर थे। कंपनी के शेयर 10 अक्टूबर 2024 को 0.89 रुपये पर जा पहुंचे हैं।

वित मंत्री सीतारमण बोलीं- यूरोपीय संघ का प्रस्तावित कार्बन टैक्स मनमाना, भारत के निर्यात को होगा नुकसान

नईदिल्ली, एजेंसी। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बुधवार को कहा कि यूरोपीय संघ का कार्बन सीमा समायोजन तंत्र (सीबीएएम) एकतरफा और मनमाना है। इसके कार्यान्वयन के बाद भारत के निर्यात को नुकसान पहुंचेगा। सीतारमण एक शिखर सम्मेलन को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा, यूरोपीय संघ (ईयू) ने 1 जनवरी 2026 से अपने यहां आयात होने वाले स्टील, सीमेंट और उर्वरक सहित सात कार्बन-गहन क्षेत्रों पर कार्बन कर लगाने का फैसला किया है। इसके दायरे में इंजीनियरिंग सामान भी आएंगे। उन्होंने कहा, यह यूरोपीय संघ की ओर से पेश किया गया सीमा कर है। इस तरह के कदम व्यापार अवरोध पैदा करने वाले होते हैं।

उन्होंने कहा कि इसके खिलाफ, भारत ने यूरोपीय संघ के समक्ष कई बार अपनी चिंता व्यक्त की है। सरकार लेनदेन की लागत को कम करने के तरीकों पर भी विचार कर रही है। यूरोपीय संघ के इस निर्णय से भारतीय निर्यातकों को नुकसान होगा, क्योंकि भारत के लिए यूरोप शीर्ष निर्यात गंतव्यों में से एक है। निर्मला सीतारमण ने कहा, 2023-24 में यूरोपीय संघ के साथ भारत का कुल व्यापार 137.41 अरब डॉलर था, जिसमें आयात 61.48 अरब डॉलर और निर्यात 75.93 अरब डॉलर था। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि इसकी संभावना बहुत कम है कि सीबीएएम के चलते भारत का यूरोपीय संघ के साथ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) को अंतिम रूप देने में दिक्कत आएगी। उन्होंने कहा, हम 2030 तक कार्बन उत्सर्जन में कमी के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

ब्रिटानिया और बेल ग्रुप ने भारत में चीज़ के स्थानीय निर्माण के लिए अपनी साझेदारी को बनाया मजबूत

मुंबई, एजेंसी। भारत के प्रमुख चीज़ प्लेयर ब्रिटानिया बेल फूड्स ने महत्वाकांक्षी संयुक्त उद्यम स्थापित करने के तकरीबन दो वर्ष बाद आज अपने विकास में उल्लेखनीय उपलब्धि की घोषणा की है। कंपनी ने भारत में चीज़ फैक्टरी का उद्घाटन किया, जहां ब्रिटानिया द लाफिंग काओ प्रोडक्ट्स का उत्पादन स्थानीय रूप से किया जाएगा। कंपनी का यह कदम भारतीय उपभोक्ताओं को स्थानीय रूप से निर्मित सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता के उत्पाद उपलब्ध कराने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। भारत में दूध के उत्पादन की बात करें तो इस दृष्टि से महाराष्ट्र अग्रणी राज्य है, जहां का डेयरी सिस्टम अपने आप में परिपक्व है। ऐसे में यह चीज़ फैक्टरी की लोकेशन के लिए सही चुनाव है, जिसकी स्थापना रंजनगांव के ब्रिटानिया डेयरी फूड पार्क में की जाएगी।

स्थानीय दूध किसानों को समर्थन और दूध की खरीदन के लिए सशक्त प्रोग्राम- प्लांट में दूध की खरीद के लिए सशक्त प्रोग्राम है, जिसके तहत रोज़ाना पुणे एवं आस-पास के 3000 से अधिक किसानों से तकरीबन 4 लाख लीटर 100 फीसदी गाय का दूध खरीदा जाता है। ब्रिटानिया ने पिछले कुछ ही सालों में दूध की खरीद के इस प्रोग्राम का पैमाना बढ़ाया है, जिसके तहत फैक्टरी से 100 किलोमीटर की त्रिज्या में 70 ग्रामीण स्तरीय बल्क-मिल्क कूलर इंस्टॉल किए गए हैं, जो पूणे और आस-पास के ज़िलों में 10 तहसीलों में फैले हैं। यह पहल स्थानीय किसानों को समर्थन प्रदान करते हुए स्थायी आपूर्ति श्रृंखला के निर्माण में योगदान देगी तथा समुदाय एवं कृषि के विकास के लिए ब्रिटानिया की प्रतिबद्धता को और मजबूत बनाएगी। ब्रिटानिया के दूध संग्रहण केन्द्रों में आधुनिक जांच क्षमता है, जो सुनिश्चित करती है कि साईट पर कच्चे दूध की गुणवत्ता का मूल्यांकन 31 मानकों तथा 20 अतिरिक्त मानकों के आधार पर किया जाए, इस जांच में खरा उतरने के बाद ही दूध को फैक्टरी में स्वीकार किया जाता है।

अपने 3000 से अधिक किसानों के स्थानीय समुदाय को समर्थन प्रदान करने के लिए ब्रिटानिया इंटीग्रेटेड सपोर्ट प्रोग्राम भी चलाती है, जो मवेशियों के प्रबन्धन, प्रजनन एवं आहार के तीन सिद्धान्तों पर आधारित है। इस प्रोग्राम के तहत सर्वश्रेष्ठ प्रथाओं को शामिल किया जाता है जैसे पशुओं के लिए स्वास्थ्य शिविर, किसानों के लिए प्रशिक्षण एवं प्रजनन प्रशिक्षण प्रोग्राम, किसानों में उच्च गुणवत्ता के चारा बीज का वितरण और उनके लिए पारदर्शी तरीकों से प्रत्यक्ष भुगतान की सुविधा।

आधुनिक सुविधाओं से युक्त फैक्टरी के उद्घाटन के साथ नया कदम

ब्रिटानिया डेयरी सुविधाओं सहित संयुक्त उद्यम से तकरीबन 220 करोड़ के निवेश के साथ नई ग्रीनफील्ड फैक्टरी महाराष्ट्र के सबसे बड़े फूड पार्कों में से एक में स्थापित की गई है। इसे ब्रिटानिया की आधुनिक डेयरी उत्पादन युनिट में शामिल किया गया है, जो ब्रिटानिया के डेयरी उत्पादों की व्यापक रेंज का उत्पादन करती है, जिसमें ब्रिटानिया द लाफिंग काओ चीज़ और अन्य प्रोडक्ट्स की सम्पूर्ण रेंज जैसेःस्लाइस, ब्लॉक्स, स्प्रैड, डाइस्ड और क्यूब्स शामिल हैं। 5 प्रोडक्शन लाईन्स से युक्त इस युनिट की कुल उत्पादन क्षमता की बात करें तो यह नैचुरल चीज़ जैसे चैडर और मोज़रेला के लिए 6000 टन सालाना तथा प्रोसेस्ड चीज़ के लिए लगभग 10,000 टन सालाना है। इस फैक्टरी की स्थापना से क्षेत्र में रोज़गार के असंख्य अवसर उत्पन्न होंगे, जिससे स्थानीय रोज़गार और क्षेत्र के आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। पिछले कुछ सालों के दौरान महाराष्ट्र की राज्य सरकार ने रंजनगाव स्थित ब्रिटानिया मेगा फूड फैक्टरी को अल्ट्रा मेगा प्रोजेक्ट के रूप में पहचाना और काफी सहयोग प्रदान किया है, इसी के मद्देनज़र ब्रिटानिया को कस्टमाइज़्ड इन्सेंटिव पैकेज दिया गया है।

मयूख डीलट्रेड लिमिटेड राइट्स इश्यू के जरिए रु. 49 करोड़ जुटाएगी

मुंबई, एजेंसी। विभिन्न प्रकार के बर्नर के निर्माण में कार्यरत बीएसई लिस्टेड फर्म मुंबई स्थित मयूख डीलट्रेड लिमिटेड के बोर्ड ऑफ डिरेक्टर्स ने 30 अगस्त, 2024 को कंपनी के पात्र शेयरधारकों को राइट इश्यू द्वारा इक्विटी शेयर इश्यू करके रु. 49 करोड़ तक की धनराशि जुटाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। बोर्ड ने प्रबंध निदेशक और सीएफओ को सलाहकार नियुक्त करने और राइट इश्यू की प्रक्रिया शुरू करने के लिए भी अधिकृत किया है। बोर्ड ने 1 शेयर के पांच शेयर में शेयर विभाजन के प्रस्ताव को भी मंजूरी दे दी। बोर्ड ने कंपनी की साधारण बैठक में शेयरधारकों की मंजूरी के अधीन, रु. 5 के अंकित मूल्य के 1 इक्विटी शेयर को (पूरी तरह से भुगतान किए गए) रु. 1 के अंकित मूल्य के 5 इक्विटी शेयरों में उप-विभाजन के प्रस्ताव पर चर्चा की और मंजूरी दे दी। बोर्ड ने प्रत्येक रु. 1 के अतिरिक्त 33 करोड़ इक्विटी शेयरों के निर्माण द्वारा अधिकृत शेयर पूंजी को रु. 30 करोड़ को प्रत्येक रु. 1 के 30 करोड़ इक्विटी शेयरों में विभाजित करने के बाद बढाकर रु. 63 करोड को प्रत्येक रु. 1 के 63 करोड़ इक्विटी शेयरों में विभाजित करने के प्रस्ताव पर भी चर्चा की और मंजूरी दे दी, जो कंपनी की साधारण बैठक में शेयरधारकों की मंजूरी के अधीन है। कंपनी ने हाल ही में 30 जून, 2024 को समाप्त तिमाही के लिए मजबूत वित्तीय परिणामों की घोषणा की थी। वित्त वर्ष 2025 की पहली तिमाही के लिए, कंपनी ने रु. 33.77 लाख का शुद्ध लाभ दर्ज किया है, जो पिछले वित्त वर्ष में इसी अवधि में दर्ज किए गए रु. 7.90 लाख के शुद्ध लाभ की तुलना में 327.46 प्रतिशत की तेज वृद्धि है।

इराया लाइफस्पेसेज की सहायक कंपनी एबिक्स कैश ने पीएनबी के साथ अनुबंध किया

मुंबई, एजेंसी। इराया लाइफस्पेसेज लिमिटेड (बीएसई- 531035) ने घोषणा की है कि हाल ही में अधिग्रहीत व्यवसाय की भारतीय प्रमुख सहायक कंपनी एबिक्स कैश लिमिटेड ने नेटवर्क इंटीग्रेटिंग सेवाओं के लिए पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी), जो भारत के शीर्ष तीन सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में से एक है, के साथ एक महत्वपूर्ण अनुबंध किया है।

लगभग 138.75 करोड़ रुपये के इस अनुबंध को अगले 3 वर्षों के लिए प्रदान किया गया है, जो न केवल कंपनी की क्षमताओं को दर्शाता है बल्कि अर्थव्यवस्था के इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में कंपनी की प्रमुखता और उपलब्ध अपार अवसरों को भी उजागर करता है, जो राष्ट्रीय स्तर पर समावेशी विकास और बैंकिंग सेवाओं की पहुंच को बढ़ावा देता है। 2021 से, एबिक्स पंजाब नेशनल बैंक के पूरे भारत में फैले नेटवर्क का प्रबंधन कर रहा है। कंपनी ने पुष्टि कि है इस अनुबंध को 1 अक्टूबर, 2024 से शुरू होने वाले अतिरिक्त तीन वर्षों के लिए नवीनीकृत किया गया है। इस अनुबंध के तहत

ERAAYA Lifespaces Limited

कवर की जाने वाली सेवाएं पीएनबी के व्यापक नेटवर्क को शामिल करेंगी, जिसमें 10,800 शाखाएं, 5,000 एटीएम और पीएनबी द्वारा प्रायोजित 4,000 क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक शाखाएं शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, एबिक्स कैश दिल्ली में स्थित अत्याधुनिक डेटा सेंटर, आधुनिक नेटवर्क ऑपरेशंस सेंटर और मुंबई में डिजास्टर रिकवरी सेंटर का प्रबंधन करेगा, साथ ही 13 जोनल ऑफिस और 131 सर्कल ऑफिस भी इसके अंतर्गत आएंगे।

हुंडई मोटर इंडिया लिमिटेड की आरंभिक सार्वजनिक पेशकश 15 अक्टूबर, 2024 को खुलेगी

मुंबई, एजेंसी। हुंडई मोटर इंडिया लिमिटेड (कंपनी) ने मंगलवार, 15 अक्टूबर, 2024 को इक्विटी शेयरों की अपनी आरंभिक सार्वजनिक पेशकश (आईपीओ - ऑफर) खोलने का प्रस्ताव किया है। कंपनी हुंडई मोटर समूह की अंग है, जो क्रिसिल रिपोर्ट के अनुसार कैलेंडर वर्ष 2023 में यात्री वाहन बिक्री के आधार पर दुनिया में तीसरी सबसे बड़ी ऑटो ओईएम थी। एंकर इन्वेस्टर बोली की तारीख बोली/ऑफर खुलने की तारीख से एक कार्य दिवस पहले है, जो सोमवार, 14 अक्टूबर, 2024 है। बोली/ऑफर बंद होने की तारीख गुरुवार, 17 अक्टूबर, 2024 है। ऑफर का प्राइस बैंड 1,865 प्रति इक्विटी शेयर से 1,960 प्रति इक्विटी शेयर तय किया गया है। न्यूनतम 7 इक्विटी शेयरों और उसके बाद 7 इक्विटी शेयरों के गुणकों के लिए बोली लगाई जा सकती हैं।

मर्सिडीज बेंज इंडिया ने नई ई क्लास एलडब्लूबी के लॉन्च के साथ सेगमेंट को नई परिभाषा दी

मुंबई, एजेंसी। भारत की सबसे डिज़ायरेबल लग्जरी कार निर्माता कंपनी, मर्सिडीज-बेंज ने आज देश की सबसे पसंदीदा एक्ज़िक्यूटिव बिजनेस सलून, ऑल-न्यू लॉन्ग व्हीलबेस ई-क्लास का लॉन्च किया नई एलडब्ल्यूबी ई-क्लास ने मर्सिडीज-बेंज के सेडान पोर्टफोलियो को और ज्यादा मजबूत किया है। यह भारतीय बाजार में सबसे ज्यादा बिकने वाले मॉडल की छठी पीढ़ी है। भारतीय सड़कों पर 57,000 से अधिक ई-क्लास वाहनों के साथ यह देश में सभी सेगमेंट्स में सबसे सफल लग्जरी सलून है। मर्सिडीज-बेंज ई-क्लास भारत में 'लॉंगेस्ट रनिंग प्रोडक्शन कार' भी है, जिसका उत्पादन 1995 में शुरू किया गया था।

संतोष अय्यर, मैनेजिंग डायरेक्टर एवं सीईओ, मर्सिडीज-बेंज इंडिया ने कहा

हमारी अब तक की सबसे अच्छी क्यू3 और सर्वाधिक वाईटीडी सेल्स परफॉर्मेंस भारत के सबसे डिज़ायरेबल लग्ज़री कार ब्रांड के रूप में मर्सिडीज-बेंज में हमारे ग्राहकों के विश्वास का प्रमाण है। इस चुनौतीपूर्ण बाजार में बेहतरीन सफलता हमारे डिज़ायरेबल प्रोडक्ट्स की शक्ति, बेहतर ग्राहक अनुभव और हमारी फाईनेंशल सर्विसेज़ का बेजोड़ वैल्यू प्रपोज़िशन प्रदर्शित करती है। अपने फ्रैंचाईज़ी पार्टनर्स के साथ हम अपने प्रबुद्ध ग्राहकों को विश्वस्तरीय रिटेल अनुभव और पर्सनालाईज़्ड इंगेजमेंट प्रदान कर रहे हैं।

होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर इंडिया ने 1 करोड़ उपभोक्ताओं का आंकड़ा पार किया

मुंबईः होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर इंडिया (एचएमएसआई) ने आज देश के मध्य भारत में उल्लेखनीय उपलब्धि की घोषणा की है, जिसमें उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखण्ड और छत्तीसगढ़ शामिल हैं। एचएमएसआई ने इन राज्यों में 1 करोड़ दोपहिया वाहनों की समग्र बिक्री का आंकड़ा पार कर लिया है, जो कंपनी की सशक्त मौजूदगी तथा खरीददारों के पसंदीदा ब्राण्ड के रूप में इसकी मजबूत स्थिति की पुष्टि करता है। होण्डा ने 2001 में अपने पहले दोपहिया वाहन एक्टिवा के साथ भारतीय बाज़ार में प्रवेश किया और इसके बाद कंपनी द्वारा रचा गया इतिहास सबके सामने है। पिछले सालों के दौरान कंपनी ने कई उपलब्धियां हासिल की हैं और विभिन्न क्षेत्रों के उपभोक्ताओं की ज़रूरतों को पूरा करते हुए भारत के सबसे पसंदीदा दोपहिया ब्राण्ड्स में से एक रूप में अपनी स्थिति को बनाए रखे हुए है।

टाइटन ने त्योहारों के लिए लॉन्च किया स्टेलर 2.0 कलेक्शन- एक्सप्लोर द अनएक्सप्लोर्ड

मुंबई, एजेंसी। भारत के अग्रणी घड़ी ब्रांड टाइटन वॉचेस ने आगामी त्योहारी सीज़न के लिए अपना बहुप्रतीक्षित स्टेलर 2.0 कलेक्शन लॉन्च किया है। पिछले साल की कॉस्मिक-प्रेरित घड़ियों की उल्लेखनीय सफलता के बाद अब स्टेलर 2.0 घड़ी निर्माण की कला को नयी बुलंदियों पर ले जाता है, ब्रह्मांड के ज़रिए मंत्रमुग्ध कर देने वाला अनुभव प्रदान करता है। आकाशीय कैनवास से प्रेरित, यह नया कलेक्शन जटिल डिज़ाइन और नयी सामग्रियों के साथ आकाशीय अजूबों की सुंदरता को कैप्चर करते हुए,

आकाश के प्रति मनुष्य के स्थायी आकर्षण की याद दिलाता है।

13 बेहतरीन घड़ियों का यह कलेक्शन भारतीय घड़ी निर्माण में नए मानक स्थापित करता है। इसमें तीन मुख्य विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है- मूवमेंट, सामग्री और कार्यक्षमता। टाइटन के खास इन-हाउस ऑटोमैटिक मूवमेंट में ओपन हार्ट, मल्टी-फंक्शन, सन-मून और मून-फ़ेज़ शामिल हैं, जो बेजोड़ सटीकता के साथ, जटिल फंक्शन्स को क्षमता प्रदान करते हैं।

राजस्थान में ऑल इंडिया सब जूनियर रैंकिंग टूर्नामेंट 4 नवंबर से

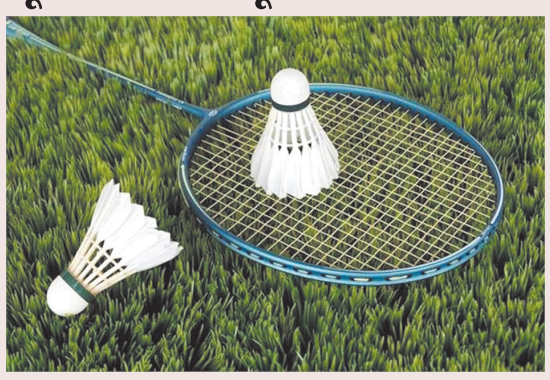

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजस्थान बैडमिंटन एसोसिएशन की ओर से बैडमिंटन एसोसिएशन ऑफ इंडिया की देखरेख में राजस्थान के जयपुर में 4 से 12 नवंबर तक ऑल इंडिया सब जूनियर रैंकिंग बैडमिंटन टूर्नामेंट 2024 करवाया जाएगा। टूर्नामेंट के लिए क्वालिफाइंग दौर 4 से 8 नवंबर और मेन ड्रा 9 से 12 नवंबर तक होगा। टूर्नामेंट के सवाई मानसिंह स्टेडियम के इंडोर बैडमिंटन हाल में करवाया जाएगा जिसकी ईनामी राशि कुल 6 लाख रुपए होगी।

टूर्नामेंट में बीएस 17 से लेकर एक्स डी 17 तक की 10 कैटेगरी हैं इनमें विजेताओं को 29 हजार से लेकर 31 हजार की राशि ईनाम में दी जाएगी जबकि रनरअप को 14,500 से लेकर 15 हजार तक की राशि मिलेगी। टूर्नामेंट में खिलाड़ी ब्वॉयज सिंगल, गर्ल सिंगल, ब्वॉयज डबल, गर्ल्स डबल, मिक्सड डबल वर्ग में अंडर 16 और अंडर 17 कैटेगरी के तहत हिस्सा ले सकेंगे।

हॉकी इंडिया लीग भारतीय हॉकी की तस्वीर बदल सकती है: सलिमा टेटे

बेंगलुरु (एजेंसी)। भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान सलीमा टेटे का मानना है कि आगामी हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) युवा खिलाड़ियों के करियर को आकार देने और राष्ट्रीय टीम के लिए मजबूत 'बेंच स्ट्रेंथ' (टीम के वैकल्पिक खिलाड़ी) बनाने में मदद करेगी। इस साल के आखिर में शुरू होने वाली इस बहुप्रतीक्षित लीग की सात साल बाद वापसी हो रही है।

नए स्वरूप में एचआईएल में महिलाओं की अलग स्पर्धा पहली बार आयोजित होगी जो पुरुष प्रतियोगिता के साथ-साथ चलेगी। यह लीग 28 दिसंबर से एक फरवरी तक दो आयोजन स्थलों रांची (महिला) और राउरकेला (पुरुष) में खेली जाएगी। पुरुषों की प्रतियोगिता में आठ तो महिलाओं की प्रतियोगिता में छह टीमें शिरकत करेंगी।

सलीमा ने कहा, 'मैं एचआईएल के लिए बहुत उत्साहित हूं, यह सात साल बाद दोबारा शुरू हो रहा है और इस बार इसमें महिला लीग भी है। पूरी टीम पिछले कुछ दिनों से इस बात पर चर्चा कर रही है कि यह हमारे लिए कितना बढ़िया अवसर है। हमें अलग-अलग देशों के खिलाड़ियों से मिलने, उनके साथ और उनके खिलाफ खेल कर बेहतर होने का मौका मिलेगा।उन्होंने कहा, 'इससे युवा खिलाड़ियों को भारतीय और विदेशी खिलाड़ियों की दिनचर्या से खेल को बेहतर समझने का मौका मिलेगा। करियर की शुरुआत में ही दबाव वाले पेशेवर माहौल में रहना उनके विकास के लिए अच्छा होगा। उन्होंने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि एचआईएल टीम से बाहर रहने वाले खिलाड़ियों के लिए भी फायदेमंद होगा जो उन्हें शीर्ष स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने और खुद को निखारने का मौका देगा।

संन्यास के आपके फैसले से हैरान हूं

खेलमंत्री मांडविया ने जिम्नास्ट दीपा कर्माकर को लिखा पत्र

नई दिल्ली (एजेंसी)। खेलमंत्री मनसुख मांडविया ने बुधवार को जिम्नास्ट दीपा कर्माकर को पत्र लिखकर खेल से संन्यास लेने के उनके फैसले पर हैरानी जताई। ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करने वाली पहली भारतीय महिला जिम्नास्ट बनी दीपा रियो ओलंपिक 2016 में चौथे स्थान पर रही थी। उन्होंने सोमवार को खेल को अलविदा कह दिया।

मांडविया ने दीपा को लिखे पत्र में कहा, 'मुझे पता चला कि आपने जिम्नास्टिक से संन्यास ले लिया है। आपके फैसले पर मैं आश्चर्यचकित हूं लेकिन मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपने जीवन की महत्वपूर्ण प्राथमिकताओं और अनुभवों को ध्यान में रखते हुए यह फैसला लिया होगा। मैं आपके इस निर्णय का पूर्ण सम्मान करता हूं। उन्होंने कहा, 'आपकी जिम्नास्टिक की यात्रा जो मात्र छह वर्ष की आयु से प्रारंभ हुई, अत्यंत ही प्रेरणादायक रही। आपने इस खेल में अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए सफलता के उच्च शिखरों को छुआ और देश को गौरवान्वित किया। मेजर ध्यानचंद खेल रत्न और पद्मश्री जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित होना आपके अद्वितीय योगदान का प्रमाण है। उन्होंने आगे लिखा, 'आपका ओलंपिक में हिस्सा लेकर भारतीय जिम्नास्टिक्स में एक नया अध्याय जोड़ना और इस खेल में भाग लेने वाली प्रथम भारतीय महिला बनना न केवल आपके व्यक्तिगत परिश्रम का परिणाम बल्कि पूरे देश के लिये गर्व का विषय है।

हैरी ब्रुक ने पाकिस्तान के खिलाफ लगाया तिहरा शतक

नहीं तोड़ पाए वीरेंद्र सहवाग का रिकॉर्ड

टेस्ट क्रिकेट में सबसे तेज तिहरा शतक
वीरेंद्र सहवाग - 278 गेंदें।
हैरी ब्रूक - 310 गेंदें।

हैरी ब्रूक का रिकॉर्ड
पहले टेस्ट में शतक
दूसरे टेस्ट में शतक
तीसरे टेस्ट में शतक
चौथे टेस्ट में दोहरा शतक
हैरी ब्रूक ने पाकिस्तान में 4 टेस्ट मैचों में 1 तीहरा शतक और 3 शतक लगाए हैं।

टेस्ट पारी में 300 रन बनाने वाले इंग्लैंड प्लेयर

लेन हटन	एंडी सैंडहम
वैली हैमंड	जॉन एडरिक
ग्राहम गूच	हैरी ब्रूक

मुल्तान (एजेंसी)। हैरी ब्रूक ने गुरुवार को पाकिस्तान के खिलाफ पहले टेस्ट मैच के चौथे दिन गुरुवार को रिकार्ड तिहरा शतक जड़ दिया है। 34 साल में पहली बार इंग्लैंड की ओर से हैरी ब्रूक ने तिहरा शतक जड़ने का कारनामा किया है। इसी के साथ वह टेस्ट क्रिकेट में तिहरा शतक जड़ने वाले इंग्लैंड के छठे बल्लेबाज बन गए हैं। 1990 के बाद किसी इंग्लैंड प्लेयर ने टेस्ट की एक पारी में 300 रन के आंकड़े को छुआ है। मैच के 143.3 ओवर में सैम अयूब की गेंद पर चौका लगाकर ब्रूक ने अपना तिहरा शतक पूरा किया। ब्रुक ने भले ही पाकिस्तान के खिलाफ लेकिन वह वीरेंद्र सहवाग के सबसे तेज तीसरे शतक के रिकॉर्ड को तोड़ने में कामयाब नहीं हो पाए। शतक पूरा करने के साथ ही उन्होंने आसमान की ओर देखते हुए ड्रेसिंग रूम की तरफ बैट उठाने के बाद अपनी दिवंगत दादी पॉलीन को सलाम किया। हैरी ब्रूक ने 322 गेंदों पर 29 चौकों और 3 छक्कों की मदद से 317 रन बनाए जिस वजह से इंग्लैंड ने 823/7 के साथ पारी घोषित की। इंग्लैंड ने टेस्ट में तीसरी बार 800 प्लस रन बनाए हैं। वहीं इससे पहले हैरी ब्रूक ने अपने टेस्ट करियर का पहला दोहरा शतक 239 गेंदों पर पूरा किया था।

मारते जाओ बॉल को, रिंकू सिंह को कोच और कप्तान से मिले मैसेज का खुलासा किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। बड़े शॉट लगाने वाले रिंकू सिंह का कहना है कि मुख्य कोच गौतम गंभीर और कप्तान सूर्यकुमार यादव ने भारतीय खिलाड़ियों को मैदान पर खुद को अभिव्यक्त करने, अपनी स्वाभाविक शैली को अपनाने और लगातार आक्रामक रहने का अधिकार दिया है।

रिंकू ने पांचवें नंबर पर 29 गेंदों पर 53 रन बनाए और नीतीश कुमार रेड्डी (74) के साथ 49 गेंदों पर 108 रनों की महत्वपूर्ण साझेदारी की जिसने बुधवार को यहां दूसरे टी20 मैच में बांग्लादेश पर भारत की 86 रनों की जीत की नींव रखी।

भारत द्वारा 2-0 की अजेय बढ़त के बाद रिंकू ने कहा, कोच और कप्तान ने हमें अपना खेल खेलने के लिए कहा है और स्थिति चाहे जो भी हो, उनका संदेश है कि मारते जाओ बॉल को। आईपीएल में कोलकाता नाइट राइडर्स में गंभीर के साथ काम कर चुके रिंकू ने कहा, %कोच ने हमें खुद पर भरोसा करने और अपना खेल खेलने के लिए कहा है। उन्होंने हमें गेंद को हिट करने की पूरी आजादी दी है। रिंकू को बुधवार को छठे ओवर में एक्शन में बुलाया गया, जब भारत पावरप्ले के अंदर स्कोर 41/3 पर था। यूपी के इस तेजतर्रार बल्लेबाज ने अपनी मानसिकता के बारे में बताया। उन्होंने कहा, मैं जिस पोजीशन पर खेलता हूं, वहां मुझे खेल के अलग-अलग मोड़ पर बल्लेबाजी करनी पड़ती है। जब भी मैं पहले बल्लेबाजी करने आता हूं, तो मेरा लक्ष्य सिंगल और डबल लेना और खराब गेंदों पर हमला करना होता है। जब मैं 2-3 ओवर बचे होने पर बल्लेबाजी करने आता हूं, तो मेरा लक्ष्य अधिक चौके और छक्के लगाना होता है।

22 बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन राफेल नडाल ने अलविदा किया टेनिस को

आंखों से छलके आंसू.... लाल बजरी के बादशाह

राफेन नडाल को किंग ऑफ क्ले यानी लाल बजरी का बादशाह इसीलिए कहते हैं
दरअसल, उन्होंने फ्रांस में खेली जाने वाले ग्रैंड स्लैम फ्रेंच ओपन को रिकॉर्ड 14 बार जीता। इस टूर्नामेंट को लाल बजरी पर खेला जाता है। यही वजह है कि उन्हें इसका किंग कहा जाता है।

स्पेन(एजेंसी)। सर्वकालिक महानतम टेनिस खिलाड़ियों में से एक राफेल नडाल संन्यास का ऐलान कर दिया है। उन्होंने एक वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर करते हुए अपने चाहने वालों को रिटायरमेंट की खबर दी। 22 बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन ने उस खेल को अलविदा कहा, जिसमें उन्होंने अब तक के सबसे पसंदीदा खिलाड़ियों में से एक के रूप में अपनी पहचान बनाई थी। उन्हें मौजूदा दौर में स्विट्जरलैंड के रोजर फेडरर और सर्बिया के नोवाक जोकोविच के साथ महान खिलाड़ियों में शामिल किया जाता है।

पिछले महीने नडाल ने लेवर कप 2024 से अपना नाम वापस ले लिया था। यह प्रोफेशनल टेनिस में उनका आखिरी अंतिम इवेंट था। पेरिस 2024 ओलंपिक के बाद नडाल ने पुष्टि की थी कि 2024 में लेवर कप उनका अगला इवेंट होगा। नडाल ने लेवर कप में 2017 में प्राग, 2019 में जिनेवा और फिर 2022 में लंदन में हिस्सा लिया था, जो उनके दोस्त और महान रोजर फेडरर के करियर के आखिरी मैच भी था। उन्होंने उसमें रोजर फेडरर के साथ जोड़ी बनाकर डबल्स में हिस्सा लिया था।

22 बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन ने पहले संकेत दिया था कि 2024 उनके दौरे का आखिरी साल हो सकता है। नडाल का इस सीजन में 12-7 मैच रिकॉर्ड है और उन्होंने आखिरी बार पेरिस ओलंपिक में भाग लिया था, जहां वह दूसरे दौर में नोवाक जोकोविच से हार गए थे।

राफेल नडाल ने 22 ग्रैंड स्लैम कब-कब जीते

ऑस्ट्रेलियन ओपन- 2009, 2022
फ्रेंच ओपन- 2005, 2006, 2007, 2008, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2017, 2018, 2019, 2020, 2022
विंबलडन- 2008, 2010
यूएस ओपन- 2010, 2013, 2017, 2019

स्पेन के लिए अपना अंतिम प्रतिस्पर्धी मैच खेलेंगे

38 वर्षीय टेनिस आइकन नवंबर में मैलागा में होने वाले डेविस कप फाइनल में स्पेन के लिए अपना अंतिम प्रतिस्पर्धी मैच खेलेंगे। उन्होंने कहा, मैं बहुत उत्साहित हूं कि मेरा आखिरी टूर्नामेंट डेविस कप का फाइनल होगा, जिसमें मैं अपने देश का प्रतिनिधित्व करूंगा। मुझे लगता है कि मैं एक पूर्ण चक्र में आ गया हूं क्योंकि एक पेशेवर टेनिस खिलाड़ी के रूप में मेरी पहली खुशियों में से एक 2004 में डेविस कप फाइनल था।

'सोने जैसे दिल वाला व्यक्ति'

खेल जगत ने दिग्गज उद्योगपति रतन टाटा के निधन पर जताया शोक

नई दिल्ली (एजेंसी)। खेल जगत ने दिग्गज उद्योगपति रतन टाटा के निधन पर सोशल मीडिया पर शोक जताया और कहा कि वह सोने जैसा दिल वाले व्यक्ति थे। टाटा संस के मानद चेयरमैन रतन टाटा का बुधवार रात मुंबई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने बुधवार रात कहा कि उनका अंतिम संस्कार पूरे राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा। उन्होंने कहा कि टाटा का पार्थिव शरीर सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक दक्षिण मुंबई के नेशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स (एनसीपीए) के लॉन में रखा जाएगा, ताकि लोग उन्हें श्रद्धांजलि दे सकें।

एनसीपीए, नरीमन पॉइंट में तैयारियां चल रही हैं, जहां अंतिम संस्कार से पहले लोगों के अंतिम दर्शन के लिए पार्थिव शरीर रखा जाएगा। टीम इंडिया के कप्तान रोहित शर्मा ने कहा कि रतन टाटा को ऐसे व्यक्ति के रूप में याद किया जाएगा, जो वास्तव में परवाह करता था। उन्होंने एक्स पर लिखा, एक ऐसा व्यक्ति, जो दूसरों की परवाह करता था सोने जैसे दिल वाला। सर, आपको हमेशा एक ऐसे व्यक्ति के रूप में याद किया जाएगा, जिसने वास्तव में परवाह की और अपना जीवन दूसरों को बेहतर बनाने के लिए जिया।

सचिन तेंदुलकर ने एक्स पर फोटो शेयर करते हुए लिखा, अपने जीवन और निधन में, श्री रतन टाटा ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया है। मुझे उनके साथ समय बिताने का सौभाग्य मिला, लेकिन लाखों लोग, जो उनसे कभी नहीं मिले, वे भी वही दुख महसूस करते हैं जो मैं आज महसूस कर रहा हूं।

उनका प्रभाव ऐसा ही है। जानवरों के प्रति उनके प्रेम से लेकर परोपकार तक, उन्होंने दिखाया कि सच्ची प्रगति तभी हासिल की जा सकती है जब हम उन लोगों की देखभाल करें जिनके पास खुद की देखभाल करने के साधन नहीं हैं। रेस्ट इन पीस, श्री टाटा। आपकी विरासत आपके द्वारा बनाए गए संस्थानों और आपके द्वारा अपनाए गए मूल्यों के माध्यम से जीवित रहेगी।

डबल ओलंपिक पदक विजेता नीरज चोपड़ा ने अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर कहा कि अनुभवी उद्योगपति एक दूरदर्शी थे और उन्होंने पूरे देश को प्रेरित किया।

नीतीश-अभिषेक के प्रदर्शन पर बोले पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर बासित अली ने की प्रशंसा

पैट कमिंस का 'विशेष उल्लेख' किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान के पूर्व क्रिकेटर बासित अली ने गुरुवार को भारतीय क्रिकेटरों अभिषेक शर्मा और नीतीश कुमार रेड्डी के श्रीलंका के खिलाफ दूसरे टी20 मैच में दमदार प्रदर्शन की प्रशंसा की। भारत ने बुधवार को अरुण जेटली स्टेडियम में बांग्लादेश पर 86 रनों की जीत दर्ज की। अभिषेक ने 136.36 की स्ट्राइक रेट से 11 गेंदों पर 15 रन बनाए। उन्होंने अपने दो ओवर के स्पेल में एक विकेट भी लिया और 10 रन दिए। वहीं नीतीश रेड्डी ने 217.65 की स्ट्राइक रेट से 34 गेंदों पर 74 रनों की शानदार पारी खेली। उन्होंने अपने चार ओवर के स्पेल में दो विकेट भी चटकाए।

अपने आधिकारिक यूट्यूब चैनल पर बोलते हुए बासित अली ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में अभिषेक शर्मा और नीतीश कुमार रेड्डी का समर्थन करने के लिए सनराइजर्स हैदराबाद के कप्तान पैट कमिंस का विशेष उल्लेख किया। पूर्व क्रिकेटर ने कहा कि अगर वह स्क्रा कप्तान का नाम नहीं लेंगे तो यह अनुचित होगा। बासित ने कहा, पैट कमिंस का विशेष उल्लेख। अगर मैं उनका नाम नहीं लूंगा तो यह अनुचित होगा। जिस तरह से उन्होंने आईपीएल में अभिषेक शर्मा और नीतीश कुमार रेड्डी का समर्थन किया है, हमें उस पर ध्यान देना चाहिए।

मैच की बात करें तो बांग्लादेश ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। एक समय भारत का स्कोर 41/3 था, लेकिन नीतीश (34 गेंदों में 74 रन) और रिंकू सिंह (29 गेंदों में 5 चौकों और तीन छक्कों की मदद से 53 रन) ने 108 रनों की मैच बचाने वाली साझेदारी की। हार्दिक पांड्या (19 गेंदों में 32 रन, दो चौकों और दो छक्कों की मदद से) ने शानदार पारी खेलकर भारत को 20 ओवर में 221/9 तक पहुंचाया। बांग्लादेश के लिए रिशाद हुसैन (3/55) और तस्कीन अहमद (2/16) शीर्ष गेंदबाज रहे।

222 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए बांग्लादेश ने शुरुआत में रन-रेट बनाए रखा, लेकिन लगातार विकेट खोते रहे। महमदुल्लाह (39 गेंदों में 41 रन, तीन छक्कों की मदद से) को छोड़कर कोई भी अच्छी पारी नहीं खेल सका और बांग्लादेश ने 9 विकेट खोकर 135 रन बनाए। भारत ने 86 रनों से जीत दर्ज की। वरुण चक्रवर्ती (2/19) और नीतीश (2/23) भारत के शीर्ष गेंदबाजों में शामिल रहे। अभिषेक शर्मा, अर्शदीप सिंह, वाशिंगटन सुंदर और रियान पराग ने एक-एक विकेट लिया। भारत ने तीन मैचों की सीरीज में 2-0 से अजय बढ़त बना ली है। नीतीश ने अपने बेहतरीन ऑलराउंड प्रदर्शन के लिए 'प्लेयर ऑफ द मैच' का पुरस्कार जीता।

बांग्लादेश में अशांति के दौरान खामोश रहने पर शाकिब ने मांगी माफी, लौट सकते हैं स्वदेश

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश के महान क्रिकेटर शाकिब अल हसन ने पदच्युत प्रधानमंत्री शेख हसीना के खिलाफ नागरिक अशांति के दौरान खामोश रहने के लिए माफी मांगी है जिससे दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ बांग्लादेश में उनके विदाई टेस्ट खेलने का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। शाकिब 21 अक्टूबर से मीरपुर में शुरू हो रहे पहले टेस्ट के बाद इस प्रारूप से विदा लेना चाहते हैं।

चटगांव में दूसरा टेस्ट भी होगा लेकिन माना जा रहा है कि वह पहला मैच खेलकर अमेरिका चले जाएंगे जहां वह अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ रहते हैं। शाकिब ने फेसबुक पर लिखा, 'मैं उन सभी छात्रों को श्रद्धांजलि देता हूं जिन्होंने पक्षपात विरोधी आंदोलन की अगुवाई की और अपनी जान गंवा दी या घायल हो गए।

बांग्लादेश में हत्या के एक मामले में आरोपी शाकिब ने कहा, 'प्रियजनों को खोने की क्षति की कोई भरपाई नहीं कर सकता। बच्चे या भाई को खोने की कमी कोई पूरी नहीं कर सकता। इस नाजुक दौर में मेरी खामोशी से आहत हुए लोगों से मैं क्षमायाचना करता हूं। शेख हसीना सरकार में संसद सदस्य रहे शाकिब ने कहा, 'मैं आपकी जगह होता तो मैं भी

दुखी होता।

भारत में टेस्ट श्रृंखला के दौरान 37 वर्ष के शाकिब ने आखिरी टेस्ट बांग्लादेश में खेलने की इच्छा जताई थी बशर्ते मौजूदा सरकार उन्हें सुरक्षा व्यवस्था मुहैया कराए। भारत के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला के बाद वह यूएई चले गए क्योंकि वह जून में टी20 विश्व कप के बाद इस प्रारूप को अलविदा कह चुके हैं। उन पर प्रदर्शनों के दौरान एक छात्र की हत्या का आरोप है लेकिन शाकिब उस समय कनाडा में एक टी20 लीग खेल रहे थे।

बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड के नए अध्यक्ष फारूक अहमद ने शाकिब के अनुरोध को खारिज करते हुए कहा था कि बीसीबी कोई सुरक्षा एजेंसी नहीं है और उन्हें सुरक्षा कवर की गारंटी नहीं दे सकती। सरकार के खेल सलाहकार आसिफ महमूद ने हालांकि कहा कि अपना राजनीतिक नजरिया अगर वह स्पष्ट कर देते हैं तो उन्हें सुरक्षा मुहैया कराई जा सकती है। कोलकाता नाइट राइडर्स के स्टार खिलाड़ी ने स्पष्ट किया कि बतौर राजनीतिज्ञ उनका एकमात्र लक्ष्य उनके शहर मागुरा का विकास है।

शाकिब के सार्वजनिक माफीनामे के बाद अब लगता है कि वह मीरपुर के शेर ए बांग्ला स्टेडियम पर अपना आखिरी टेस्ट खेल सकते हैं। उन्होंने लिखा, 'आप सभी को पता है कि मैं जल्दी ही अपना आखिरी मैच खेलूंगा। मैं आप सभी के सामने विदा लेना चाहता हूं। विदाई के समय उन लोगों से हाथ मिलाना चाहता हूं जिनकी शाबासी ने मुझे बेहतर खेलने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने अपने प्रशंसकों से कहा, 'मैं उन लोगों से आंख मिलाना चाहता हूं जिन्होंने मेरे अच्छा खेलने पर तालियां बजाई और खराब खेलने पर उनकी आंखें भर आई। मेरा मानना है कि विदाई की इस बेला में आप सभी मेरे साथ होंगे। हम सभी मिलकर उस कहानी का समापन करेंगे जिसके नायक मैं नहीं, बल्कि आप सभी हैं।

संक्षिप्त समाचार

नोएल टाटा, रतन टाटा के सौतेले भाई जो अब संभाल सकते हैं समूह की कमान

मुंबई, एजेंसी। टाटा समूह के मानद चेयरमैन रतन टाटा अब इस दुनिया में नहीं रहे। 86 साल की उम्र में उन्होंने अंतिम सांस ली। इसके साथ ही टाटा समूह की कमान को लेकर चर्चाएं शुरू हो गई हैं कि रतन टाटा के बाद अब अगुवाई कौन करेगा। हालांकि, इस रेस में कई नाम सामने आ रहे हैं, लेकिन सबसे आगे उनके सौतेले भाई नोएल टाटा का नाम है। हालांकि, अब तक समूह की तरफ से आधिकारिक तौर पर कुछ नहीं कहा गया है। नवल एच टाटा और सिमोन एन टाटा के बेटे हैं। टाटा इंटरनेशनल की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार, नोएल टाटा इंटरनेशनल लिमिटेड के नॉन-एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर हैं। वह टाटा समूह से 40 सालों से जुड़े हुए हैं और टाटा ग्रुप की कई कंपनियों में बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स में शामिल हैं। वह ट्रेंट, टाटा इंटरनेशनल लिमिटेड, वोल्टास और टाटा इन्वेस्टमेंट कॉर्पोरेशन के चेयरमैन हैं। साथ ही वह नोएल स्टील और टाइटन कंपनी लिमिटेड के वाइस चेयरमैन हैं। वह सर रतन टाटा ट्रस्ट और सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट के बोर्ड के ट्रस्टी भी हैं। उन्होंने ब्रिटेन की ससेक्स यूनिवर्सिटी से शिक्षा हासिल की है। साथ ही आईएनएसईडी से इंटरनेशनल एग्जीक्यूटिव प्रोग्राम पूरा किया है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, टाटा समूह ने नोएल टाटा के 3 बच्चों को परोपकारी संस्थाओं के बोर्ड में शामिल किया था। इनमें लेह, माया और नेविल का नाम शामिल है। खास बात है कि इन नियुक्तियों से ट्रस्ट्स की 132 साल पुरानी परंपरा में भी बदलाव के संकेत मिलते हैं, जहां पहले आमतौर पर दिग्गजों को ट्रस्टीशिप दी जाती थी। लेह, माया और नेविल टाटा की कई कंपनियों में मैनेजर लेवल के पदों पर भी हैं।

महाराष्ट्र की 7 जातियों को ओबीसी में शामिल करने की एनसीबीसी की सिफारिश, क्या चुनाव से पहले होगा लागू

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्रचुनाव से ठीक पहले ओबीसी आरक्षण को लेकर राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग (एनसीबीसी) के रिपोर्ट सामने आई है। एनसीबीसी ने राज्य की सात प्रमुख जातियों और उप-जातियों को केंद्रीय अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) सूची में शामिल करने की सिफारिश की है। ऐसे में सवाल यह है कि क्या सूबे में चुनाव से पहले सरकार इसे लागू करेगी जिन जातियों और उप-जातियों को शामिल करने की सिफारिश की गई है, उनमें लोध, लोढ़ा, लोधी, सूर्यवंशी गुजर, लेवे गुजर, रेवे गुजर, रेव गुजर, डंगरी, भोयर, पवार, कपेवार, मुन्नार कपेवार, मुन्नार कपु, तेलंगा, तेलंगी, पेंटररेड्डी और बुकेकारी शामिल हैं। एनसीबीसी के अध्यक्ष हंसराज अहीर ने इंडियन एक्सप्रेस से बातचीत में कहा, महाराष्ट्रसरकार के प्रस्ताव पर पिछले साल से काम चल रहा था। इस मुद्दे पर आयोग द्वारा चार से पांच बैठकों का आयोजन किया गया और गहन जांच के बाद, हमने इन जातियों को केंद्रीय ओबीसी सूची में शामिल करने की सिफारिश की है। एनसीबीसी अध्यक्ष हंसराज अहीर और आयोग के सदस्य भुवन भूषण कमल ने इस मुद्दे पर 26 जुलाई और 17 अक्टूबर को मुंबई के सह्याद्री राज्य गेस्ट हाउस में सुनवाई की। वहीं राज्य सरकार के अधिकारियों के अनुसार, सभी सिफारिश की गई जातियां पहले से ही राज्य की ओबीसी सूची में शामिल हैं। पवार, भोयर और पवार जातियों के मामले में, ये पहले से ही केंद्रीय सूची में पवार, भोयर पवार और भोयर के रूप में शामिल थीं। हालांकि, इन समुदायों ने अलग-अलग सूचीबद्ध होने की मांग की थी, जिसके परिणामस्वरूप आयोग ने इन्हें अलग-अलग शामिल करने की सिफारिश की है। भोयर, पवार और पवार समुदाय मुख्य रूप से पूर्वी महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र, विशेष रूप से भंडारा और गोंदिया जिलों में पाए जाते हैं। इन्हें पहली बार 1996 से 1998 के बीच केंद्रीय सूची में शामिल किया गया था। गुजर उप-जातियां मुख्य रूप से उत्तर महाराष्ट्रमें नासिक, जलगांव, धुले और नंदुरबार जिलों में केंद्रित हैं। मौजूदा वक्त में महाराष्ट्रकी 261 जातियां केंद्रीय ओबीसी सूची में शामिल हैं। राज्य सरकारों को जातियों को शामिल करने के लिए सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक पिछड़ेपन पर आधारित डेटा प्रस्तुत करना होता है। आयोग उस डेटा की जांच करता है और फिर केंद्र सरकार को सिफारिश भेजता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मार्च, 2026 तक नक्सलवाद को पूरी तरह समाप्त कर दिया जाएगा: शाह

नईदिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री और भारतीय जनता पार्टी के कद्दावर नेता अमित शाह ने हाल ही में वामपंथी उग्रवाद पर समीक्षा बैठक के दौरान यह स्पष्ट कर दिया कि, 'प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में मार्च, 2026 तक इस देश से नक्सलवाद को पूरी तरह समाप्त कर दिया जाएगा।'

नक्सलवाद को देश के विकास में सबसे बड़ा नासूर मानने वाले शाह का मानना है कि सुदूर इलाकों और जनजातीय लोगों तक विकास को पहुँचाने के रास्ते में में सबसे बड़ा रोड़ा नक्सलवाद है। नक्सलवाद गाँवों में शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ, कनेक्टिविटी, बैंकिंग और डाक सेवाएँ नहीं पहुँचने देता है। भारत को नक्सलवाद से मुक्त करने के लिए कटिबद्ध अमित शाह जब यह ऐलान करते हैं कि 2026 तक देश से नक्सलवाद का नामो-निशान मिटा दिया जाएगा, तो बीते वर्षों में शाह के मार्गदर्शन में नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई के ट्रैक रिकॉर्ड को समझना जरूरी हो जाता है। शाह के ऐलान का आधार भी सॉलिड है क्योंकि आँकड़े बताते हैं कि साल 2019 में अमित शाह के गृह मंत्री बनने के बाद से अब तक नक्सलवाद के खिलाफ लड़ाई में

बड़ी सफलता प्राप्त हुई है। 30 साल बाद वामपंथी उग्रवाद से संबंधित मृत्यु की संख्या 100 से कम रही, नक्सली हमलों में 72 प्रतिशत की कमी आई है जो एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। शीर्ष 14 नक्सली नेताओं को न्यूट्रलाइज़ किया गया और सरकारी कल्याणकारी योजनाओं को जमीन पर उतारा जा रहा है। आज बूढ़ा पहाड़ और चकरबंधा जैसे कई क्षेत्र वामपंथी उग्रवाद से पूरी तरह मुक्त हो चुके हैं। छत्तीसगढ़ में इस साल जनवरी से अब तक कुल 237 नक्सली मारे गए, 812 गिरफ्तार हुए और 723 ने आत्मसमर्पण किया है। नॉर्थईस्ट, कश्मीर और वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में 13 हज़ार से ज्यादा लोग हिंसा छोड़कर समाज की मुख्यधारा में शामिल हुए हैं। मोदी जी के नेतृत्व और गृह मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में वामपंथी उग्रवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति और सरकारी योजनाओं के शत-प्रतिशत इंप्लीमेंटेशन से वामपंथी उग्रवाद प्रभावित क्षेत्र अब विकास की मुख्यधारा से जुड़कर विकास की राह पर आगे बढ़ रहे हैं। बीते 5-6 सालों में वामपंथी उग्रवादी हिंसक विचारधारा की जगह विकास और विश्वास का एक नया युग शुरू करना चाहते हैं। कांग्रेस की सरकार में सुरक्षा संबंधी व्यय योजना में 2004 से 2014 तक 1,180 करोड़ रूपए खर्च हुए थे, लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की दूरदर्शिता और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की नीतियों के तहत वामपंथी उग्रवाद-प्रभावित राज्यों में सुरक्षा संबंधी व्यय को लगभग 3 गुना बढ़ाकर 3,006 करोड़ रुपये कर दिया गया है, जो बताता है कि भारतीय जनता पार्टी की नरेन्द्र मोदी सरकार नक्सलवाद पर लगाम लगाने के लिए किस कदर प्रयासरत है। वामपंथी प्रभावित क्षेत्रों में सुरक्षा के लिए नए कैंप और नए जॉइंट टास्क फोर्स बनाने के साथ-साथ राज्य पुलिस की सहायता के लिए सीआरपीएफ की बटालियन को भेजने का मतलब साफ है कि अमृतकाल में इस देश में नक्सलवाद के लिए कोई जगह नहीं है। फ्लैगशिप योजनाओं के अलावा सड़क कनेक्टिविटी, टेलीकम्युनिकेशन सुविधाओं में सुधार, वित्तीय समावेशन कौशल विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण आदि जैसे महत्त्वपूर्ण विकास के बिंदुओं पर जोर-शोर से काम किया जा रहा है। नए भारत के निर्माण में जुटे अमित शाह के ऐलान से यह स्पष्ट हो जाता है कि वामपंथी उग्रवाद के खिलाफ लड़ाई आज अपने अंतिम चरण में है।

नोएडा में अजीब कांड! 12 साल के लड़के को लेकर भागी 15 साल की लड़की, तीसरी बार हुई फरार

नोएडा , एजेंसी। नोएडा में 15 साल की एक लड़की ने परिवार और पुलिस को परेशान कर दिया है। वह तीन बार घर से भाग चुकी है। दूसरी बार 12 साल के एक पड़ोसी लेकर के साथ फरार हो गई है। दो बार उसे पुलिस बरामद करके घर वापस ला चुकी थी। अब परिवार शहर छोड़ने जा रहा था तो उसी समय एक बार फिर वह फुर्र हो गई। 12 साल का वह लड़का भी लापता है।

मामला नोएडा के सेक्टर 58 स्थित गांव बिशनपुरा का है। नाबालिग लड़की मंगलवार शाम उस घर से भागी जब परिवार बेटी की बुरी आदतों के चलते नोएडा छोड़कर बिहार जाने को तैयारी कर रहा था। पिता ऑटो लेने निकले थे और वह मां व छोटी बहन को चकमा देकर गायब हो गई। दो बार किशोरी को बरामद कर चुकी पुलिस एक बार फिर खोजने में जुट गई है।

मूलरूप से बिहार के जिला दरभंगा के रहने वाले पीड़ित ने बताया कि उनकी दो बेटियां हैं। बड़ी बेटी 15 वर्ष और छोटी बेटी 12 वर्ष की है। करीब 4 साल पहले वह बेटियों को पढ़ाने के लिए वह नोएडा आए थे। बिशनपुरा में किराए पर एक कमरा लिया। पति-पत्नी ने एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी करके बेटियों को पढ़ा रहे थे। पिता ने बताया कि फरवरी 2024 में बड़ी बेटी पड़ोस में रहने वाली दो और नाबालिग लड़कियों को साथ लेकर चली गई। पुलिस ने खोजबीन करके करीब एक सप्ताह बाद वृंदावन से बरामद कर लिया। वह घर से 50 हजार रुपये ले गई थी। जयपुर में घूमने के बाद वृंदावन पहुंच गई थी।

पुलिस के मुताबिक करीब 15 दिन पहले भी किशोरी पड़ोस में रहने वाले 12 वर्षीय किशोर के संग लापता हो गई थी। कड़ी मशक्कत के बाद उसे बरामद किया। पिता ने पुलिस को बताया कि अब उन्होंने नोएडा छोड़ने का फैसला किया है। मंगलवार शाम वह परिवार सहित दरभंगा जाने के लिए निकलने वाले थे। वह ऑटो लेने के लिए निकले थे। पत्नी और छोटी बेटी घर का सामान पैक कर रही थीं, तभी बड़ी बेटी चकमा देकर चली गई। आरोप है कि पड़ोस में रहने वाला 12 वर्षीय किशोर भी गायब है। आशंका जताई जा रही है कि इस बार वह किशोर को भी अपने साथ ले गई है। एडीसीपी मनीष कुमार मिश्र का कहना है कि किशोरी को खोजने के लिए टीम गठित कर दी है।

ट्यूशन जा रही बच्ची को बुलाया, गाजियाबाद में 7 साल की मासूम से दरिंदगी, हैवान पड़ोसी गिरफ्तार

गाजियाबाद, एजेंसी। गाजियाबाद के कविनगर थानाक्षेत्र में पड़ोसी युवक द्वारा सात साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। बच्ची के पिता की शिकायत पर दुष्कर्म और पॉक्सो ऐक्ट के तहत केस दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस के मुताबिक मूलरूप से फर्रुखाबाद निवासी एक व्यक्ति कविनगर थानाक्षेत्र के गांव में पत्नी और चार बच्चों के साथ रहता है । उसकी सात वर्षीय बेटी रोजाना शाम को घर से करीब पांच सौ मीटर दूर एक शिक्षक से ट्यूशन पढ़ने जाती है।

इसी क्रम में बुधवार शाम करीब साढ़े छह बजे भी बच्ची घर से ट्यूशन के लिए निकली। घर से करीब 50 मीटर दूर चलने पर वहां रहने वाले 25 वर्षीय नितिन शर्मा ने इशारा करके बच्ची को अपने घर में बुला लिया। आरोप है कि नितिन ने पहले तो बच्ची के साथ छेड़छाड़ की और फिर उसके साथ दुष्कर्म किया। विरोध करने पर आरोपी ने उसे जान से मारने की धमकी दी। जैसे-तैसे चंगुल से छूटकर पीड़िता ने शोर मचा दिया, जिसके बाद आरोपी मौके से फरार हो गया। आपबीती बताने पर उसने पुलिस को सूचना दी। एसीपी कविनगर अभिषेक श्रीवास्तव का कहना है कि शिकायत के आधार पर पॉक्सो ऐक्ट और दुष्कर्म का केस दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी कोई काम-धंधा नहीं करता और नशे का आदी है। देहरादून के पथरीबाग क्षेत्र से मानव तस्कर गिरोह के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया गया है। जबकि, दिल्ली से बेचने के लिए दून लाई गई तीन किशोरियां सकुशल बरामद की गई हैं। आरोपी नाबालिगों को 11 लाख में बेचने की फिराक में थे। पटेलनगर थानाध्यक्ष केके लुंठी ने बताया कि बुधवार को सूचना मिली की तीन किशोरी आइएसबीटी क्षेत्र में संदिग्ध परिस्थितयों में घूम रही हैं। इस पर तीनों को चौकी में पूछताछ की गई। किशोरियों ने बताया कि दिल्ली से कुछ लोग उन्हें देहरादून में नौकरी और पैसा दिलाने के नाम पर साथ ले आए थे, उन्हें एक फ्लैट में ठहराया गया। वहां एक महिला और पुरुष को सौंप दिया गया। रात में उन्होंने 11 लाख रुपये में बेचने की बात करते सुना। इस पर वह घबरा गईं और चादर के सहारे बालकनी से कूदकर भाग निकलीं। इसके बाद पथरीबाग के पास वेद सिटी कॉलोनी में एक फ्लैट में दबिश दी। वहां से महिला बाला और अमरोहा उत्तर प्रदेश निवासी दिग्विजय सिंह को पकड़ा गया। आरोपियों ने बताया कि किशोरियों को वह गाजियाबाद में रहने वाले साथी पूनम और खुशी से खरीदकर लाए थे।

मानहानि मामले में गाजियाबाद कोर्ट ने जारी किए दो विरोधाभासी आदेश

गाजियाबाद , एजेंसी। गाजियाबाद की एक अदालत से एक ही मुकदमे में दो विरोधाभासी आदेश वेबसाइट पर जारी होने को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गम्भीरता से लिया है। कोर्ट ने गाजियाबाद के जिला जज को यह जांच करने का आदेश दिया है कि मानहानि के एक मामले में दो विरोधाभासी आदेश ऑनलाइन कैसे अपलोड कर दिए गए और किन परिस्थितियों में संबंधित न्यायालय के कर्मचारियों ने वेबसाइट पर बिना हस्ताक्षर वाला मसौदा आदेश अपलोड कर दिया। दरअसल मामला यह है कि गाजियाबाद रहने वाले पति-पत्नी ने याची के ?खिलाफ मानहानि का आरोप लगाते हुए परिवाद दाखिल किया था। ट्रायल कोर्ट ने 13 फरवरी को इस पर एक ही दिन में दो आदेश पारित कर दिए। पहले आदेश में मानहानि की शिकायत खारिज कर दी गई थी, जबकि दूसरे आदेश में आरोपी को मुकदमे का सामना करने के लिए बुलाया गया था।

इस आदेश को हाईकोर्ट में चुनौती दी गई। याची के वकील ने कोर्ट को बताया कि जिस आदेश से शिकायत खारिज की गई थी, उस पर हस्ताक्षर नहीं थे। जबकि जिस आदेश से अभियुक्त को बुलाया गया था, वह हस्ताक्षरित आदेश था। सुनवाई के दौरान हाई कोर्ट ने कहा कि जिस अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की कोर्ट का मामला है वह एक युवा मजिस्ट्रेट है और उनके लंबे करियर को ध्यान में रखते हुए यह अदालत कोई प्रतिकूल आदेश पारित नहीं कर रही है। पारुल अग्रवाल की याचिका पर जस्टिस सौरभ श्याम शमशेरी की पीठ ने सुनवाई की। कोर्ट ने कहा कि कि संबंधित मजिस्ट्रेट ने सावधानी नहीं बरती थी और संबंधित कर्मचारियों के खिलाफ जांच भी शुरू नहीं की थी। मामला सामने आने के बाद हाई कोर्ट ने मजिस्ट्रेट से स्पष्टीकरण मांगा था। जवाब में न्यायिक अधिकारी ने बिना शर्त माफी मांगी और बताया कि उनकी कोर्ट के कर्मचारियों ने अनजाने में उनकी सहमति के बिना एक अहस्ताक्षरित आदेश अपलोड कर दिया था। मामले के विशिष्ट तथ्यों पर विचार करते हुए हाई कोर्ट ने दोनों आदेशों को रद्द कर दिया और निर्देश दिया कि बिना हस्ताक्षर वाले आदेशों को कार्यवाही का हिस्सा नहीं माना जाएगा।

जम्मू-कश्मीर में अपने सर्वोच्च स्कोर पर भाजपा, फिर भी आत्मचिंतन मोड में पहुंची

जम्मू, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनावों में नेशनल कॉन्फ्रेंस-कांग्रेस गठबंधन ने 48 सीट जीतकर ना सिर्फ स्पष्ट बहुमत का आंकड़ा पार कर लिया है बल्कि इस गठबंधन ने भाजपा की कमर तोड़ दी है, जिसके बाद भगवा पार्टी आत्मचिंतन मोड में आ गई है। भाजपा ने इस केंद्र शासित प्रदेश में कुल 29 सीटें जीतीं, जो उसका अबतक का हाई स्कोर है लेकिन भाजपा जम्मू क्षेत्र से 35 सीटें जीतने के अपने लक्ष्य से चूक गई। इसके अलावा पार्टी ने कश्मीर घाटी में भी कुछ निर्दलीय और समान विचारधारा वाली पार्टियों समेत 15 सीटें जीतने की योजना बनाई थी, जो विफल हो गई। भगवा पार्टी को मुस्लिम बहुल रामबन, राजौरी और पुंछ जिलों से कुल दस में से केवल एक सीट मिली है। इसके अलावा भाजपा ने जम्मू क्षेत्र में कुल 43 में से 35 सीटों पर जीत के लिए गुज्जर, बकरवाल और पहाड़ी मतदाताओं पर भरोसा जताया था, जो उम्मीदों पर खरे नहीं उतर सके। हालांकि, चुनावी नतीजों पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए पूर्व उपमुख्यमंत्री कविंदर गुप्ता ने कहा, जम्मू के लोगों ने हमारा समर्थन दिया है और हम उनका शुक्रिया अदा करते हैं। हमने 35 सीटें जीतने का लक्ष्य रखा था, लेकिन उसे प्राप्त करने में कुछ सीटें कम रह गईं।गुप्ता ने कहा कि ये सब गणनाएं हैं। फिर भी हम एक बड़ी पार्टी बनकर उभरे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा जम्मू-कश्मीर में विकास, शांति और स्थिरता के लिए काम करती रहेगी। गुप्ता ने कहा कि पार्टी ने कड़ी मेहनत की, लेकिन हम सफल नहीं हो पाए। कश्मीर में भाजपा के चुनाव प्रभारी राम माधव ने कहा, जम्मू में भाजपा ने 29 सीटें जीतीं, जो अब तक का सर्वोच्च स्कोर है। हमें 25 प्रतिशत से अधिक वोट मिले, जो जम्मू-कश्मीर में भी सबसे अधिक है।

नेतन्याहू की लेबनान के लोगों से अपील, हिजबुल्लाह को उखाड़ फेंको और अपने देश को आजाद करो

तेल अवीव, एजेंसी। लेबनान में हिजबुल्लाह के खिलाफ इजराइल का सैन्य अभियान जारी है. हिजबुल्लाह से जमीन संघर्ष के साथ-साथ इजराइली सेना लेबनान पर भीषण बमबारी कर रही है. इजराइल के हवाई हमलों में 2,000 से ज्यादा नागरिक मारे जा चुके हैं. हिजबुल्लाह प्रमुख हसन नसरल्लाह की भी मौत हो चुकी है. हिजबुल्लाह से संघर्ष के बीच इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने लेबनान के लोगों के लिए एक वीडियो संदेश जारी किया है. नेतन्याहू ने अपने संदेश में कहा, आपके पास लेबनान को बचाने का अवसर है, इससे पहले कि यह गाजा की तरह विनाश और पीड़ा के गर्त में चला जाए.

उन्होंने लेबनानी लोगों को संबोधित करते हुए कहा, क्या आपको याद है जब आपके देश को मध्य-पूर्व का मोती कहा जाता था? मुझे याद है. लेबनान का क्या हुआ? अत्याचारियों और आतंकवादियों के एक गिरोह ने इसे बर्बाद कर दिया. लेबनान कभी अपनी सहिष्णुता और सुंदरता के लिए जाना जाता था. आज यह अराजकता और युद्ध का स्थान बना चुका है.

उन्होंने कहा, इजराइल ने 25 साल पहले लेबनान से अपनी सेना हटा ली थी. लेकिन वास्तव में लेबनान पर विजय प्राप्त करने वाला देश इजराइल नहीं है, बल्कि ईरान है. ईरान लेबनान की कीमत पर अपने हितों के लिए हिजबुल्लाह को फंडिंग करता है और हथियार मुहैया करता है. हिजबुल्लाह ने लेबनान को गोला-बारूद के भंडार और एक ईरानी सैन्य अड्डे में बदल दिया है.

इजराइली पीएम नेतन्याहू ने कहा कि एक साल पहले 7 अक्टूबर के नरसंहार के ठीक एक दिन बाद हिजबुल्लाह इजराइल के खिलाफ युद्ध में शामिल हो गया. इसने हमारे शहरों और हमारे नागरिकों पर बिना उकसावे के हमला

किया. इसके बाद से इसने इजराइल पर 8,000 से अधिक मिसाइलें दागी हैं, जिसमें यहूदी, ईसाई, मुस्लिम और ड्रूज नागरिक मारे गए हैं.

नेतन्याहू ने आगे कहा कि इजराइल ने हिजबुल्लाह को खत्म करने का फैसला किया है. हमने अपने लोगों को सुरक्षित उनके घरों में वापस भेजने के लिए जो भी जरूरी होगा, वह करने का फैसला किया है. इजराइल को अपनी रक्षा करने का अधिकार है. इजराइल को जीतने का भी अधिकार है! और इजराइल जीतेगा! उन्होंने कहा कि हमने हिजबुल्लाह की क्षमताओं को कमजोर कर दिया है; हमने हजारों आतंकवादियों को मार गिराया है, जिनमें नसरल्लाह खुद और उसके संभावित उत्तराधिकारी शामिल हैं. अब हिजबुल्लाह कमजोर हो गया है. नेतन्याहू ने आगे कहा कि अब आप, लेबनानी लोग, एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़े हैं. यह आपकी पसंद है. आप अपना देश वापस ले सकते हैं. आप इसे शांति और समृद्धि के रास्ते पर वापस ला सकते हैं. अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो हिजबुल्लाह आपकी कीमत पर घनी आबादी वाले इलाकों से इजराइल से लड़ने की कोशिश करता रहेगा. उसे इस बात की परवाह नहीं है कि लेबनान को बड़े युद्ध में घसीटा जाए. उन्होंने कहा कि आप लेबनान को उसके शांतिपूर्ण दिनों में वापस लाने के हकदार हैं; आप एक ऐसे लेबनान के हकदार हैं जो अलग हो. इन आतंकवादियों को अपने भविष्य को और अधिक नष्ट न करने दें।

मरियम नवाज ने प्रदूषण और धुंध की समस्या से निपटने के लिए भारत से जलवायु कूटनीति की वकालत की

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवीज शरीफ की बेटी और पाकिस्तान पंजाब प्रांत की मुख्यमंत्री मरियम नवाज ने प्रदूषण और धुंध की भयानक समस्या से निपटने के लिए भारत से जलवायु कूटनीति की वकालत की है। उन्होंने पंजाब की राजधानी लाहौर में मुख्यमंत्री जलवायु नेतृत्व विकास इंटर्नशिप कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए भारत से जलवायु कूटनीति के तहत बातचीत और मदद की गुहार लगाई। उन्होंने यह आह्वान ऐसे समय पर किया है, जब कुछ ही दिनों बाद भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर शंघाई सहयोग शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए अगले हफ्ते पाकिस्तान जाने वाले हैं।

जियो टीवी की रिपोर्ट के मुताबिक, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की भतीजी मरियम ने कहा, हमें उनसे बात करनी चाहिए। लाहौर में धुंध की समस्या का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री मरियम ने भारत के साथ जलवायु कूटनीति की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि लाहौर दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में से एक है। उन्होंने कहा कि हर साल सर्दियों के दिनों में सांसों पर संकट आ खड़ा होता है। इसलिए इससे निपटने के लिए हमें कूटनीतिक कोशिशें करनी

चाहिए और भारत से इस मसले पर बातचीत करनी चाहिए और मदद लेनी चाहिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वे अपने राज्य में धुआं छोड़ने वाले वाहनों की निगरानी करवा रही हैं और वाहनों का फिटनेस प्रमाण पत्र जारी करवा रही हैं। प्रदूषण से निपटने के प्रभावी उपायों की जरूरत पर बल देते हुए मरियम ने कहा कि केवल एक बटन दबाने से धुंध को नियंत्रित नहीं किया जा सकता। इसके लिए हमें जलवायु कूटनीति का सहारा लेना पड़ेगा। उन्होंने धुंध को कम करने के लिए भारत के साथ मिलकर समन्वित प्रयास करने पर जोर दिया है। बता दें कि ठंड के दिनों में पराली जलने से होने वाले धुएं सीमा पार कर पाकिस्तान तक जा पहुंचते हैं। इस वजह से ठंड के मौसम में पाकिस्तान पंजाब में धुंध की समस्या और सांस लेने में तकलीफ के मामले बढ़ जाते हैं। लाहौर और दिल्ली दुनिया के प्रदूषित शहरों में शुमार हैं।

विदेश मंत्री जयशंकर की यह विदेश यात्रा लगभग एक दशक में अपने तरह की पहली आधिकारिक यात्रा है। हालांकि, जयशंकर पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि इस यात्रा के दौरान द्विपक्षीय संबंधों पर कोई बातचीत या चर्चा नहीं होगी क्योंकि भारत और पाकिस्तान के बीच राजनयिक संबंधों में पिछले कई सालों से ठहराव बना हुआ है। दोनों देशों के बीच तनावपूर्ण और उतार-चढ़ाव वाले संबंध रहे हैं। पुलवामा हमले के बाद भारत ने इस्लामाबाद से अपने राजनयिक संबंध कम कर लिए थे और दृढ़ता से इस बात पर कायम है कि जब तक पाकिस्तान आतंकवाद पर दोहरा रवैया नहीं छोड़ता और आतंकियों पर नकेल नहीं कसता, तब तक भारत उसके साथ बातचीत नहीं करेगा।

फ्लोरिडा की तरफ बढ़ रहा तूफान मिल्टन, 50 लाख लोगों से तटीय क्षेत्र छोड़ने की अपील

न्यूयॉर्क , एजेंसी। फ्लोरिडा तूफान मिल्टन से निपटने की तैयारियों में लगा है। तूफान के बुधवार को अमेरिकी राज्य के पश्चिमी मध्य तट पर टाम्पा खाड़ी के पास पहुंचने का अनुमान है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने सोमवार को फ्लोरिडा में आपातकाल की घोषणा को मंजूरी दे दी, जो अभी भी तूफान हेलेन के प्रभावों से उबर रहा है। बाइडेन ने जर्मनी और अंगोला की अपनी योजनाबद्ध यात्रा स्थगित कर दी और इसके बजाय फ्लोरिडा में तूफान मिल्टन की तैयारियों पर ध्यान केंद्रित करने का फैसला किया। फ्लोरिडा के पश्चिमी तट पर 50 लाख से अधिक निवासियों को घनी आबादी वाले तटीय क्षेत्र को छोड़ने की अपील की गई। इस बीच मिल्टन में मंगलवार को फिर से तेजी आई और यह श्रेणी 5 तक पहुंच गया, जो उच्चतम रेटिंग है, केंद्र में लगभग 270 किमी/घंटा की निरंतर हवाएं चल रही हैं। समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, राज्य में 20 से अधिक काउंटियों ने अनिवार्य और स्वैच्छिक निकासी आदेश जारी किए हैं। अधिकारियों ने निकासी आदेश के तहत आने वाले लोगों को सख्त चेतावनी दी है।

अधिकारियों ने कहा कि जीवन के लिए खतरा पैदा करने वाला तूफान मेक्सिको की पूर्वी खाड़ी से होकर फ्लोरिडा पहुंचेगा। बुधवार रात को इसका केंद्र फ्लोरिडा के पश्चिमी तट पर पहुंच सकता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129